अज़ इफ़ादात ▪ हज़रत हाजी शकील अहमद साहब (चिश्ती)
मुजाज़े बैअत ▪ हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद हनीफ़ साहब (चिश्ती)

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

**ज़हमतों से बचें और राहत पायें**

अज़ इफादात

हज़रत हाजी शकील अहमद साहब

**मुजाज़े बैअत**

आरिफ़ बिल्लाह हज़रत अक़दस मुफ़्ती

मुहम्मद हनीफ़ साहब चिश्ती

नाशिर

हिरा पब्लिकेशन

हिरा पब्लिकेशन, पनवेल मुम्बई, इंडिया





नाम किताब : हज तजरबात की रोशनी में

अज़ इफ़ादात : हज़रत हाजी शकील अहमद

जमा व तरतीब : अहबाबे हिरा पब्लिकेशन

तबअ़े अव्वल : १४३५ हिजरी, सन् : २०१४

नाशिर : हिरा पब्लिकेशन, पनवेल मुम्बई, इंडिया

## मिलने के पते

इदारा इस्लामियात ३६, मुहम्मद अली रोड, मुम्बई-३ 022-23435243

मक्तबा उकाज़ देवबन्द, यू.पी. .................. 09219607715

मक्तबा मदनियया देवबन्द, यू.पी. ............... 09927622304

मक्तबा हकीमुल उम्मत, सहारनपूर देवबन्द, यू.पी.. 09759870037

## फिहरिस्त

# कलिमाते बा बरकात

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِحَضْرَةِ الْجَلَالَةِ، وَالنَّعْتُ لِخَاتَمِ الرِّسَالَةِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی مَنْ كَانَ نَبِيًّا وَّاٰدَمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ بَيْنَ الْمَاءِ وَالطِّيْنِ ۔ فَسُبْحَانَ مَنْ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ مَّاءٍ مَّهِيْنٍ ۔ وَاَنْطَقَ لَهُ اللِّسَانَ وَاَعْطَاهُ الْبَيَانَ ۔ وَاِنَّ مِنَ الْبَيَانِ لَسِحْرًا ۔ وَذَالِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُعْطِيْهِ لِمَنْ يَّشَاءُ مَايَشَاءُ ۔ وَيُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۔ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۔ وَلِلّٰهِ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ كُلُّهُ فَاِذَا اَرَادَ شَيْئًا فَيَقُوْلُ لَهُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۔ **بعد:**

तारीख़ में क़ुदरत के ऐसे शवाहिद मौजूद हैं कि क़ादिर व क़हहार जल्ल जलालुहू ने बेरूह





और बेजान चीज़ों के वास्ते और ज़रिये क़ुदरत के ऐसे शाहकार और नमूने ईजाद फ़रमाये हैं कि उरफ़ाये ज़ीरूह दंग रह गए। मसलन ख़ुश्क और बोसीदा लकड़ी होने के बावजूद उस्तुने हन्नाना का फ़िराक़े हबीबे रब्बुल आलमीन पर आह व बुका और वह भी ऐसा कि बड़े बड़े उरफ़ाये असहाब से न बन पड़े और बहुत ही मामूली और ज़ईफ़ तर परिन्दे के वास्ते अबरहा जैसा दम ख़म और सीना तानने वाले हाथीयों और हाथी सवारों के छक्के छुड़ा दिए। इस लिए आज भी हम और आप अगर किसी को कुछ न समझते हों मगर ख़ुदा तआला क़ादिर व क़ह्हार उस से ऐसा काम ले जो हम जैसे अना रखने वालों से न बन आए तो क्या अजब है। पेशे नज़र रिसाला जो आप के रूबरू कम अज़ कम इस हक़ीर के रूबरू इसी

तरह के अजाइबात में से है और यह पढ़ने को दिल चाहता है कि

نگارِ من نہ کہ مکتب رسید و درس نہ کرد
سبق بغزہ بیاموخت صد مدرس شد

यानी मेरा महबूब वह है जो न कभी मकतब में पहुंचा और न सबक़ पढ़ा मगर इशारों में ऐसा सबक़ पढ़ाया कि सैंकड़ों मुदर्रिस तैयार हो गये।

इस से मेरी मुराद मेरे महबूब व मुहिब्ब दोस्त व सदीक़े हमीम भाई शकील अहमद ज़ादमजदहू हैं। उनकी जिस काविशे मअहूद पर यह ख़ामा फ़रसाई यह सौदाई कर रहा है, आप के सामने है। पढ़िये और खुद फ़ैसला फ़रमाइये कि इस नाकारा की गुज़ारिशात महज़ मजनून की बड़ हैं या कुछ हक़ और हक़ीक़त भी। आगे बस एक जुमले पर अपनी हि रज़ा सराई





ख़त्म करता हूँ कि

لذتِ مے نہ شناسی بخدا تا نہ چشی

कि ख़ुदा की क़सम तुम शराब की लज़्ज़त नहीं पहचान सकते जब तक कि तुम उसे चख न लो।

बस पढ़ कर ही फैसला कीजिए

وما اردت الا اظهار ما هو الحق عندی

वअख़िरन दोबारा कहता हूँ कि

لذتِ مے نہ شناسی بخدا تا نہ چشی

बस ख़ुद पढ़ कर फैसला कीजिए

वस्सलाम

*नाकारा व आवारा किस्मतों का मारा*

**मुहम्मद हनीफ़ गुफ़िरलहू जौनपूरी**

२५ रबीउल अव्वल १४३० हि०

मुताबिक़ २३ मार्च २०१२ ई०

# तक़रीज़

## हज़रत मौलाना मुफ्ती
## मुहम्मद ज़ैद मज़ाहिरी नदवी

उस्ताज़ दारूल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

हज इस्लाम का एक अहम रूकन और अज़ीमुश्शान दर्जे की इबादत है, जो ज़िंदगी में सिर्फ़ एक ही मर्तबा साहबे इस्तिताअत पर फर्ज़ होती है। उसके बेशुमार फ़ज़ाइल व फ़वाइद और बरकात व समरात हैं। अगर उसको क़ायदे के मुवाफिक़ कर लिया जाए और किसी को हज्जे मबरूर नसीब हो जाए तो न सिर्फ यह कि वह गुनाहों से ऐसा पाक व साफ हो जाता है जैसे आज ही उसकी माँ ने उसे जना हो बल्कि उसके साथ उसको दूसरे रूहानी व बातिनी ऐसे फ़वाइद हासिल होते हैं जो दूसरे





मुजाहिदात से नहीं हो सकते। हज एक ऐसी इबादत है जिस के बाद हाजी की ज़िंदगी में इंक़ेलाब आजाता है और उसकी बरकत से उसे हक़ तआला का सही ताअल्लुक़ नसीब हो जाता है, बस शर्त यही है कि सफ़रे हज में इख़्लास हो और सफ़र का आग़ाज़ ही शरअ के मुवाफ़िक़ और सुन्नत के मुताबिक़ हो और क़दम क़दम पर उसको पेशे नज़र रखा जाए।

लेकिन नफ़्स और शैतान शुरू ही से हाजी साहब पर हर वक़्त ऐसे मुसल्लत रहते हैं कि क़दम क़दम पर ख़िलाफे शरा और ख़िलाफे सुन्नत काम का इरतिकाब करवाते हैं जिस का हाजी को ऐहसास भी नहीं होता, अकसर लोगों का हज इसी अंदाज़ का होता है। बस हज किया और चले गए, नतीजा यह होता है कि हज के मतलूबा फ़वाइद और समरात जो

हासिल हो ा चाहिए थे वह नह हो पाते, इस लिए आज़िमीने हज के लिए ज़रूरी है कि सफ़रे हज के इरादे के बाद आग़ाज़े सफर ही से हर वक़्त उसी फिक्र और सोच में रहे कि मुझे उस के लिए क्या तैयारी करनी है? कैसे जाना है? क्या लेकर जाना है और वहाँ से क्या लेकर आना है?

मोहतरम जनाब शकील अहमद साहब को अल्लाह तआला जज़ाए ख़ैर दे कि उन्होंने आज़िमीने हज की एक मजलिस में हज से मुताअल्लिक़ अज़ अव्वल ता आख़िर ऐसी ज़रूरी और मुफीद बातें तफ्सील से बयान फरमाई हैं जिनको पेशे नज़र रखने से क़वी उम्मीद है कि इंशा अल्लाह हज्जे मबरूर और हज्जे कामिल नसीब होगा और उस के मतलूबा फवाइद व मुनाफा भी हासिल होंगे। नीज़





मौसूफ ने इस मजलिस में अपने तजरबात की रोशनी में बहुत सी मुफीद बातें भी बयान फरमाई हैं, मसाइल बतलाने से ऐहतियात की गई है और अगर कहीं बयान भी किया गया है तो वह हवाले के साथ है।

अहक़र ने इस किताब को अज़ अव्वल ता आख़िर हर्फ़न हर्फ़न पढ़ा, अल्लाह तआला की ज़ात से क़वी उम्मीद है कि यह रिसाला इंशा अल्लाह सफरे हज को कामियाब और मक़बूल बनाने में बहुत मुफीद और मुआविन साबित होगा। हर हाजी को अपने सफर का आग़ाज़ करने से क़ब्ल बार बार उसे पढ़ना चाहिए और सफरे हज में भी उसे अपने साथ रखना चाहिए। नीज़ अगर इस किताब का दूसरी राइज ज़बानों में भी तर्जमा हो जाए तो इंशा अल्लाह उम्मत को इस से ज़्यादा से ज़्यादा

नफ़ा होगा। अल्लाह तआला जनाब हाजी शकील अहमद साहब की इस काविश को कुबूल फरमाये और उन अहबाब को भी जज़ाए ख़ैर अता फरमाए जिन्होंने उस की नशर व इशाअत का प्रोग्राम बनाया। यह मेरे लिए सआदत की बात है कि तक़रीज़ लिखने के बहाने अहक़र की भी इस काम में शिरकत हो रही है। तमाम क़ारिईन हुज्जाजे किराम से दुआ की दरख़्वास्त है कि अल्लाह तआला इख़्लास के साथ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दीन की सही सही ख़िदमत की ता दमे हयात तौफीक़ अता फरमा कर ख़ात्मा बिल ख़ैर फरमाए। आमीन।

*मुहम्मद ज़ैद मज़ाहिरी नदवी*

(उस्ताज़ दारूल उलूम नदवतुल उलमा)





## अपने हज को मक़बूल कैसे बनाऐं?

गुस्से की आदत छोड़ दें, सब्र का दामन न छोड़ें, तक़वे का तोशा न खोयें, हालात जो भी पेश आऐं, आप उस पर किसी क़िस्म का कोई तबसरा न करें बल्कि यह सोचें कि मेरे मौला की यही मर्ज़ी है, हम भी इस पर राज़ी हैं।

अपने लिए ख़ामोशी को लाज़िम कर लें, मिज़ाज के ख़िलाफ कुछ भी हो जाए लेकिन आप ख़ामोश रहें, ख़ामोश रहें, अगर आप ने अपने गुस्से पर क़ाबू पा लिया तो यक़ीन जानिए आप सब कुछ पा जाऐंगे, सारी बुराइयाँ भलाइयों से बदल जाएगी, दीन का दर्द आ जाएगा, उम्मत का ग़म आजाएगा, अल्लाह के प्यारे बन जाऐंगे, नबी के दुलारे बन जाऐंगे।

बताइऐ! और क्या चाहिए? सब कुछ तो मिल गया।

**नोट**: सफ़रे हज में इस मज़मून को सुबह व शाम पढ़ें और बार बार पढ़ें।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ كَفٰى وَالسَّلَامُ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَالَ اللهُ تَعَالٰى: اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ۔

وَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ حَجَّ فَلَمْ يَرْفُثْ وَلَمْ يَفْسُقْ رَجَعَ كَيَوْمٍ وَلَدَتْهُ اُمُّهٗ (متفق عليه)

## सफ़रे हज एक असान सफ़र

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो!

१९८६ ई० में हज़रत मौलाना अब्दुल हलीम साहब जौनपूरी के साथ मेरा सफ़रे हज पर जाना हुआ। हज के बाद हज़रत ने मुझ से पूछा कि क्या हज में तकलीफ है? मैंने कहा





हज़रत! नहीं, फ़रमाया जो शख़्स सीख कर हज करेगा, जल्द बाज़ी नहीं करेगा, लोगों की देखा देखी नहीं करेगा, उसके लिए हज में राहत है और जो हज सीख कर नहीं करेगा, उसे हज में तकलीफ है।

अब सफरे हज एक आसान सफ़र है। सफर की कुछ तकालीफ़ और मशक़्क़तें तो हर जगह ही पेश आती हैं ख़्वाह वह सफर अपने वतन का ही क्यों न हो, लिहाज़ा सफ़रे हज में भी मशक़्क़तें तो ज़रूर हैं। लेकिन यह समझना कि बहुत ज़्यादा मुश्किलें हैं ऐसा हम ने सोच रखा है या उन हाजियों की ज़ुबानी सुन रखा है जिन्होंने हज तो किया है लेकिन हज सीख कर नहीं किया, उनका यह सोचना सही नहीं है। लिहाज़ा हज से मुताअल्लिक़ अपनेतजरबात की रोशनी में कुछ ऐसी बातें अर्ज़ करना

चाहता हूँ जिन पर अमल करने से इंशा अल्लाह आप को यह सफ़र वाक़ई आसान मालूम होगा।

जाने वाले हुज्जाज ने मसाइल की किताबों से मसाइल देख लिए होंगे और फ़ज़ाइल की किताबों को पढ़ कर जो शौक़ पैदा होता है वह शौक़ भी पैदा हो गया होगा, मुझे तो आज अपने तजरबात की रोशनी में कुछ बातें अर्ज़ करनी हैं, अल्लाह पाक मुझे काम की बातें कहने की और हम सब को उन बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए, आमीन।

## हज का मक़सद

अगर हज पर जाना है और अपनी ज़िंदगी बदलने की नीयत नहीं होगी तो उस हज से अल्लाह की कुरबत हासिल नहीं हो सकती और





उनका ताअल्लुक़ हासिल नहीं हो सकता, तअल्लुक़ उसे मिलेगा जो जाने से पहले यह तय कर ले कि मेरी ज़िंदगी के जितने शोबे हैं उन में जो जो कोताहियाँ हैं और ख़िलाफ़े शरीयत काम हो रहे हैं, उसकी एक फ़िहरिस्त तैयार करूंगा और फिर उन्हें सुन्नत व शरीअत के मुताबिक़ करने की कोशिश करूंगा।

याद रखें! अगर हम यह फ़िहरिस्त तैयार नहीं करते तो हमें हज पर जाने का महज़ शौक़ है, अल्लाह का ताअल्लुक़ हासिल करना हमारा मक़सूद नहीं है, हमें नहीं मालूम कि हम हज पर क्यों जा रहे हैं? अगर हमें यह पता न हो कि हम वहाँ क्यों जा रहे हैं तो फिर वहाँ से ख़ाली हाथ ही वापस आएंगे। इस लिए कि जब आदमी बाज़ार जाए और उसे

पता ही नहीं हो कि उसे वहाँ से क्या लाना है तो फिर वह बाज़ार से ख़ाली हाथ वापस आता है। मैं इस बात को एक मिसाल से समझाऊँ ताकि बात पूरी तरह समझ में आ जाए।

## एक मिसाल

एक माँ ने अपने बेटे से कहा कि बेटा! बाज़ार जाकर फलाँ फलाँ सामान ले आओ और साथ में सामान की एक फ़िहरिस्त भी दी जिस में दस सामान लिखे हुए थे। बच्चा घर से थैला और पैसा लेकर निकला तो बाहर उसे अपना एक दोस्त मिला। उस ने अपने दोस्त से कहा कि मेरे साथ बाज़ार चलो। दोनों बाज़ार गए और हर दूकान पर साथ साथ गए। जिस बच्चे के पास सामान की फ़िहरिस्त थी वह तो अपना समान लेता रहा और थैले में डालता रहा और दूसरा यूँही ख़ाली खड़ा रहा।





जब दोनों बाज़ार से वापस आए तो एक के हाथ में दस सामान थे और दूसरे का हाथ ख़ाली था। क्यों? इस लिए कि एक सामान लाने की नीयत से गया था और दूसरा बग़ैर नीयत के सिर्फ साथ देने की ग़र्ज़ से गया था।

इसी तरह तमाम हाजी हज करने जाते हैं, मक्का जाते हैं, मिना जाते हैं, अरफ़ात व मुज़दलिफ़ा जाते हैं। उन में कुछ हाजी तो यह नीयत करके जाते हैं कि हमें यह लेकर जाना है और वहाँ से यह लेकर आना है। और कुछ ऐसे होते हैं जिन की सोच सिर्फ इतनी होती है कि हमें हज करने जाना है, फिर वह हज का ऐहराम बाँध कर मक्का चले जाते हैं, तवाफ कर लेते हैं, मिना, अरफ़ात और मुज़दलिफ़ा चले जाते हैं, फिर मदीने पाक जाकर वापस चले आते हैं, चूंकि फ़क़त जाने की और वहाँ

जाकर हज के अरकान अदा करके चले आने की नीयत होती है, इस लिए वहाँ पहुंच कर सारे अरकान अदा करके चले आते हैं, लेकिन उसकी कोई नीयत नहीं होती कि हमें कैसा बन कर जाना है और वहाँ से कैसा बन कर वापस आना है, इल्ला माशा अल्लाह।

याद रखें! जाने से पहले अपनी ज़िंदगी के शोबों को ग़ौर से देखें और उन में जहाँ जहाँ कोताहियाँ हों उन्हें लिख कर किसी अल्लाह वाले के पास जायें और उन से पूछें कि हम इन इन कोताहियों में मुबतला हैं, हम अपनी इन कोताहियों को दूर करना चाहते हैं, आप मेहरबानी फ़रमा कर हमें उन कोताहियों को दूर करने की तदबीर बतलायें जिन पर अमल करके हम अपनी उन कोताहियों से नजात पा सकें।





## नीयत के साथ तदबीर ज़रूरी है

देखिए! एक है कोताहियों को दूर करने की नीयत करना और एक है उन कोताहियों को दूर करने की तदबीर इख़्तियार करना। फ़क़त नीयत करने से वह कोताहियाँ दूर नहीं होंगी बल्कि बाक़ायदा तदबीर इख़्तियार करके उस पर अमल करने से वह कोताहियाँ दूर होंगी।

मस्लन एक शख़्स ने एक किलो सेब घर ले जाने की नीयत की तो सिर्फ नीयत कर लेने से सेब उसके घर नहीं पहुंच जाएगा बल्कि बाहर निकल कर सेब की दूकान ढूंढ कर उसके पास जाना होगा, दूकानदार को पैसे देने होंगे और फिर उठा कर घर लाना होगा, तब कहीं जाकर सेब घर पहुंचेगा।

इसी तरह कोताहियों को दूर करने की नीयत कर लेने से कोताहियाँ दूर नहीं हो

जाऐंगी बल्कि जिस जिस क़िस्म के गुनाह और जिस जिस क़िस्म की कोताहियों में मुबतला हैं उन से सच्ची पक्की तौबा करके अपने बस में जितना है वह सब करें, तब कहीं जाकर यह शोबे दुरूस्त होंगे।

## अक़लमंद आदमी हर काम सोच कर किया करता है

समझदार आदमी जब कोई काम करता है, कोई नक़ल व हरकत करता है या कोई बात करता है तो उसके पीछे उसका कोई न कोई मक़सद ज़रूर होता है। और बेवक़ूफ आदमी जितनी हरकतें करता है उसके पीछे उसका कोई मक़सद नहीं होता, वह क्यों बात करता है, क्यों उठता है, क्यों हंसता है, क्यों रोता है, उसे उसका कुछ पता नहीं होता।

हम चूंकि खुद को बहुत अक़लमंद और





होशियार समझते हैं, इस लिए हमें अपने दुनयवी कामों में तो उसका बहुत ख़्याल रहता है कि हम यह काम क्यों कर रहे हैं, उस से क्या चाहते हैं, लेकिन दीनी आमाल में हमें यह ख़्याल बिल्कुल नहीं रहता कि हम यह काम क्यों कर रहे हैं और उस से क्या चाहते हैं। हम दीनी आमाल अंजाम ज़रूर देते है, लेकिन उस से क्या चाहते हैं, यह हमारी निगाह में होता ही नहीं है।

## नमाज़ अल्लाह की याद के लिए है

हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी को देखें कि हम रोज़ाना नमाज़ पढ़ते हैं, लेकिन इस से क्या चाहते हैं, इसका हमें कभी ऐहसास ही नहीं होता, बस नमाज़ पढ़ लेते हैं, जब मक़सूद निगाह में है ही नहीं तो फिर उस नमाज़ को पढ़ कर कुछ मिल रहा है या नहीं मिल रहा,

इस का ख़्याल भी नहीं होता। अगर कोई पूछे कि आप ने नमाज़ क्यों पढ़ी? तो कहते हैं कि भई ! फर्ज़ थी इस लिए पढ़ी है लेकिन अगर वह सवाल करे कि आप उस से चाहते क्या हैं? तो इस का हमारे पास कोई जवाब नहीं होता, इस लिए कि मक़सद नज़रों से ओझल और ग़ायब है।

अल्लाह तआला ने नमाज़ का मक़सद ख़ुद अपने कलामे पाक में इर्शाद फरमाया है:

أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِىْ

कि नमाज़ क़ायम करो मेरी याद के लिए। इस से पता चला कि नमाज़ अल्लाह की याद के लिए अता की गई है और यह एक मख़्सूस तरीक़े पर ही अदा की जाती है, जब कि दीगर बहुत से अज़कार ऐसे हैं जिन्हें किसी ख़ास हैयत और तरीक़े के मुताबिक़ अंजाम देने की





कोई क़ैद नहीं है। मस्लन कुरआन मजीद की तिलावत है, तीसरा कलिमा है, दुरूद शरीफ है, तौबा व इस्तिग़फ़ार है। यह सारे अज़कार आप चलते फिरते, उठते बैठते और लेटे लेटे भी अंजाम दे सकते हैं, लेकिन नमाज़ एक ऐसा अमल है, कि उसे आप चलते फिरते, उठते बैठते अदा नहीं कर सकते बल्कि उसके लिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपना घर यानी मस्जिद बनवाया कि मेरे घर में आओ, मेरे लिए नमाज़ पढ़ो और ऐसी पढ़ने की कोशिश करो जिस में फ़क़त मेरी याद हो।

अलावा अज़ीं दीगर शराइत भी लगाए कि पाक हों, बावुज़ू हों, क़िब्ला रूख़ हों वग़ैरह वग़ैरह। यह सारी शराइत इस लिए लगाई गईं

थी कि दीगर अज़कार जिस में चलना फ़िरना भी हो रहा है, उठना बैठना भी हो रहा है, ज़ेहन कहीं और है तो ज़बान कहीं और है और तवज्जोह कहीं और है, यह सारी बातें नमाज़ में न हों बल्कि नमाज़े कामिल यकसूई के साथ इस तरह पढ़ी जाए कि अल्लाह की याद दिल में उतर जाए। जब इस तरह नमाज़ पढ़ी जाएगी तो उसका सब से बड़ा फायदा यह होगा कि जितनी छोटी बड़ी बुराइयाँ हैं वह सब ज़िंदगी से निकल जाऐंगी।

लेकिन अगर हम ग़ौर करें तो पता चलेगा कि हम नमाज़ तो पढ़ते हैं और ज़ाहिरी शराइत भी पूरी करते हैं लेकिन नमाज़ के पीछे जो हमारा मक़सद था वह हम भूल गए कि नमाज़ इस तरह पढ़ें कि अल्लाह की याद दिल में ऐसी रासिख़ हो जाए कि जितनी





बुराइयाँ हैं वह सब ज़िंदगी से निकल जाऐं।

अभी रमज़ान गया तो रोज़ा भी हम ने ऐसे ही रखा कि सुबह उठे, सेहरी कर ली, दिन भर भूके रहे, शाम को इफ्तार कर लिया और फिर तरावीह पढ़ ली। फिर दूसरे रोज़ भी इसी तरह कर लिया। रोज़ा रखने का मक़सद क्या है? हम उस से क्या चाहते हैं? जो चाहते हैं वह हमें मिला या नहीं? उसका कोई हिसाब नहीं होता। इसी तरह दीगर तमाम इबादात में भी तक़रीबन हमारा यही हाल है।

## हज में जाने से पहले के काम

ख़ैर में अपने असल मौज़ू की तरफ लौट आऊँ कि जब आप हज पर जाने का इरादा करें तो जाने से क़ब्ल अपने तमाम मामलात साफ कर लें, किसी का कुछ लेना देना हो ख़्वाह छोटी चीज़ हो या बड़ी चीज़, माल हो

या ज़मीन जायदाद, ग़र्ज़ कुछ भी हो, पहले उन तमाम मामलात को साफ कर लें, इस लिए कि अगर आप हज का मक़सूद और उसकी बरकतें हासिल करना चाहते हैं तो आप को हज से पहले यह सारे काम करने होंगे, क्योंकि मैं पहले अर्ज़ कर चुका हूँ कि काम मक़सूद नहीं होता बल्कि आदमी उस से कुछ चाहता है। पस अगर हम यह चाहते हैं कि हमें हज का मक़सूद हासिल हो जाए तो फिर हमें यह सब करना होगा। इस लिए बहुत ग़ौर व फ़िक्र से अपनी ज़िंदगी का जायज़ा लें कि ज़िंदगी कहाँ कहाँ गुज़री, किन किन लोगों के साथ गुज़री, किसी का कुछ हमारे ज़िम्मे बाक़ी तो नहीं, हम ने किसी की ग़ीबत तो नहीं की, किसी पर बुहतान तो नहीं लगाया, अगर ग़ौर करने पर मालूम हो कि उन में से कोई काम





हम से हुआ है तो फिर उलमा और मशाइख़ के पास जाकर मालूम करें कि हज़रत! हम ने यह यह किया है, अब हम उसका तदारूक चाहते हैं तो हमें शरीअत की रोशनी में क्या करना होगा, फिर जिस तरह वह बतलायें उसके मुताबिक़ अमल करें।

अगर जाने से क़ब्ल हम ने यह सब किया है तब तो वाक़ेअतन हम हज करना चाहते हैं। और अगर हम ने यह सब नहीं किया और यूँ ही हज करने चले गए तो फिर अच्छी तरह समझ लें कि हज करने से हज की फर्ज़ियत तो साक़ित हो जाएगी, लेकिन हज का जो मक़सूद है वह हमें हासिल नहीं होगा। जिस तरह ग़फलत वाली नमाज़ से नमाज़ का पूरा नफ़ा नहीं मिलता, इसी तरह ग़फलत वाले हज से भी हज का पूरा नफ़ा नहीं मिलेगा। यह एक बहुत

ज़रूरी बात है जिस पर आप को निहायत संजीदगी और ऐहतेमाम के साथ अमल करना है।

दूसरी अहम बात यह है कि आप अपने मुक़ाम पर रह कर सब से पहले हज के मसाइल किताबों से सीखें। ख़ुसूसन हज के फराइज़, हज के वाजिबात और ममनूआते ऐहराम तो ज़रूर जान लें कि उसके बग़ैर हज की अदाएगी नहीं हो सकती, अगर मसाइल याद नहीं रहते तो उन्हें एक काग़ज़ पर अलग नोट कर लें या मसाइल वाली किताब अपने उस छोटे बेग में रख लें जो हज में आपके साथ रहेगा और हस्बे मौक़ा उस में से मसाइल देखते रहें, धीरे धीरे सारे मसाइल समझ में आजाऐंगे, अलबत्ता यह ज़ेहन नशीं रहे कि आप जिस मस्लक के पाबंद हैं, उसी मस्लक के





किसी आलिम की किताब से मसाइल देखा करें, अगर आप हन्फीयुल मस्लक हैं तो "मुअल्लिमुल हुज्जाज" (मुसन्निफ मौलाना सईद अहमद साहब अजराडवी) को ज़रूर अपने साथ रखें, जिस में हज के ज़रूरी मसाइल लिखे हुए हैं, यह किताब बाज़ार में बआसानी दस्तयाब भी है। इस के अलावा और भी कुछ छोटी छोटी किताबें अब इस मौज़ू पर लिखीं गईं हैं, उन्हें भी ले लें तो बहुत अच्छा है।

तीसरी बात यह है कि हज के फज़ाइल हज़रत शैख़ मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब की किताब "फज़ाइले हज" से ज़रूर पढ़ें और जूँ जूँ रवानगी की तारिख़ क़रीब आती जाए इस किताब को ज़्यादा पढ़ें। अगर एक मर्तबा ख़त्म हो जाए तो दोबारा शुरू कर दें ताकि हज पूरे ज़ौक़ व शौक़ के साथ हो।

## दावत खाने में वक़्त ज़ाया न करें

जिस दिन आप को यहाँ से जाना होगा उस से पहले यहाँ आप की ख़ूब दावतें होंगी, आज इनके यहाँ कल उन के यहाँ। अब दावत खाना है या नहीं यह आप का अपना अमल है, मैं उसके बारे में कुछ नहीं कहता। अलबत्ता इतना ज़रूर कहूंगा कि अगर आप ने हज का फार्म भर दिया है और अल्लाह पाक की तरफ से आप को बुलावा आ गया है तो अब अपने एक एक मिनट को क़ीमती जानें, जहाँ तक हो सके उसी फिक्र में लग जाऐं कि मेरा हज सही कैसे होगा? दावतें खाने जाते हैं तो जो खाना बीस मिनट का होता है उस में दो दो घंटे निकल जाते हैं। अब आप ख़ुद फैसला करें कि रोज़ दावत खाना चाहिये या बैठ कर रोज़ाना कुछ न कुछ सीखते सिखाते रहना चाहिये।





अलबत्ता जिन से हमारा कोई मामला हुआ है उन से मिल कर तो माफी मांग लेनी चाहिए कि जो कुछ मेरी जानिब से आप के हुक़ूक़ में कोताही हुई है और यक़ीनन हुई है, लिहाज़ा आप मुझे माफ कर दीजिए।

## जाने से एक रोज़ पहले

एक दिन क़ब्ल तमाम मुलाक़ातियों की मुलाक़ात से फारिग़ हो जाऐं। मस्लन कल सुबह की फ़लाइट है तो आज किसी से मुलाक़ात न करें, बल्कि तमाम लोगों से कह दें कि गुज़िश्ता कल तक मिलूंगा, आज का दिन मुझे यकसूई के साथ घर में रहने दें या निकलने का वक़्त बतला दें कि फलाँ वक़्त निकलूंगा, सारे लोग उसी वक़्त आ जाऐं और खड़े खड़े मुसाफ़हा कर लें या एयर पोर्ट पहुंच जाऐं और वहाँ मुलाक़ात कर लें।

बहुत से लोग रवानगी के दिन अपनी नादानी में आने वाले मेहमानों की रिआयत मे ख़ाने वग़ैरह का ख़ूब इंतेज़ाम करते हैं और आने वालों की मेज़बानी में उलझे रहते हैं। ख़ूब समझ लें! कि यह नफ्स का धोका है, क्योंकि यह वक़्त तो पूरे ज़ेहन के साथ तैयार रहने का वक़्त था कि ऐहराम का कपड़ा पहेनते वक़्त यह इस्तिहज़ार रहता कि मुझे अल्लाह पाक बुला रहा है, मैं अल्लाह के लिए उन के दरबार में जा रहा हूँ, लिहाज़ा आज के दिन कोई चाय पानी नहीं करूंगा। उस रोज़ चाय पानी न कराना कोई बद अख़्लाक़ी की बात नहीं है बल्कि एक दिन क़ब्ल तक आप जितने अफ़राद बुलाना और खिलाना चाहें शौक़ से खिलायें, कोई आप को मना नहीं करता, लेकिन उस दिन न खिलायें। क्योंकि





तजरबा यह बताता है कि उस दिन की कसरते मुलाक़ात से हाजी बिल्कुल थक जाता है। लेकिन लोग हैं कि अपनी नादानी में चले जाते हैं और अगर बीवी भी साथ जा रही है तो वह उन सारे इंतेजामात में अलग परेशान होती है। अब वह मियाँ से पूछती है कि आप का फलाँ सामान रख दूँ? तो हाजी साहब को बड़ा गुस्सा आता है कि तुझे सामान समझाऊँ या बाहर आए हुए मेहमानों को देखूँ? देखिए! यह बेजा गुस्सा हो रहा है या नहीं हो रहा है? हज पर जा रहे हैं और हराम हो रहा है। फिर मियाँ का ठीक जवाब न मिलने पर बीवी को भी गुस्सा आता है और वह भी पलट कर जवाब देती है तो वह भी हराम में मुबतला होती है। लिहाज़ा उस रोज़ खाने वग़ैरह का इंतेज़ाम करके क्यों ऐसी फिज़ा बनाई जाए जिस की

बिना पर जाने से क़ब्ल ही हराम का इरतिकाब करना पड़े।

सारा सामान एक दो रोज़ पहले पैक कर दें और आख़िरी दिन ख़ूब आराम करके इतमिनान के साथ घर से निकलें ताकि वहाँ पहुंच कर आप पूरी तरह ताज़ा दम रहें और पूरी बशाशत के साथ मनासिके हज अदा कर सकें। यह सारी बातें फ़राइज़ या वाजिबात के क़बील से नहीं हैं, लेकिन अगर इन बातों का ख़्याल नहीं रखा गया तो फ़राइज़ व वाजिबात में ख़लल आएगा।

## फोन करने वालों की ज़्यादती

बहुत से लोग मोबाइल पर फोन करने के आदी हैं, वह बड़े ख़ुश होते हैं कि हम हाजी साहब को बिल्कुल निकलने के वक़्त फोन करेंगे ताकि सब से आख़िर में बात करने की





वजह से हाजी साहब को वहाँ भी हमारी याद आए। इस फोन के चक्कर में हाजी को घर से निकलते वक़्त की दुआ भी याद नहीं रहती कि मुझे घर से रूख़सत होते वक़्त क्या पढ़ना है, वह बेचारा लोगों के फोन अटेंड करने में ही मसरूफ़ रहता है।

लिहाज़ा इस बात का ख़्याल रखें कि घर से निकलते वक़्त कोई फोन अटेंड न करें। अगर किसी को इस बात का बहुत शौक़ है कि हाजी साहब को हमारी याद आए तो वह एयर पोर्ट पर चला जाए कि जब वहाँ हाजी साहब से मुलाक़ात होगी तो मुम्किन है आप का चेहरा हाजी साहब के ज़ेहन में महफ़ूज़ हो जाए कि फलाँ साहब भी एयर पोर्ट पर आए थे, लिहाज़ा उनके लिए भी दुआ करनी है।

मुम्किन है आप हज़रात यह सोच रहे हों

कि यह आदमी कौन से हज का बयान कर रहा है? लेकिन ख़ूब अच्छी तरह समझ लें कि यह बहुत अहम बातें हैं, आप इन्हें मामूली न समझें। क्योंकि मसाइल की रोशनी में हज होता है और इन बातों की रिआयत से हज बनता है।

## ऐहराम कहाँ से पहनें?

रवानगी के दिन ऐहराम घर ही से बाँध कर निकलें, यही बेहतर है। इस लिए कि एयर पोर्ट पर सिवाए बैतुल ख़ला के कोई ऐसी मुनासिब जगह नहीं होती जहाँ जाकर हाजी अपने कपड़े उतार कर एहराम बाँध सके, इस लिए बेहतर यही है कि हाजी अपने घर से एहराम बाँध कर निकले।

मैं यह बातें आप को इस लिए बतला रहा हूँ कि नफ़्स और शैतान हरगिज़ यह नहीं चाहेंगे





कि आप का हज सही हो। यह बात आप के इल्म में होनी चाहिए कि एयर पोर्ट के बैतुल ख़ला में इंग्लिश टॉयलेट बनी होती है जहाँ लोग अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ होने जाते रहते हैं। इस तर्ज़ पर बनी टॉयलेट पर बैठ कर फ़ारिग़ होने में अकसर हुज्जाज को बड़ी दिक़्क़त होती है जिसकी बिना पर ऐसे हुज्जाज नीचे बैठ कर इस्तिंजा करते हैं। अब नीचे बैठ कर फारिग़ होने में वह कितना पानी बहाते हैं कितना नहीं बहाते? क्या बहाया गया सारा पानी बह कर चला जाता है या कुछ बाक़ी रह जाता है? उसका कुछ इल्म नहीं होता और हो भी कैसे कि इधर एक आदमी अंदर बैठा है और बाहर लोगों की लाइन लगी है, वह दरवाज़ा पीटते रहते हैं कि हाजी साहब जल्दी निकलो, हाजी साहब जल्दी निकलो। बताइये!

अगर इस जल्द बाज़ी में वह नापाक पानी ऐहराम की चादर के किसी कोने में लग गया तो फिर हाजी बेख़्याली में उसी नापाकी को लेकर हरम तक जाएगा या नहीं जाएगा?

इस के अलावा बाहर वालों के मुसलसल खटखटाने पर हाजी को उन पर गुस्सा भी आता है और फिर वह उसी गुस्से की हालत में ऐहराम बाँधता है। इस लिए मैं बतौर ऐहतियात आप को ऐसी बातें बता रहा हूँ कि अगर आप को उनका इल्म न हो तो फिर आप उलझ जाऐंगे। लिहाज़ा आप ऐहराम अपने घर से, होटल से या मुसाफिर खाने से बाँध कर जाऐं। अलबत्ता अभी नीयत न करें, नीयत कब करनी है इस का बयान इंशा अल्लाह आगे आएगा। ऐहराम की हालत में दोपट्टी वाली स्लीपर चप्पल पहनी जाती हैं, इसका मस्अला





मालूम कर लें। नीज़ एहराम की हालत में पहनी जाने वाली चप्पल चंद रोज़ पहले पहनना शुरू कर दें ताकि नई चप्पल पहनने की वजह से अगर कहीं ज़ख़्म हो जाए तो यहीं उसका इलाज भी हो जाए।

## घर से निकलते वक़्त खाना साथ ले लें

जब घर से निकलें तो कुछ खाना अपने साथ ज़रूर ले लें। मुम्किन है कुछ लोग यह सोचें कि जब जहाज़ में खाना मिलता है तो फिर घर से खाना ले जाने की क्या ज़रूरत है? बेशक जहाज़ में खाना मिलता है लेकिन जिद्दा एयरपोर्ट पर पहुंचने के बाद वहाँ की ज़रूरी कारवाई मस्लन लगेज, इमिग्रेशन और सिक्यूरिटी चेक पोस्ट अप वग़ैरह में इस क़द्र वक़्त लग जाता है कि हाजी को भूक लगने लगती है। जब भूक लगती है तो वहाँ हाजी को

सिवाये पानी के कुछ नज़र नहीं आता जिस पर हाजी को गुस्सा आता है कि हम यहाँ तीन घंटे से पड़े हुए हैं, भूक भी लगी हुई है। एयरपोर्ट मुन्तज़िमीन को कम अज़ कम कुछ खाने का तो इंतेज़ाम करना चाहिए था। लेकिन वहाँ खाने का इंतेज़ाम होता है और न ही आप को आप के गुस्से की बिना पर कुछ खाने को मिलेगा। लिहाज़ा भूक से, गुस्से से, लायानी और ग़ीबत से बचने के लिए बेहतर यही है कि आप अपना खाना साथ लेकर जाऐं। अगर दो आदमी जा रहे हों तो वह अपने साथ कम अज़ कम चार आदमियों का खाना ले लें और नीयत यह कर लें कि हम अल्लाह के दो मेहमानों को अपनी तरफ से खाना खिलाऐंगे।





## जहाज़ की बुकिंग के वक़्त खाने की तफ़्सील लिखवा दें

अगर आप किसी टूर से या दीगर किसी ज़रिये से जा रहे हों तो जाने से क़ब्ल एक बात ज़रूर लिखवा दें कि हमें फलाइट में वेज (सब्ज़ी) खाना चाहिए, नॉन वेज (गोश्त) नहीं चाहिए। मैं यह नहीं कहता कि जहाज़ में मिलने वाला नॉन वेज (गोश्त) हराम होता है लेकिन हाजी के लिए वेज खाने ही में ऐहतियात है।

## हवाई अड्डे पर क्या करना है?

एयरपोर्ट की तमाम ज़रूरी कारवाई मस्लन इमिग्रेशन, सिक्यूरिटी चेक अप वग़ैरह में तक़रीबन तीन चार घंटे लग जाते हैं, इस दौरान आप तमाम कारवाईयों से फ़ारिग़ होने के बाद दो रकअत नफिल नमाज़ ऐहराम के

लिए पढ़ सकते हैं और पढ़ना भी चाहिए, अलबत्ता हज या उम्रे की नीयत अभी न करें। क्योंकि बाज़ औक़ात फलाइट में ताख़ीर हो जाती है, जब हाजी हज या उम्रे की नीयत कर लेगा तो उसे एहराम वाली तमाम पाबंदियों का ख़्याल रखना लाज़िम होगा। लिहाज़ा बेहतर यह है कि दो रकअत नमाज़ तो एयरपोर्ट पर पढ़ लें लेकिन नीयत बाद में करें।

फ़लाइट में जाने से क़ब्ल अगर इस्तिंजा वग़ैरह का मामूली तक़ाज़ा भी हो तो आप एयरपोर्ट ही पर फारिग़ हो लें। इस लिए कि अव्वल फलाइट का इस्तिंजा ख़ाना बहुत तंग होता है, नीज़ फ़लाइट में मुस्तक़िल ऐलान होता रहता है कि हुज्जाजे किराम पानी न गिराऐं, इस लिए बेहतर यही है कि आप अपनी तमाम ज़रूरतों से एयरपोर्ट पर ही फारिग़ हो लें।





जब आप की सीट कन्फर्म हो जाए तो अब आप इस बात को लेकर क़तई परेशान न हों कि जहाज़ आप को लिए बग़ैर रवाना हो जाएगा बल्कि तब भी आप के नाम का ऐलान होगा कि फलाँ हाजी रह गया है, जल्दी आजाए, लिहाज़ा आप इस्तिंजा वुज़ू से फ़ारिग़ होकर ऐहराम की दो रकअत नफिल पढ़ लें, उन दो रकअतों के अंदर पहली रकअत में सूरह काफिरून और दूसरी रकअत में सूरह इख़्लास पढ़ना मसनून है। अब यह कि ऐहराम की नीयत कैसे करना है? यह आप मसाइल की किताबों मस्लन मुअल्लिमुल हुज्जाज, आसान हज, और ईज़ाहुल मनासिक वग़ैरह में देख लें।

## जहाज़ में ऐहतियात की बातें

फलाइट में बैठ जाने के बाद जब एयरहोस्टेस आप के सामने खाना लाकर रखेगी

तो आप को खाने की ट्रे में कुछ छोटे छोटे पैकेट मिलेंगे। किसी में दूध होगा, किसी में नमक होगा, किसी में मिर्च होगी वग़ैरह वग़ैरह। उन पैकिटों में एक पैकेट टिशू पेपर का भी होगा जिसे 'फ्रेशेज़' कहते हैं। वह टिशू पेपर खुलने के बाद इतना बड़ा हो जाता है कि आप उसके ज़रिये आसानी के साथ अपना चेहरा और हाथ वग़ैरह पोछ सकते हैं, लेकिन ख़्याल रहे कि उस टीशू पेपर में ख़ुशबू होती है। अगर आपने एयरपोर्ट पर ऐहराम की नीयत कर ली होगी तो अब आप के लिए उस ख़ुशबूदार टीशू पेपर का इस्तेमाल करना दुरूस्त न होगा, इस लिए कि हालते ऐहराम में ख़ुशबूदार चीज़ों का इस्तेमाल मना है। लिहाज़ा ऐहराम की नीयत कर लेने के बाद टीशू पेपर के इस्तेमाल से गुरेज़ करें।





जब आप खाना खाने बैठेंगे तो एयर होस्टेस आप के सामने नॉन वेज (गोश्त) लाकर रखेगी, हालांकि आप ने बुकिंग के वक़्त वेज (सब्ज़ी) लिखवाया था। जब आप उस से वेज मांगेगे तो अव्वलन तो वह कहेगी कि वेज नहीं है, नॉन वेज ही है और यह बिल्कुल हलाल है, लेकिन आप उसकी बातों में न आऐं और उस से वेज ही का मुतालबा करें कि हम ने बुकिंग के वक़्त वेज लिखवाया था, लिहाज़ा हमें वेज ही चाहिए। जब आप इसरार करेंगे तो आप के इसरार पर वह दोबारा आप को वेज खाना लाकर देगी। अलबत्ता इस बात का ख़्याल रखें कि जब आप उसके साथ गुफ्तगू करें तो उसके चेहरे की तरफ देखने से मुकम्मल परहेज़ करें, कहीं ऐसा न हो कि मुश्तबह माल से बचने की फिक्र में बद निगाही के यक़ीनी हराम में

मुब्तला हो जाऐं।

इसी तरह खाने की ट्रे में एक मीठी डिश भी होगी जिस के ऊपर ज़ाफ़रान या इलायची का सुफूफ (बिग़ैर पका हुआ) डाला गया होगा, चूंकि हाजी काफी देर का भूका होता है, इस लिए उसे यह ख़्याल नहीं रहता कि मुझे इस तरह की चीज़ें नहीं खानी चाहिए, वह बेख़्याली में उसे खा लेता है, उसे ऐहसास उस वक़्त होता है जब वह उसे खा चुका होता है। हालांकि ऐहराम की हालत में ऐसी ख़ुशबूदार चीज़ों का खाना जो पकी हुई न हों मना है।

## ऐहराम की नीयत कब करें

जब आप खाने से फारिग़ हो जाऐं तो अब ऐहराम की नीयत कर लें, इस धोके में न रहें कि खाने के बाद नींद आ रही है, लिहाज़ा पहले कुछ देर सो लूँ फिर ताज़ा दम होकर





नीयत कर लूँगा। इस लिए कि अब तक के तमाम मराहिल को तय करते हुए आप बहुत थक चुके होंगे, जब खाना खा कर सोऐंगे तो फिर सोए ही रह जाऐंगे और बिला नीयत ही के मीक़ात से गुज़र जाऐंगे। हालांकि मीक़ात के आने से पहले जहाज़ में कई मर्तबा मीक़ात के आने का ऐलान भी होता है, लेकिन चूंकि आप बिल्कुल बेख़बर सोए हुए होंगे, इस लिए आप को कुछ पता नहीं चलेगा और आप बग़ैर नीयत ही के मीक़ात से गुज़र जाऐंगे जिस की बिना पर आप के ज़िम्मे दम वाजिब हो जाएगा। (मुअल्लिमुल हुज्जाज मकतबा यादगारे शौख़)

हज़रत मुफ्ती मुहम्मद शफी साहब ने तहरीर फ़रमाया है कि "हवाई जहाज़ का रास्ता उमूमन ख़ुशकी के ऊपर से बराहे क़रनुल

मनाज़िल होता है, हवाई जहाज़ क़रनुल मनाज़िल और ज़ाते अर्क़ दोनों मीक़ातों के ऊपर से गुज़रता हुआ हिल में दाख़िल होता है फिर जिद्दा पहुंचता है। इस लिए हवाई सफर में तो क़रनुल मनाज़िल के ऊपर आने से पहले पहले ऐहराम बाँधना वाजिब है। चूंकि हवाई जहाज़ में उसका पता चलना तक़रीबन नामुम्किन है कि जहाज़ कब और किस वक़्त करनुल मनाज़िल के ऊपर से गुज़रेगा, इस लिए अहले पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के लिए तो ऐहतियात इसी में है कि हवाई जहाज़ में सवार होने के वक़्त ही ऐहराम बाँध लें (यानी नीयत कर लें) अगर बिग़ैर ऐहराम बाँधे (यानी बग़ैर नीयत किए हुए) हवाई जहाज़ के ज़रिये जद्दा पहुंच गए तो उनके ज़िम्मे दम यानी एक कुरबानी बकरे की वाजिब हो जाएगी और





गुनाह उसके अलावा होगा जिसकी वजह से हज नाक़िस रह जाएगा, मक़बूल नहीं होगा, बहुत से हुज्जाज उस में ग़फलत करते हैं। (जवाहिरूल फिक़्ह जि० १ स.४७४,४७५)

लिहाज़ा आप के लिए बेहतर यही है कि आप ऐहराम की दो रकअत नफिल नमाज़ एयरपोर्ट पर पढ़ लें, फिर फलाइट में खाने से फारिग़ होते ही नीयत कर लें। नीयत करना और तलबिया पढ़ना कब हो यह तो बयान हो चुका, अलबत्ता कैसे हो यह किताबों में देख लें या उलमा से मालूम कर लें।

बाज़ मर्तबा ऐसा होता है कि हाजी ने नीयत की और तलबिया पढ़ना शुरू किया, अभी तलबिया मुकम्मल नहीं हुवा था कि पास बैठे साथी ने पूछा कि मैं भी नीयत कर लूँ और तलबिया पढ़ लूँ? उस ने कहा हाँ हाँ तुम भी

नीयत कर लो और तलबिया पढ़ लो, फिर वहीं से तलबिया पढ़ना शुरू कर दिया जहाँ से छोड़ा था तो अगरचे इस तरह पढ़ने से भी तलबिया हो जाएगा, ताहम यह बेहतर नहीं है। बेहतर यही है कि अज़सरेनौ तलबिया कहे।

## जहाज़ में साथी के बिछड़ने पर परेशान न हों

हाजी जब हज करता है तो उमूमन उसके साथ या तो घर वाले होते हैं या कोई क़रीबी रिश्तेदार होता है या फिर कोई दोस्त होता है और दिली तक़ाज़ा यह होता है कि मेरा अज़ीज़ मेरी बग़ल वाली सीट पर बैठे, बाज़ मर्तबा तो नम्बरवार सीट दी जाती है, लेकिन अकसर ऐसा नहीं होता, अगर नम्बरवार सीट दे भी देते हैं तब भी इस क़दर गड़बड़ होती है कि हुज्जाज जहाँ चाहते हैं बैठ जाते हैं।





अगर साथ में अब्बा, अम्माँ, बेटी, बहन या बीवी है तब तो बेहतर यह है कि उन्हें अपने साथ ही बैठाऐं, अगर बग़ल में किसी और की सीट हो तो उस से दरख़्वास्त करके सीट तबदील करके उन्हें अपने पास बैठा लें, लेकिन अगर साथ में कोई दोस्त हो तो उस से पहले ही तय कर लें कि जहाज़ में अलग अलग हो जाने की सूरत में एक दूसरे को तलाश नहीं करेंगे, इस लिए कि अल्लाह ही की तरफ से यह इंतेज़ाम होगया कि जब दूर रहेंगे तो आपस में बातें नहीं होंगी (इसी तरह यह भी तय कर लें कि पूरे सफर में साथ रहने के बावजूद ज़रूरत के बक़द्र ही गुफ्तगू करेंगे)

फिर यह कि तलाश करने में एक बड़ा नुक़सान यह भी है कि दौराने तलाश जहाज़ में बेपरदा बैठी हुई औरतों पर निगाह पड़ने का

क़वी इम्कान है, लिहाज़ा बेहतर यही है कि दोस्त को तलाश न करें, क्योंकि जहाज़ से उतरने के बाद सारे मुसाफ़िर एक ही जगह जमा होते हैं। अगर आप का दोस्त आप को जहाज़ में न भी मिला तब भी जहाज़ से उतरने के बाद बहरहाल वह आप को मिल जाएगा। सफ़र में जितनी तन्हाई होगी उतना ही ज़्यादा नफ़ा होगा और जितना मेल जोल ज़्यादा होगा उतना ही ज़्यादा नुक़सान होगा।

## एक ज़रूरी मस्अले की वज़ाहत

आज कल हज के लिए जाने वाली औरतों को यह मस्अला बहुत अच्छी तरह मालूम है कि ऐहराम की हालत में कपड़ा चेहरे पर नहीं लगना चाहिए, यह नादान अपने गुमान के मुताबिक़ यह समझ बैठी हैं कि चेहरा ढाकना मना है इसी बिना पर बेपरदा होकर घूमती हैं,





हालांकि यह बात सरासर ग़लत है। चेहरे पर कपड़ा न लगने का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि औरत चेहरा खोल कर घूमे बल्कि उसे चेहरे का परदा भी ज़रूर करना चाहिए।

अगर कोई यह कहे कि जनाब! यह कैसे मुम्किन है कि चेहरा ढाँका भी जाए और चेहरे पर कपड़ा भी न लगे? हाँ हाँ यह मुम्किन है और तदबीर से मुम्किन है, इस तौर पर कि बाज़ार में ऐसी टोपी दस्तयाब है जिसे अगर सर पर रख लें तो एक छज्जा नुमा बन जाता है जिसके ऊपर से बआसानी नक़ाब डाला जा सकता है। इस तरह परदा भी हो जाता है और चेहरे पर कपड़ा भी नहीं लगता।

ख़ूब अच्छी तरह समझ लें कि जो औरत हज में परदे का ऐहतेमाम नहीं करेगी वह ज़िंदगी में कभी भी परदे का ऐहतिमाम नहीं

कर सकेगी, इसी तरह जो मर्द हज में नामेहरम औरतों को देखने से नहीं बचेगा वह ज़िंदगी में कभी भी अपनी निगाह की हिफ़ाज़त न कर सकेगा।

नामेहरम औरतें कौनसी हैं यह मालूम होना ज़रूरी है। सो इस की वज़ाहत करता चलूं कि नामेहरम औरतें जिन्हें देखने से हमें शरीअत ने मना किया है उन में आम औरतों के अलावा भाभी, साली, मुमानी, चची, बड़ी अम्मी, चचाज़ाद बहनें, मामूँज़ाद बहनें, फूफी ज़ाद बहनें, ख़ाला ज़ाद बहनें भी शामिल हैं हम आम तौर से इन रिश्तेदार औरतों से परदे का ऐहतिमाम नहीं करते, हालांकि शरीअत ने हमें इन औरतों से भी परदे का हुक्म दिया है। अगर हम नहीं करते तो उसका यह मतलब नहीं है कि यह हुक्म इस्लाम से ख़ारिज हो





गया, ग़लत रिवाज आम हो जाने से शरीअत का हुक्म तो नहीं बदलता। अल्लाह ने हज में उसकी तकमील कर दी है कि जितना बताया गया यह पूरा है, अब न उस में कमी होगी न ज़्यादती।

इस लिए जिस के घर में परदा नहीं है और वह परदा करने की नीयत से हज पर नहीं गया है तो फिर वह हाजी हज से वापसी के बाद उन तमाम रिश्तेदार औरतों से ऐसे ही बेपरदा होकर बातें करेगा जैसे पहले किया करता था। इसी तरह जो औरतें यह सोच कर परदा नहीं करतीं कि हज में परदा करना बहुत मुश्किल है तो फिर यह औरतें हज से आने के बाद अपनी ज़िंदगी में कभी भी परदा नहीं करेंगी, उनके लिए परदा करना हमेशा मुश्किल ही होगा, लिहाज़ा हज पर जाने से

क़ब्ल और ख़ुसूसन हज के ज़माने में परदे और अपनी निगाहों की हिफ़ाज़त का बहुत ही ऐहतिमाम करना चाहिए।

## हज में औरतों का बुर्क़ा कैसा हो?

हज में औरतें भी बकसरत होती हैं और तक़रीबन सभी औरतें बुर्क़े पहने होती हैं। इस सूरत में हम अपने घर की मस्तूरात को कैसे पहचानें, यह मालूम होना भी ज़रूरी है। इस सिलसिले में बेहतर यह है कि अपने घर की औरतों के लिए कोई इम्तियाज़ी बुर्क़ा सिलवा लें।

हम अपनी मस्तूरात के लिए ऐसा बुरक़ा सिलवाते हैं जो बिल्कुल नुमायाँ होता है, मस्लन चेक्स वाला या फिर किसी और रंग का। जब कभी हमें अपनी मस्तूरात को हरम में तलाश करना होता है तो नुमायाँ बुर्क़ा





होने की बिना पर वह हमें दूर ही से नज़र आ जाती है, हम क़रीब जाकर खड़े हो जाते हैं और वह हमें देख कर हमारे साथ हो लेती हैं। अगर हम ने कोई इम्तियाज़ी रंग का बुरक़ा न सिलवाया और वह भी दीगर औरतों की तरह काले रंग के बुरक़े में रही तो फिर उस सूरत में हम अपनी मस्तूरात को तलाश करने के चक्कर में सारी ही औरतों को देखेंगे कि शायद यह हो, शायद यह हो, शायद यह हो, इस तरह न जाने कितनी औरतों को देखते चले जाऐंगे। लिहाज़ा ऐहतियात इसी में है कि अपने घर की मस्तूरात के लिए किसी इम्तियाज़ी रंग का बुरक़ा सिलवा लिया जाए ताकि तलाश करने में दिक़्क़त और इस दौरान ग़ैर महरम औरतों पर निगाह भी न पड़ने पाए।

## एक ज़रूरी तंबीह

जब आप जिद्दा एयरपोर्ट पर पहुंचेगे तो आप को हज के मुतअल्लिक़ उर्दू किताबें दी जाऐंगी जिन्हें आप न लें और ना ही उन को पढ़ें। मैं यह नहीं कहता कि उन में लिखी हुई बातें ग़लत होती हैं बल्कि उन में लिखी बातें वहाँ के लोगों के मसलक के मुताबिक़ होती हैं हमारे मसलक के मुताबिक़ नहीं होतीं, जब कि हमें अपने मसलक के मुताबिक़ अमल करना है। अगर हम ने उन किताबों में लिखी बातों के मुताबिक़ अमल किया तो बहुत मुम्किन है हम पर दम वाजिब हो जाए।

मैं इस की एक मिसाल दूँ ताकि बात ज़रा वाज़ेह हो। देखिए! हमारे इमाम यानी इमामे आज़म रहमतुल्लाह अलैह के नज़दीक कंकरी, क़ुरबानी, और हलक़ यानी सर मुंढाना, इन





तीनों कामों में तरतीब वाजिब है। यानी पहले शैतान को कंकरी मारेंगे, फिर क़ुरबानी करेंगे और फिर सर मुढायेंगे। अगर इन तीनों कामों में तरतीब का ख़्याल न रखा गया यानी कोई काम आगे पीछे हो गया तो फिर हमारे ज़िम्मे दम यानी एक बकरे की कुरबानी वाजिब हो जाएगी, अगर नमाज़ का कोई वाजिब छूट जाए तो सजदये सहव कर लेने से नमाज़ हो जाती है, लेकिन अगर हज का कोई वाजिब छूट जाए तो फिर सजदये सहव से उसका तदारूक नहीं होता बल्कि दम वाजिब हो जाता है। जब आप यह मस्अला उन किताबों में देखेंगे तो आप को वहाँ यह मस्अला इस तरह लिखा हुआ मिलेगा कि इन तीनों कामों के दरमियान तरतीब वाजिब नहीं है। अगर आप ने उसे पढ़ कर अमल किया और मज़कूरा तीनों कामों के

दरमियान तरतीब का ख़्याल न रखा तो फिर आप के ज़िम्मे एक जानवर की कुरबानी वाजिब हो जाएगी, लिहाज़ा बेहतर यही है कि आप वहाँ तक़सीम की जाने वाली किताबों न लें और न ही उनको पढ़ें।

## हज का मक़सद

हज का मक़सद क्या है? हज का मक़सद यह है कि एक इंसान अपनी ज़िंदगी में जो भी काम करता है, उसका ताअल्लुक़ ख़्वाह ईमानियात से हो या इबादात से, मामलात से हो या अख़्लाक़ियात से या फिर उनका तअल्लुक़ मुआशरत से हो, ग़र्ज़ ज़िंदगी के जिस शोबे से भी उसका तअल्लुक़ हो, उस में जो जो काम भी सुन्नत व शरीअत से हट कर अंजाम दिए जा रहे थे अब हज के बाद उन तमाम कामों को सुन्नत व शरीअत के मुताबिक़ अंजाम दिया जाने लगे। यानी अपनी पूरी





ज़िंदगी को और उस में अंजाम दिए जाने वाले तमाम आमाल को अपने रब की मर्ज़ी के मुताबिक़ अंजाम देने लगे, हज का यही मक़सद है और यही उस से चाहा जाता है।

## मक़बूल हज़ की अलामत

रहा यह सवाल कि मक़बूल हज की अलामत क्या है? तो मैं इस सिलसिले में आप को मेरे शैख़ हजरत मौलाना अब्दुल हलीम साहब का एक इर्शाद सुनाऊँ, हज़रत फरमाया करते थे कि "अगर हाजी की हज से पहले की ज़िंदगी और बाद की ज़िंदगी में नुमायाँ दीनी फर्क़ न हुआ हो तो समझ लेना चाहिए कि उस आदमी का हज अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में मक़बूल नहीं हुआ। इस नुमायाँ फर्क़ का पता ऐसे चलेगा कि हज से पहले यह शख़्स नमाज़ बग़ैर दिल लगाये पढ़ता था अब दिल लगा कर

इतमिनान से पढ़ने लगा, पहले बात बात में गुस्सा किया करता था अब इल्म आ गया है, पहले बाज़ार में निगाह उठा कर चलता था अब निगाह झुका कर चलता है, पहले उसके घर में शरई परदा नहीं था अब हज कर लेने के बाद उसके घर में शरई परदा हो गया है, अब अगर उसका कोई भतीजा उसके घर में आता है जो पहले भी आया करता था और बड़ी अम्मी बड़ी अम्मी कहता हुआ घर के अंदर तक चला जाता था और अपनी चचाज़ाद बहनों से आपा और बाजी कह कर बातें किया करता था, अब हज से लौटने के बाद जब वह उनके घर आया तो उन्हों ने उस से बड़े प्यार से कह दिया कि देखो बेटा! अब मैंने हज कर लिया है और हज में सारी ज़िंदगी बदल दी जाती है, लिहाज़ा अब मैंने अपने घर में शरई





परदा करवा लिया है, आज से तुम्हारा अपनी बड़ी अम्मी से और अपनी चचाज़ाद बहनों से परदा होगा, अब जब कभी तुम घर आओ तो इत्तिला देकर अंदर आया करो ताकि वह सब परदा कर लिया करें।

इसी तरह जब कभी शादी ब्याह का मौक़ा आए तो शादी ब्याह की वह रस्में जिन में हज करने से पहले तक यह मुबतला था, अब हज करने के बाद उस ने वह तमाम रसमों से तौबा कर ली, अब जब उसके घर में शादी का मौक़ा आता है तो यह किसी आलिम से या किसी अल्लाह वाले से शादी ब्याह का शरई तरीक़ा मालूम करता है कि हज़रत! अब मैंने हज कर लिया है और हज के बाद हमारे घर में शादी का यह मौक़ा है, लिहाज़ा आप हमें शादी का शरई तरीक़ा बतलाऐं कि हमें शादी

कैसे करना चाहिए?

ख़ूब अच्छी तरह समझ लें! कि अगर ज़िंदगी में इस तरह की दीनी तबदीलियाँ हो रही हैं तब तो वाक़ेअतन आप ने ऐसा हज किया है जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को पसंद है और अगर ज़िंदगी में इस तरह की तबदीलियाँ नहीं आ रही हैं तो फिर आप ने हज तो कर लिया लेकिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में हज का शुमार मक़बूल हज में नहीं हुआ।

## नेकियों की बरबादी का एक बड़ा ज़रिया

नफ्स और शैतान आप का हज ख़राब करने के लिए तरह तरह की कोशिशें करते हैं, वह यही चाहेंगे कि किसी तरह आप का हज ख़राब हो जाए। मक्के मदीने पहुंच कर जो नेकियाँ आप ने जमा की हैं वह किसी तरह ज़ाया और बरबाद हो जाऐं। इस लिए यह





दोनों हर वह तरीक़ा इख़्तियार करेंगे जिस से आप की नेकियाँ बाक़ी न रहने पाऐं।

उन्हीं तरीक़ों में एक तरीक़ा "लायानी" है। जब हम लोग जमात में जाते हैं तो हमें यह सिखाया जाता है कि "लायानी" नेकियों को ऐसा खा जाती है जैसे आग सूखी हुई लकड़ियों को जला देती है। यहाँ हरम में आकर आप ने जो ढेर सारी नेकियाँ जमा की हैं और नेकियाँ भी ऐसी कि हर नेकी एक लाख नेकी के बराबर है, तो नफ्स और शैतान पूरा ज़ोर लगाते हैं कि आप उन नेकियों को अपने साथ न ले जा सकें। लिहाज़ा अगर आप यह चाहते हैं कि आप की नेकियाँ महफ़ूज़ रहें, आप की ज़िंदगी सौ फ़ीसद बदल जाए, आप इस हज के ज़रिये अल्लाह पाक को पा जाऐं, उनका सही और कामिल ताअल्लुक़ आप को नसीब हो जाए

तो फिर आप यह तय कर लें कि बग़ैर सोचे नहीं बोलेंगे, जो बोलेंगे सोच कर बोलेंगे। बोलने से पहले सोचेंगे कि क्या इस बात का कहना ज़रूरी है? अगर न कहूँ तो क्या कोई नुक़सान होगा?

अब यह कि ज़रूरी और ग़ैर ज़रूरी बात का मैयार क्या है? यह कैसे पता चले कि कौनसी बात ज़रूरी है और कौनसी बात ग़ैर ज़रूरी? सो यह मालूम करने का बहुत आसान तरीक़ा यह है कि ऐसी बात जिसके न करने में ज़रर और नुक़सान का अंदेशा न हो वह बात न करें। अगर आप ने इस तरीक़े के मुताबिक़ अमल कर लिया तो फिर इंशा अल्लाह आप "लायानी" और "लग़वियात" में मुबतला होने से बचे रहेंगे।

जो बातें मैं आप के सामने बयान कर रहा





हूँ यही दर हक़ीक़त हज की रूह है कि जब आप हज के दौरान इन बातों का ख़्याल रखेंगे तो आप को हज की रूह नसीब होगी। जब आप हज के दौरान ख़ामोशी की आदत डाल लेंगे और "लायानी" से बचेंगे तो फिर इंशा अल्लाह आपके लिए अपने वतन में आकर ख़ामोश रहना आसान होगा, इस तरह आप बहुत सी फ़ुज़ूल गुफ्तगू से महफ़ूज़ रहेंगे।

## नजात का रास्ता

ख़ामोशी एक ऐसा अमल है जिस में आदमी का कुछ नहीं जाता बल्कि सब कुछ बचा रहता है, हत्ताकि बोलने में जो ताक़त सर्फ होती है वह भी महफ़ूज़ रहती है। यह अमल बज़ाहिर देखने में बहुत हल्का मालूम होता है लेकिन दर हक़ीक़त बहुत बड़े नफ़ा का हामिल है और आख़िरत में निजात दिलाने के लिए काफ़ी है।

चुनान्चे हदीसे पाक के अंदर ख़ामोशी के जहाँ और बहुत सारे फ़ज़ाइल लिखे हुए हैं वहाँ यह बात भी लिखी हुई है कि निजात के रिस्तों में एक रास्ता तवील ख़ामोशी है। ख़ामोशी को आप इस तरह लाज़िम पकड़ लें कि गोया लोगों को यह महसूस हो कि शायद यह आदमी बोलना ही नहीं जानता। जिस आदमी को ज़्यादा बोलने के मर्ज़ लगा हुआ है, अगर वह हज में अपने इस मर्ज़ पर क़ाबू नहीं पाएगा तो फिर वह अपने मुक़ाम पर आकर इस मर्ज़ में और भी ज़्यादा मुबतला होगा। लिहाज़ा यह ज़रूरी है कि हज पर रवाना होने से क़ब्ल आप अपने वतन में रहते हुए तवील ख़ामोशी की आदत डालें, ताकि वहाँ पहुंच कर उस पर अमल करना आप के लिए आसान हो। अगर कोई शख़्स हज पर जाकर भी "लायानी" पर





क़ाबू न पासका तो फिर शायद वह कभी भी उस पर क़ाबू नहीं पा सकता इस लिए कि वहाँ आदमी के आमाल पर मोहर लग जाती है कि जो जिन आदतों के साथ यहाँ रहेगा उसकी उन आदतों पर मोहर लग जाएगी, फिर वह अपने वतन में जाकर उन ही आदतों के साथ जियेगा।

## अल्लाह पाक का मंगाया हुआ सामान

दोस्तो! जब आप को अल्लाह पाक ने हज पर बुला लिया है तो आप को हज का सामान भी साथ लाने के लिए कहा है। आप हज पर जाने से क़ब्ल पहले हज कर चुके लोगों से मालूम करते हैं कि हज पर क्या क्या सामान ले जाना चाहिए? फिर सामान की जो फेहरिस्त वह आप को देते हैं आप उसके मुताबिक़ अपना सामान तैयार करते हैं।

इसी तरह हुकूमत भी जाने से क़ब्ल कुछ सामान आप से मंगवाती है। मस्लन टिकट लाओ, वीज़ा लाओ, मुअल्लिम का ड्राफ्ट लाओ, अगर आप उन में से कोई चीज़ नहीं लाओगे तो वह आप को एयरपोर्ट से वापस कर देंगे, आगे जाने नहीं देंगे, इसी लिए आप उनके बताए हुए सारे सामान अपने साथ ले जाते हैं।, पस जिस तरह आप उनके मंगाए हुए सामान को अपने साथ ले जाना ज़रूरी समझते हैं और ले जाते हैं, इसी तरह अल्लाह पाक ने भी तो आप को एक सामान साथ लाने के लिए कहा है।

ग़ौर करने का मुक़ाम है कि जो सामान हुकूमत मंगाती है आप उसे तो अपने साथ ले जाना इंतिहाई ज़रूरी समझते हैं और ले भी जाते हैं कि उसके बग़ैर आप का काम नहीं





चलेगा, तो ज़रा सोचें कि जो सामान अल्लाह पाक ने मंगाया है वह उसके मुक़ाबिले में कितना अहम और ज़रूरी होगा, लेकिन अक्सर लोग उसकी फिक्र नहीं करते कि अल्लाह के मंगाए हुए सामान को भी अपने साथ ले जाऐं।

इस बात को सुन कर यक़ीनन आप के दिल में यह ख़्याल ज़रूर आया होगा कि आख़िर वह कौनसा सामान है जिसे अल्लाह पाक ने ले जाने के लिए कहा है? सो उसकी वज़ाहत ख़ुद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने पाक कलाम में फरमाई है चुनान्चे इर्शादे ख़ुदावन्दी है:

وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى

कि हज के लिए ज़ादे राह ले लो और बेहतरीन ज़ादे राह तक़वा है। अल्लाह पाक ने अज़ ख़ुद तक़वे की बेहतरी को बतला कर उसकी अहमियत को वाज़ेह फरमा दिया कि हज

पर ले जाने के लिए जो सामान तुम तैयार करते हो उन तमाम सामानों में सरे फेहरिस्त सामान तक़वा है जिसे तुम अपने साथ ज़रूर ले जाओ।

## याद रखें ! हज में आमाल पर मोहरें लगती हैं

ज़रा सोचें कि यह सामान इतना अहम है और उसे हासिल करना और उसे हज पर साथ ले जाना इतना ज़रूरी है कि उसको हासिल करने के लिए अल्लाह पाक ने हमें हज से पहले एक लम्बा वक़्फा दिया है। वह ऐसे कि हज का महीना शव्वाल से शुरू हो जाता है और ज़िलहिज्जा तक रहता हैं अगर उस वक़्फे का हिसाब लगायें तो यह तक़रीबन दो माह से ज़्यादा का अरसा होता है। और शव्वाल से क़ब्ल रमज़ान का महीना अता फरमाया जिस





का मक़सद ही तक़्वे का हुसूल है। देखिए! यह अल्लाह पाक की कितनी बड़ी मेहरबानी है कि जब रमज़ान भेजा तो उसी वक़्त बतला दिया कि मैंने यह महीना तुम्हारे पास इस लिए भेजा है ताकि तुम उस में तक़वा हासिल करो और जब तुम्हें रमज़ान में तक़वा हासिल हो जाए तो तुम उसे संभाल कर रखे रहो। जब हज का महीना शुरू होगा और तुम हज करने आओ तो उस तक़्वे को संभालते हुए मेरे दरबार में यानी अरफात के मैदान में ले आओ तो मैं तुम्हारे तक़्वे पर मोहर लगा कर तुम्हें वहाँ से रूख़सत करूंगा, फिर तुम सारी ज़िंदगी मुत्तक़ी बन कर जियोगे। और अगर तुम तक़वा लेकर नहीं आओगे तो फिर तुम्हारी उसी हालत पर मोहर लगाउंगा, फिर तुम सारी इसी तरह मासीयत और नाफरमानी के साथ जियोंगे।

याद रखना! अगर तुम यहाँ से बद निगाही करके गए और उस से तौबा नहीं की, फिर इसी तरह हरम में भी बद निगाही करते रहे तो मैं तुम्हारी इस हालत पर मोहर लगा दूंगा, फिर तुम सारी ज़िंदगी इसी तरह बद निगाही के साथ जियोगे। इसी तरह अगर तुम यहाँ से लायानी में मशगूल रहे तो उस अमल के साथ तुम्हें हज तो करने दूंगा और तुम्हारे ज़िम्मे से हज की फर्ज़ियत भी साक़ित कर दूंगा, लेकिन तुम्हारे इस अमल पर मोहर लगा दूंगा, फिर तुम ज़िंदगी भर लायानी कामों में मशगूल रहोगे, कभी इस से बच नहीं पाओगे।

इसी तरह अगर तुम ग़फलत के साथ नमाज़ पढ़ते रहे कि हैं तो नमाज़ में लेकिन दिल कहीं और है और उस से तौबा नहीं की और अपनी नमाज़ को अच्छी नमाज़ बनाने की फ़िक्र नहीं





की, फिर उसी ग़फलत के साथ हरम में भी नमाज़ें पढ़ते रहे तो फिर मैं उसी ग़फ़लत वाली नमाज़ पर मोहर लगा दूंगा, फिर पूरी ज़िंदगी इसी तरह ग़फ़लत वाली नमाज़ पढ़ते रहोगे।

## क्या तक़वा आप के सामान की फ़ेहरिस्त में शामिल है?

दोस्तो! जैसा कि मैंने पहले अर्ज़ किया था कि अक़लमंद आदमी जब कोई काम करता है तो उसके पीछे उसका कोई न कोई मक़सद ज़रूर होता है, जबकि बेवक़ूफ़ आदमी का अपने काम के पीछे कोई मक़सद नहीं होता, वह बस अपना काम किए जाता है। उसे इस से कोई सरोकार नहीं होता कि मैं यह काम क्यों कर रहा हूँ और उस से क्या चाहता हूँ। इस बात की रोशनी में हम अपना जायज़ा लें कि क्या हम बेवक़ूफ़ हैं कि इतना वक़्त लगा

कर और इतने पैसे ख़र्च कर के हज का ऐहराम बाँध कर हज पर चले जाऐं और फिर वहाँ से ख़ाली हाथ वापस आ जाऐं? अगर ऐसा है तो यह तो फक़्त आना जाना हुआ, उस आने जाने से जो चाहा गया है जब तक वह निगाहों में नहीं होगा उस वक़्त तक उसके हासिल होने या न होने का कोई हिसाब भी नहीं लगाया जाएगा।

अगर हाजियों से पूछा जाए कि आप कहाँ जा रहे हैं? तो अक्सर हाजियों का जवाब होता है कि हम हज करने जा रहे हैं, अगर पूछें कि आप वहाँ से क्या लाना चाहते हैं? तो कहते हैं कि जनाब! अब यहाँ बैठ कर मैं कैसे कहूँ कि क्या लाऊँगा, यह तो वहाँ का बाज़ार ही बताएगा कि मैं वहाँ से क्या लाऊँगा। यानी उनकी निगाह में वहाँ के बाज़ारों में बिकने





वाली चीज़ें होती हैं कि हम वहाँ से यह यह सामान लाएंगे बल्कि बाक़ायदा सामान की फेहरिस्त तैयार की जाती है कि वहाँ से यह यह सामान लाना है।

याद रखें! जो यहाँ से जैसी फेहरिस्त बना कर ले जाएगा कि मुझे वहाँ से यह यह लाना है तो वह अपनी फेहरिस्त के मुताबिक़ वहाँ से वही सामान लेकर आएगा। अगर यहाँ से तक़्वा लेकर गया है और वहाँ से इस तक़्वे पर मोहर लगवाना मक़्सूद होगा तो ऐसा शख़्स वहाँ से अपने तक़्वे पर मोहर लगवा कर लौटेगा, गोया उस सफर से उसका मक़सद तक़्वे पर मोहर लगवाना था। और अगर वह वहाँ के बाज़ारों में बिकने वाले सामान की फेहरिस्त बना कर ले गया है तो फिर ऐसा शख़्स वहाँ के बाज़ारों में बिकने वाले समान ही

लेकर लौटेगा, इस लिए कि आदमी वही सामान लेकर आता है जो उसकी फेहरिस्त में लिखा होता है।

## तक़्वा किसे कहते हैं?

जब तक़्वा इतना अहम और क़ीमती सामान है कि उसे ख़ुद अल्लाह पाक ने मंगवाया है तो यह मालूम होना इंतिहाई ज़रूरी है कि तक़्वा किसे कहते हैं? सो यह जान लें कि अल्लाह के ख़ौफ से हर क़िस्म के गुनाहों को छोड़ देने का नाम तक़्वा है, ख़्वाह वह गुनाह छोटा हो या बड़ा। लिहाज़ा अब जो भी गुनाह हमारे अंदर है वह सब हम यहीं अपने मुक़ाम पर छोड़ कर जाएें और यहाँ से अपने साथ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का मंगाया हुआ सामान जिसे तक़्वा कहते हैं, साथ ले जाएें।

अब तक़्वा हासिल कैसे हो और जब हासिल





हो जाए तो बाक़ी किस तरह रहे, यह जानना भी इंतिहाई ज़रूरी है। इस सिलसिले में दो बातें क़ाबिले लिहाज़ हैं, अगर उन दो बातों पर अमल कर लिया जाए तो इंशा अल्लाह तक़्वा हासिल भी हो जाएगा और बाक़ी भी रहेगा।

१. पहला काम यह करें कि हज पर जाने से क़ब्ल अपनी पिछली ज़िंदगी के तमाम गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा करें। सच्ची तौबा उसे कहते हैं कि अब तक जो गुनाह किया करते थे, उन तमाम गुनाहों पर दिल की निदामत के साथ तौबा की जाए और आइन्दा उन गुनाहों को न करने का पुख़्ता इरादा किया जाए।

२. दूसरा काम यह करें कि जाने से पहले किसी अल्लाह वाले की सोहबत में आना जाना शुरू कर दें, ताकि उन के अंदर का तक़्वा हमारे अंदर भी मुन्तक़िल हो। और अगर

उसका मौक़ा मयस्सर नहीं है तो फिर ख़ुद अपने पहरेदार बन जाऐं और अपने जिस्म के तमाम आज़ा पर पहरा लगा दें कि इन से अल्लाह पाक की नाफ़रमानी नहीं करेंगे, ख़ुसूसन दो उज़ू पर तो ज़रूर पहरा लगाऐं।

१. आँख पर  २. ज़बान पर

आँख पर इस तरह कि बग़ैर सोचे निगाह नहीं उठाऐंगे, जब भी कहीं देखना होगा तो पहले सोचेंगे कि क्या देखना है। इसी तरह बग़ैर सोचे नहीं बोलेंगे, जब भी कुछ बोलना होगा तो सोचें कि क्या बोलना है और यहाँ बोलना किस क़दर ज़रूरी है।

दोस्तो! यही सारी बातें हज की रूह है, अगर आप इन बातों पर अमल करेंगे तो यक़ीनन आप हज की रूह को पा जाऐंगे। और अगर आप ने इन बातों पर अमल न किया तो फिर





आप का हज तो हो जाएगा, लेकिन आप हज की रूह को पाने से महरूम रहेंगे। मुझे ऐसे कई हुज्जाज मिले जिन्होंने पहले कई कई मर्तबा हज किया था, लेकिन जब इन बातों को सुना और इन बातों पर अमल करते हुए हज किया तो कहने लगे कि शकील भाई! हमारे पिछले हज तो सारे बेकार हो गए, हज तो हम ने अब किया है।

## हज में झगड़े से बचने का हुक्म

जिस तरह अल्लाह पाक ने हज में तक़वा लाने का हुक्म दिया है कि तक़वा लेकर आओ, इसी तरह एक चीज़ छोड़ कर आने के लिए कहा है कि झगड़ा छोड़ कर आओ। चुनान्चे इर्शादे ख़ुदावन्दी है:

فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ

कि हज में बेहूदा बातों से भी बचो, फिस्क़ व फुजूर से भी बचो और झगड़े से भी बचो।

इस लिए कि हज के दौरान झगड़े के मौक़े बहुत कसरत से पेश आते हैं, अगर सफर के दौरान या वहाँ क़याम के दौरान कभी ऐसा मौक़ा पेश आ जाए तो आप उस वक़्त झगड़ने के बजाए निहायत सब्र व जमील का मुज़ाहिरा करें और यह सोचें कि हम अल्लाह पाक के मेहमान बन कर उन के दरबार में जा रहे हैं और उन्होंने हमें अपने दरबार में आने से पहले झगड़ा छोड़ कर आने का हुक्म दिया है, लिहाज़ा हम झगड़ा नहीं करेंगे। जहाँ जहाँ गुस्से के जज़बात बनेंगे वहाँ वहाँ अपने जज़बात पर क़ाबू रखें और यही सोचें कि मेरे मौला की यही मर्ज़ी है, जब यह उनकी मर्ज़ी है तो मैं भी उनकी मर्ज़ी पर राज़ी हूँ।





## कुछ मुफीद मश्वरे

जिद्दा एयरपोर्ट पर उतरने के बाद सारे हुज्जाज को मुख़्तलिफ बसों के ज़रिये एक जगह ले जाया जाता है। मुम्किन है वहाँ से ले जाते वक़्त आप अपने दोस्त या रिश्तेदार से अलाहिदा हो जाऐं कि आप किसी बस में बैठ गए और वह किसी दूसरे बस में बैठ गए। अगर ऐसा हो जाए तो आप ज़रा भी परेशान न हों, इस लिए कि वहाँ से ले जाने के बाद सारे हाजियों को एक ही जगह पर जमा किया जाता है, जब आप वहाँ पहुंचेंगे तो वहाँ आप की अपने अज़ीज़ से मुलाक़ात हो जाएगी।

जिस जगह आप को जमा किया जाएगा वहाँ एक बड़ा सा हाल होगा, यहाँ पहुंचने के बाद पता नहीं कितने घंटे आप को यहाँ ठहरना पड़े, लिहाज़ा आप यहाँ इस्तिंजा वग़ैरह से

फारिग़ हो लें और अगर नमाज़ का वक़्त हो तो नमाज़ भी पढ़ लें। चूंकि यहाँ ठहरे हुए काफी देर हो चुकी होगी, इस लिए बहुत मुम्किन है कि आप को भूक भी लगी हो, लिहाज़ा अब वह खाना जो आप अपने साथ घर से लेकर चले थे, उसे कहीं बैठ कर इतमिनान से खा लें। यहाँ से फारिग़ होने के बाद आप को एक दूसरे हाल में ले जाया जाएगा, जहाँ हुज्जाज के लिए बनाई गई सीटों पर उन्हें बिठाया जाता है और उनके सफ़री दस्तावेज़ की जाँच पड़ताल की जाती है, इस कारवाई में भी काफी देर लग जाती है।

जब कभी इस तरह की इंतेज़ार गाहों में बैठने का इत्तिफाक़ होता है तो उस वक़्त आम्मतुन लोग उकता जाते हैं और इंतेज़ामी उमूर से मुताअल्लिक़ तज़किरे और तबसरे में





मशग़ूल हो जाते हैं कि यह ऐसा करते हैं, यह वैसा करते हैं, उन्हें ऐसा करना चाहिए था, इन्हें ऐसा करना चाहिए था। आप इस तरह के किसी तज़किरे और तबसरे में हरगिज़ हरगिज़ शामिल न हों बल्कि उस वक़्त यही सोचें कि जब अल्लाह पाक की चाहत और उनके इरादे के बग़ैर कोई काम नहीं होता तो फिर यह ताख़ीर भी उनकी चाहत और इरादे से हो रही है, जब उनकी मर्ज़ि यही है कि इस काम में इतनी ताख़ीर हो और मैं इतनी देर यहाँ बैठा रहूँ तो मैं अपने मौला की मर्ज़ी पर राज़ी हूँ। जब ज़बान पर इस तरह के अल्फाज़ होंगे तो इंशा अल्लाह सारे शिकवे ख़त्म हो जाऐंगे और हर तकलीफ को बरदाश्त करना असान हो जाएगा।

यहाँ की काग़ज़ी कारवाई से निमटने के

बाद मर्दों को एक रास्ते से और औरतों को दूसरे रास्ते से ले जाया जाएगा, अगर आप के साथ मस्तूरात हों तो आप क़तअन परेशान न हों, इस लिए कि आगे चल कर तमाम लोगों को फिर एक ही जगह जमा किया जाएगा।

## लायानी का एक और मौक़ा

यहाँ से निकलने के बाद सारे लोग जिस जगह इकठा किए जाते हैं वहाँ पहुंच कर आप को अपना सामान ढूंढना होता है। यहाँ आप को अपना सामान मुख़्तलिफ जगह नज़र आएगा। यह देख कर हुज्जाज तबसरा करने लगते हैं कि मेरा सामान तो अब तक नहीं आया, मेरा बैग तो अब तक नहीं आया। आप उस वक़्त भी ऐसे तबसरों से परहेज़ करें और यही ख़्याल करें कि मेरे अल्लाह की यही मर्ज़ी है कि सब का सामान पहले आ जाए और मेरा





सामान बाद में आए, लिहाज़ा मैं अपने अल्लाह के इस फैसले पर राज़ी हूँ।

जब कस्टम से निपटने के बाद आप अपना सामान लेकर बाहर निकलेंगे तो बाहर आप को कुली नज़र आऐंगे जो आप के हाथ से सामान लेकर गाड़ियों में रखेंगे, आप अपना सामान उनके हवाले कर दें, लेकिन आप का वह वाला छोटा बैग जिसे आप ने फलाइट में अपने साथ रखा था, जिस में आप का पास पोर्ट, टिकट और ज़रूरी काग़ज़ात रखे हुए हैं, आप वह बैग उन के हवाले न करें बल्कि उसे अपने साथ ही रखें, इसी तरह उस ट्राली बैग को भी अपने साथ रखें जिस में आप के कपड़े वग़ैरह रखे हुए हैं, उस के अलावा बक़िया सामान उनके हवाले कर दें, क़ुली लोग यह सारा सामान ले जाकर उस जगह डाल देंगे

जहाँ आप को अपने मुल्क का झंडा लगा हुआ नज़र आएगा। यहाँ से निकलने के बाद जब आप दाऐं जानिब चलना शुरू करेंगे तो आख़िर में जाकर दस ग्यारह नम्बर का सुतून नज़र आएगा जहाँ ऐशियाई ममालिक के झंडे लगे होंगे, वहीं आप को आप के मुल्क का झंडा भी लगा हुआ दिखाई देगा, उस जगह आप का सामान पहुंचा दिया जाएगा, आप वहाँ पहुंच कर अपना सारा सामान तलाश कर लें।

## दिल किस के लिए है?

मैं आप के सामने इन बातों की निशानदेही इस लिए कर रहा हूँ ताकि आप का दिल मख़्लूक़ के साथ न उलझा रहे बल्कि क़ल्ब व ज़ेहन बिल्कुल एक सो रहे। क्योंकि यह दिल मख़्लूक़ में उलझने के लिए नहीं बनाया गया है उसे तो अल्लाह पाक ने अपनी याद के लिए





बनाया है। जब सफ़रे हज में भी अल्लाह की याद नहीं होगी और हम हर दम मख़्लूक़ में उलझे रहेंगे तो भला बताओ किस वक़्त हम अल्लाह पाक को याद करेंगे? अगर इस सफर में अल्लाह पाक की याद दिल में रासिख़ न हो सकी तो फिर वतन जाकर अल्लाह पाक की याद को दिल में बसाना बड़ा मुश्किल होगा। इस लिए मैं बतौर ऐहतियात के यह सारी बातें आप लोगों को बता रहा हूँ कि अगर यह बातें मालूम नहीं होंगी तो फिर आप का दिल हर दम मख़्लूक़ के साथ उलझा रहेगा, कभी आप मुअल्लिम के बारे में सोचेंगे, कभी पानी के बारे में सोचेंगे, कभी नल के बारे में सोचेंगे, कभी बस के बारे में सोचेंगे, कभी उसका शिकवा करेंगे, कभी इस का शिकवा करेंगे, दिल व दिमाग़ पर हर दम यही बातें सवार

रहेंगी। जब आदमी का दिल उन चीज़ों में उलझा हुआ हो तो फिर उस दिल में अल्लाह की याद कहाँ से आएगी और उसे अल्लाह का ताअल्लुक़ क्यों कर मिलेगा? इस लिए सफरे हज के अंदर क़ल्ब व ज़ेहन को बिल्कुल फारिग़ करके निहायत इतमिनान के साथ यह सफर करें ताकि आप को पूरी तरह हज का मक़सूद हासिल हो जाए।

मैंने एक जगह यह वाक़आ पढ़ा कि एक मर्तबा हज़रत थानवी और हज़रत मुफ्ती मुहम्मद शफी साहब एक साथ कहीं जा रहे थे, दरमियान में हजरत थानवी ने अपनी जेब से काग़ज़ क़लम निकाल कर कुछ लिखा और लिख कर उसका काग़ज़ को अपनी जेब में डाल लिया, फिर मुफ्ती मुहम्मद शफी साहब से पूछा कि मुफ्ती साहब! बताइये मैंने उस काग़ज़





पर क्या लिखा? मुफ्ती साहब ने अर्ज़ किया कि हज़रत! मुझे नहीं पता कि आप ने क्या लिखा। फरमाया मुफ्ती साहब! एक काम जो मुझे बहुत बाद में करना था वह बार बार याद आ रहा था और मेरा दिल व दिमाग़ उसी में मशगूल हो रहा था, मैंने अपने दिल का बोझ काग़ज़ पर डाल दिया ताकि मेरा दिल उस में न उलझा रहे। फिर फरमाया मुफ्ती साहब! यह दिल मख़्लूक़ में उलझने के लिए थोड़े ही है, उसे तो अल्लाह पाक ने अपनी याद के लिए बनाया है।

लिहाज़ा अगर आप को इन बातों का इल्म होगा और आप हज सीख कर करेंगे तो इंशा अल्लाह तमाम मवाक़े पर बिल्कुल मुतमइन रहेंगे, कभी शिकवा शिकायत नहीं करेंगे कि इस काम में इतना वक़्त क्यों लग रहा है, इस

में इतनी ताख़ीर क्यों हो रही है वग़ैरह वग़ैरह।

## मक्का मुकर्रमा पहुंच कर सब से पहले क्या करें?

आम तौर पर किताबों में यह बात लिखी हुई है कि जिन हाजियों ने उमरे का ऐहराम बाँधा है वह मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने के बाद अपना सामान अपने कमरे पर रख कर सब से पहले उमरे से फारिग़ हो लें। इस तरतीब को पढ़ कर जब हाजी मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होता है तो उस पर यही धुन सवार रहती है कि सामान रखो और फौरन उमरा करने चलो। हालंकि उस वक़्त तक हाजी मुसलसल सफर की वजह से थकन से चूर हो चुका होता है। इस लिए कि घर से रवानगी के दिन की मसरूफियत की थकन, आने वालों से मुसलसल





मुलाक़ातें और उनकी ख़ातिर मुदारात में लगने की थकन, अपने वतन के एयरपोर्ट पर होने वाली काग़ज़ी कारवाई में इंतेज़ार की थकन, फिर पाँच घंटे का हवाई सफ़र, फिर जिद्दा एयरपोर्ट के मराहिल, अगर उन तमाम औक़ात का हिसाब लगाऐं तो तक़रीबन बहत्तर घंटे हो जाते हें, इस दौरान हाजी को नींद कम से कम मिलती है। आदमी कोई मशीन तो है नहीं कि मुसलसल ७२ घंटे की दौड़ धूप और थकन के बावजूद भी वह अपने कमरे में पहुंच कर चाक़ व चौबंद और हश्शाश बश्शाश रहे, उस वक़्त तक हाजी बहुत थक चुका होता है बल्कि यूँ कहिए कि थकन से बिल्कुल निढाल हो चुका होता है, लेकिन चूंकि उस ने किताब में यह बात पढ़ रखी है कि मक्का मुकर्रमा पहुंचते ही सब से पहले उमरा करना चाहिए तो वह

थकन के बावजूद उमरा करने चला जाता है जिस की बिना पर दो ख़राबियाँ पैदा होने का अंदेशा बढ़ जाता है।

१. पहली ख़राबी यह कि सफर की थकन और नींद की कमी के बाइस हाजी की क़ल्बी बशाशत जाती रहती है और हाजी क़ल्बी बशाशत के बग़ैर समझ बूझ कर उमरा करता है जिस में उसका दिल शामिल नहीं होता, जबकि यह मतलूब था कि हाजी पूरे इतमिनान और बशारत के साथ उमरा करे।

२. दूसरी ख़राबी यह कि थकन और नींद की कमी के बाइस हाजी के मिजाज़ में चिड़चिड़ा पन आ जाता है। चूंकि वहाँ माहौल ऐसा बनता है कि झगड़े के मवाक़े बाकसरत पेश आते हैं, इस लिए इस बात का क़वी अंदेशा रहता है कि इस चिड़चिड़े पन की वजह से





हाजी दूसरों से उलझ पड़े, हालांकि हज में उलझने और झगड़ने से सख़्ती के साथ मना किया गया है जैसा कि मैंने पहले अर्ज़ किया था। लिहाज़ा बेहतर यह है कि जब आप अपने कमरे पर पहुंचे तो फौरन उमरा करने के बजाए अपनी ज़रूरियात से फारिग़ होकर इतमिनान से सो जाऐं।

यह बात मैं आप को ऐसे ही नहीं कह रहा हूँ बल्कि मैंने अपने बड़ों के साथ हज किया है, हज कैसे किया जाता है यह मैंने उन से सीखा है। मैं यह नहीं कहता कि मैं बहुत कुछ जानता और समझता हूँ, लेकिन अपनी कम अक़्ली और कम फहमी के बावजूद जो कुछ भी उन से सीखा और समझा है उसका निचोड़ और ख़ुलासा आप के सामने बयान कर रहा हूँ जिस पर अमल करके आप अपने हज को बहुत

अच्छा हज बना सकते हैं।

मैंने १९८६ ई० में अपने शैख़ अव्वल हज़रत मौलाना अब्दुल हलीम साहब रह० के साथ हज किया है। उस सफर में हमारा क़ाफिला ऐसे वक़्त मक्का मुकर्रमा में पहुंचा था कि हम लोगों ने रास्ते में फज्र की नमाज़ पढ़ी थी और उसके कुछ ही देर बाद मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हो गए थे। हज़रत हम लोगों को सीधे कमरे पर ले गए और अस्र के बाद तक ख़ूब आराम कराया, मग़्रिब से कुछ देर क़ब्ल हज़रत ने हम लोगों से फरमाया कि अब आराम हो चुका है, लिहाज़ा अब उमरा करने के लिए चलो।

देखिए! फज्र के बाद से लेकर मग़्रिब से कुछ देर क़ब्ल तक आराम कराया कि इतमिनान से खा लो, नमाज़ पढ़ लो और फिर





सो जाओ। जब सारे लोग सो कर उठ गए तो आप ने पूछा कि आराम हो गया? हम ने कहा जी हज़रत! आराम हो चुका। फ़रमाया अब उमरा करने के लिए चलो। फिर फ़रमाया कि देखो! मैंने इस लिए आराम करवाया ताकि हम इतमिनान से उमरा कर सकें, क्योंकि उमरा करना एक इबादत है और इबादत समझ बूझ कर अदा नहीं की जाती कि जल्दी जल्दी तवाफ किया, जल्दी जल्दी सई की फिर जल्दी से हल्क़ करवा लिया और एहराम खोल कर फारिग़ हो गए, यह एक अहम इबादत है जिसे उसकी तमाम तर अज़मतों के साथ अदा करना चाहिए।

नीज़ हज़रत ने यह फ़रमाया था कि "जो हज के मसाइल नहीं सीखेगा और लोगों की देखा देखी हज करेगा उसे हज में तकलीफ

होगी और फिर वह उस तकलीफ का लोगों के दरमियान चरचा करता फिरेगा कि हज में बहुत तकलीफ़ होती है। और जो मसाइल सीख कर जाएगा, लोगों की देखा देखी नहीं करेगा, सारे अरकान समझ कर अदा करेगा, वह कभी भी तकलीफ़ का शिकवा नहीं करेगा, इस लिए कि उस ने कोई तकलीफ़ का काम ही नहीं किया।

आप के साथियों में कुछ अफ़राद यक़ीनन ऐसे होंगे जो सामान रखते ही उमरा करने चले जाऐंगे और वापसी पर जब आप को सोता हुआ देखेंगे तो आप से कहेंगे कि अरे हाजी साहब! अभी तक आप सो रहे हैं, उमरा करने नहीं गए? देखिए हम तो फारिग़ होकर भी आ गए। चूंकि यह लोग फारिग़ होने ही के लिए गए थे, इस लिए फ़ारिग़ होकर चले आए। हम





फ़ारिग़ होने नहीं आए हैं, हम तो एक अहम इबादत को अंजाम देने आए हैं और जब तक क़ल्बी बशाशत हासिल नहीं होगी उस वक़्त तक उस इबादत को अंजाम नहीं देंगे।

## तवाफ़ किस तरह करें?

जब आप पूरी तरह आराम से फ़ारिग़ होकर हरम में दाख़िल होंगे तो आप को बहुत इतमिनान और सुकून महसूस होगा, सारे आमाल में आप का दिल लगेगा, किसी अमल में आप को जल्दी नहीं होगी, तवाफ़ पूरे इतमिनान के साथ करेंगे, दौड़ कर जल्दी जल्दी सात चक्कर पूरा करने की फ़िक्र सवार नहीं होगी, और फिर तवाफ़ तो ऐसा होना चाहिए कि पूरे तवाफ़ में बल्कि तवाफ़ के हर चक्कर में अल्लाह की याद हो, उनका ज़िक्र हो, उन से माँगना हो और हर चक्कर के बाद

उनकी मुहब्बत में इज़ाफा महसूस हो रहा हो, ख़्वाह उस में ज़्यादा वक़्त क्यों न लग जाए लेकिन तवाफ इसी तरह पूरे इतमिनान के साथ करें। इस लिए कि हम वहाँ इसी काम से गए हैं, उन कामों के अलावह वहाँ हमारे पास कोई दूसरा काम है ही नहीं।

## हरम में मुलाक़ात की जगह मुतय्यन कर लें

अलबत्ता एक बात का ख़्याल रखें कि जिन हुज्जाज के साथ मस्तूरात हों या कई साथी हों, वह आपस में मुलाक़ात की जगह का तअय्युन कर लें कि अगर हम में से कोई शख़्स अपने साथियों से अलग हो जाए तो वह तवाफ़ और सई से फ़ारिग़ होकर फलाँ जगह आजाए, सारे साथी वहीं जमा होंगे और वहीं हमारी मुलाक़ात होगी। अगर मुलाक़ात के लिए किसी दरवाज़े





का इंतेख़ाब किया गया है तो उस दरवाज़े का नाम और उसका नम्बर सारे साथियों को बता दिया जाए।

## हजरे असवद का बोसा

याद रखें! हजरे असवद को बोसा देना फर्ज़ या वाजिब नहीं है। चूंकि अय्यामे हज में बहुत भीड़ होती है, लिहाज़ा इस बात का ख़्याल रखें कि ऐहराम की हालत में हजरे असवद को बोसा देने के दरपै न हों। इसी तरह ग़ैर ऐहराम की हालत में भी जब कि बहुत भीड़ हो तो उस वक़्त भी भीड़ में घुस कर बोसा देने न जाऐं। इस लिए कि उस वक़्त इस क़दर भीड़ होती है कि लोग एक दूसरे पर गिरे जाते हैं, एक दूसरे को धक्का देते हैं, इस के अलावा उस भीड़ में औरतें भी होती हैं जिन से इख़्तिलात होता है इन सब बातों से बचने के

लिए बेहतर यही है कि भीड़ के वक़्त बोसा देने न जाऐं, इस लिए कि ईज़ाए मुस्लिम हराम है, इसी लिए औरतों से इख़्तिलात भी हराम है। आप ख़ुद सोचें कि हराम का इरतिकाब करके किसी ऐसे अमल को अंजाम देने जाना जो फर्ज़ या वाजिब नहीं है, कहाँ की अक़्लमंदी है?

हराम का इरतिकाब तो वैसे ही बुरा है लेकिन अगर हराम का इरतिकाब हरम में किया जाए तो उस वक़्त उस अमल की क़बाहत और भी बढ़ जाती है और यह और भी ज़्यादा संगीन जुर्म बन जाता है। जब हाजी हरम के अंदर हराम का इरतिकाब करेगा तो फिर उसके अंदर से मानने का मिजाज़ ख़त्म हो जाएगा और फिर उसकी उसी हालत पर मोहर लग जाएगी जैसा कि मैं पहले अर्ज़ कर चुका हूँ कि वहाँ आदमी के आमाल व कैफियात





पर मोहर लगती चली जाती है और फिर आदमी उन आमाल व कैफियात के साथ बक़िया ज़िंदगी गुज़ारता है। जब ऐसा हाजी लौट कर यहाँ आएगा तो वह इसी तरह मुसलमानों को तकलीफ पहुंचाएगा जैसे उस ने हरम में लोगों को धक्के देकर तकलीफ पहुंचाई थी और इसी तरह अपने मिजाज़ से चलेगा जैसा वह हरम में चला करता था।

## हज में अक़्ल को दख़्ल नहीं

हज एक ऐसा फरीज़ा है और उस में ऐसे आमाल अंजाम दिए जाते हैं जिस में अक़्ल का कोई दख़्ल नहीं है। उसकी बड़ी वजह यह है कि अल्लाह पाक यह चाहते हैं कि बंदा मेरा दीवाना हो जाए और यह भूल जाए कि मख़्लूक़ उसे क्या कहती है और उस के मुताअल्लिक़ क्या सोचती है, वह तो बस मेरी याद में

दीवाना हो। यही वजह है कि हाजी के अच्छे कपड़े उतरवा दिए, अच्छे जूते निकलवा दिए, बस ऐहराम की दो चादरों में अपने घर बुलाया।

देखिए! शरीअत का हुक्म यह है कि अकड़ कर मत चलो, इस लिए कि अकड़ना अल्लाह पाक को नापसंद है। जो शख़्स दुनिया में अकड़ता है वह कल क़यामत के मैदान में च्यूंटी जैसा बना दिया जाएगा, लोग उसे रौंदते हुए जाएगें, लेकिन वहाँ यह हुक्म बदल जाता है और अल्लाह पाक ख़ुद कहता है कि तवाफ में अकड़ कर चलो। तवाफ में अकड़ने का हुक्म उस वक़्त हुआ था जब हरम में कुफ्फार थे, उन्हें दिखाने के लिए यह हुक्म दिया गया था कि उन्हें अकड़ कर दिखाओ कि हम बहुत ताक़त वाले हैं, लेकिन अब तो किसी





को दिखाना नहीं है, उस के बावजूद अल्लाह पाक कह रहे हैं कि हमें दिखाओ, हमारे लिए अकड़ो और सिर्फ शुरू के तीन चक्करों में अकड़ो, बाक़ी चार चक्करों में मत अकड़ो, अलबत्ता तवाफ के सातों चक्करों में अपना दाहिना कंधा खुला रखो।

देखिए! यह कैसी अजीब बात है कि जिस अमल को अल्लाह पाक ने नापसंदीदा क़रार दिया है और उसे छोड़ने का हुक्म दिया है, उसी अमल को अपने घर बुला कर करने का हुक्म दे रहे हैं कि मेरे घर आकर इसी तरह अकड़ो जिस तरह एक पहलवान अखाड़े में उतर कर अपने मुख़ालिफ को मरऊब करने के लिए अकड़ कर चलता है, तुम भी इसी तरह अकड़ कर चलो, तुम्हारा यहाँ आकर अकड़ना मुझे पसंद है।

## इस्लाम दर हक़ीक़त नाम है मान लेने का

दोस्तो! अल्लाह पाक इस हुक्म के ज़रिये यह समझाना चाहते हैं कि मेरे अहकाम तुम्हारी अक़्ल में आऐं या न आऐं, तुम्हारा काम तो बस उन्हें मान लेना है। लिहाज़ा जो हाजी हज में सौ फीसद मानने का मिजाज़ बना लेता है, मख़्लूक़ को देखना छोड़ देता है, जब वहाँ से अल्लाह की मान कर लौटता है तो फिर वह अपने मुक़ाम पर आकर यह नहीं देखता कि शरीअत के मुताबिक़ शादी करने से लोग ख़ुश होंगे या नाराज़ होंगे, वह बस यह देखता है कि मेरे इस अमल से मेरे अल्लाह पाक राज़ी होंगे या नाराज़ होंगे।

इसी लिए हज में मिजाज़ के ख़िलाफ करने की आदत डलवाई जाती है कि ऐहराम की





चादर से मुताअल्लिक़ हुक्म दिया कि उसे एक कंधे पर रहने दो और दूसरे कंधे से हटाओ, हालंकि जब एक बाशोऊर आदमी चादर ओढ़ता है तो वह अपने दोनों कंधों को ढाँकता है, लेकिन अल्लाह पाक फ़रमा रहे हैं कि जब तुम ऐहराम की चादर ओढ़ कर तवाफ शुरू करो तो एक कंधा ढाँक लो और दूसरा खुला रहने दो, यह मत सोचो कि इस तरह चादर ओढ़ने पर तुम कैसे नज़र आओगे। जबकि हमारी आदत यह होती है कि जब हम कपड़ा पहेनते हैं तो आईने में अपना चेहरा देखते हैं कि हम कैसे लग रहे हैं, टोपी लगाते हैं तो देखते हैं कि हम इस टोपी में कैसे लग रहे हैं, इसी तरह अपने दूसरे बहुत से आमाल में हम यह देखते रहते हैं कि हम कैसे लग रहे हैं। हमारी आदत को अल्लाह पाक हमारे अंदर से

निकालना चाहते हैं कि तुम हज में अपनी इस आदत को अपने अंदर से निकाल दो कि तुम ख़ुद को कैसे लग रहे हो बल्कि तुम यह सोचो कि तुम अल्लाह को कैसे लग रहे हो।

## एक अहम नुक्ता

जब बंदा तवाफ़ शुरू करता है तो उसका बायाँ हिस्सा ख़ानए काबा से क़रीब होता है, इस लिए कि वह तवाफ शुरू करते ही बाऐं जानिब चलना शुरू कर देता है।

देखिए! यह भी अजीब बात है कि हमें अपने सारे भले कामों को दाऐं जानिब से शुरू करने का हुक्म दिया गया है लेकिन तवाफ़ के मुताअल्लिक़ कहा गया कि उसे बाऐं जानिब से शुरू करो। उस में बुज़ुर्गों ने यह हिक्मत बतलाई है कि जब बंदा तवाफ़ शुरू करता है तो उसके जिस्म का बायाँ हिस्सा ख़ानए काबा





से क़रीब होता है और चूंकि उसका दिल भी बायें जानिब होता है, लिहाज़ा उसके दिल को अपने घर से क़रीब रखने के लिए अल्लाह पाक ने उसे यह हुक्म दिया कि तू बायें जानिब से तवाफ शुरू कर, जब तू इस तरह तवाफ शुरू करेगा तो तेरा दिल मेरे घर से क़रीब रहेगा, मैं नहीं चाहता कि मेरे घर आकर तेरा दिल मुझ से और मेरे घर से दूर रहे।

## हमारा हाल

दोस्तो! अल्लाह पाक तो यह चाहता है कि तवाफ की हालत में बंदे का दिल मुझ से क़रीब रहे, उसके दिल में मेरी याद बसी रहे, वह हमा तन मेरी जानिब मुतवज्जह रहे लेकिन बड़े अफसोस की बात है कि अल्लाह पाक के घर से इतने क़रीब रह कर भी हम अल्लाह पाक से इतने ग़ाफिल रहते हैं कि तवाफ के

दौरान हमें अल्लाह की याद के बजाए दूकान याद आ रही होती है, घर याद आ रहा होता है, बीवी बच्चे याद आ रहे होते हैं, घर के अहवाल सोचते रहते हैं। हालांकि घर का या दूकान का ख़्याल आना बुरा नहीं है लेकिन ख़्याल आजाने पर उसे मुसलसल सोचते रहना और उसी में अपना दिल अटकाए रखना कि पता नहीं दूकान कैसे चल रही होगी, पता नहीं अम्मी का क्या हाल होगा, पता नहीं बीवी बच्चे कैसे होंगे, फोन भी नहीं लग रहा है कि बच्चों की ख़ैरियत ही मालूम हो जाती, यह सब बुरा है। इस लिए कि अगर अल्लाह के घर पहुंच कर और उनके घर का तवाफ करते हुए भी हमें अपना घर और दूकान ही याद आ रही है तो भला बतलाइये कि आख़िर उस दिल में अल्लाह पाक की याद कब आएगी?





## तवाफ़ करते हुए क्या पढ़ें?

बहुत से लोग पूछते हैं कि तवाफ़ करते हुए क्या पढ़ा जाए, क्या माँगा जाए? आप जो चाहें माँगें, कोई मनाई नहीं है, अलबत्ता हदीसे पाक के अंदर एक ख़ास दुआ का तज़किरा मिलता है कि जब आप तवाफ करते हुए रूकने यमानी और हजरे असवद के दरमियान पहुंचे तो :

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

पढ़ा करें।

## तवाफ़ के दौरान मेरा मामूल

आदमी तवाफ़ के दौरान अपने ज़ौक़ के ऐतेबार से जो चाहे मांगे कुछ मना नहीं है। मेरा मामूल तवाफ़ के दौरान यह है कि मैं

पहले चक्कर में अल्लाह पाक की ख़ूब तारीफ बयान करता हूँ, दूसरे चक्कर में हज़रत नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आप की याद के साथ दुरूद पाक पढ़ता हूँ, फिर तीसरे चक्कर में दुआ मांगना शुरू करता हूँ, चूंकि हमें तवाफ़ में सिर्फ एक चक्कर तो लगाना नहीं है बल्कि सात चक्कर लगाने हैं और फिर तवाफ भी सिर्फ एक नहीं करना है बल्कि कई तवाफ़ करने हैं इस लिए कोशिश यह होती है कि तवाफ के हर चक्कर में एक शोबे से मुतअल्लिक़ जितनी दुआऐं मांगी जा सकती हैं मांग लूँ।

चूंकि ईमान हमारे नज़दीक सब से ज़्यादा क़ीमती चीज़ है, लिहाज़ा एक चक्कर में ईमानियात से मुताअल्लिक़ दुआऐं मांगता हूँ, उसके बाद दूसरे चक्कर में इबादात,





अख़्लाक़ियात,मामलात, मुआशरत से मुताअल्लिक़ दुआ मांगता हूँ। फिर इबादात में भी मुख़्तलिफ इबादात मस्लन नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, तिलावत, ज़िक्र वग़ैरा आमाल से मुताअल्लिक़ तफ्सीलन दुआ माँगता हूँ कि या अल्लाह! अब तक यह सारे आमाल में ग़फलत के साथ अंजाम दिया करता था, अब आप मुझे उन तमाम आमाल को अपनी याद के साथ इसी तरह अंजाम देने की तौफीक़ दीजिए जिस तरह उनका अंजाम दिया जाना आप को पसंद है।

चूँकि वालिदैन का हम पर बड़ा हक है, लिहाज़ा एक चक्कर में फ़क़त वालिदा मरहूमा के लिए दुआ माँगता हूँ, इसी तरह एक चक्कर में फक़त वालिद मरहूम के लिए दुआ माँगता हूँ, इसी तरह वालिद मरहूम के सारे रिश्तेदारों के लिए दुआ माँगता हूँ, फिर एक चक्कर में

वालिदा मरहूमा के सारे रिश्तेदारों के लिए दुआ मांगता हूँ, फिर एक चक्कर में सारे ससुराली रिश्तेदारों के लिए दुआ माँगता हूँ, इसी तरह अपनी बिल्डिंग वालों के लिए, अपने महल्ले वालों के लिए, पड़ोसियों के लिए, मस्जिद के इमाम साहब के लिए, मस्जिद के मुसल्लियों के लिए, मस्जिद और जमात के साथियों के लिए, इसी तरह सारे दोस्त अहबाब के लिए नाम बनाम दुआ करता हूँ, फिर अपने इलाक़े से क़रीबी इलाक़े वालों के लिए, मस्लन कुर्ला वालों के लिए, फिर साँताक्रूज़ वालों के लिए, फिर उस से आगे बढ़ कर अंधेरी, जोगेश्वरी और मलाड वालों के लिए, इसी तरह जहाँ तक याद आता है आगे बड़ता चला जाता हूँ। इसी तरह दीन के दीगर जितने शोबे हैं उन तमाम शोबों से मुतअल्लिक़ और उन शोबों में काम



हज और उमरा तजरबात की रोशनी में

करने वाले अफराद से मुताअल्लिक़ भी दुआ माँगता हूँ और फिर पूरी उम्मत की हिदायत के लिए, उनकी ज़ाहिर व बातिन की इस्लाह के लिए, उन की परेशानी दूर होने के लिए, ग़र्ज़ यह कि अपनी फहम के मुताबिक़ तमाम शोबों से मुताअल्लिक़ ख़ूब सोच सोच कर दुआ का ऐहतिमाम करता हूँ, यह सब अल्लाह पाक की दी हुई तौफ़ीक़ से होता है, मेरा उस में कोई कमाल नहीं है।

एक दफा मैं हज से वापस आया तो एक साहब से मुलाक़ात हुई। मैंने उन से कहा कि मैंने हज में आप का नाम लेकर दुआ की है, फिर दूसरी जगह जाना हुआ तो वहाँ भी एक साहब से मुलाक़ात हुई, मैंने उन से भी यही कहा। कुछ और आगे चले तो वहाँ भी एक साहब से मुलाक़ात हुई, मैंने उन से भी यही

कहा। एक साहब जो मेरे साथ चल रहे थे वह यह सब सुन कर हैरान हो रहे थे कि शकील भाई किस किस के लिए दुआ करते हैं। मैंने उन से कहा कि आप यह सोच रहे होंगे कि मुझे इतने लोगों के नाम कैसे याद रहते हैं, कहने लगे कि हाँ सोच रहा था। मैंने कहा देखिए! जब तबलीग़ में निकल कर इलाक़े घूमते हैं और लोगों से मुलाक़ातें करते हैं तो उन के नाम भी याद आते रहते हैं। फिर इस तरह सोचते सोचते अपने गाँव तक चला जाता हूँ कि फलाँ हमारे रिश्तेदार हैं, फलाँ हमारे रिश्तेदार हैं तो उन का नाम लेकर उनके लिए भी दुआ करता हूँ।

उन तमाम लोगों के हक़ में दुआ करने के बावजूद में लाल बाग़ वालों को, दादर वालों को और परेल वालों (उन इलाक़ों में बकसरत





हिन्दू रहते हैं) को भूल नहीं जाता बल्कि उन्हें भी याद रखता हूँ और उन के लिए भी दुआ माँगता हूँ। अब अगर कोई कहे कि शकील भाई! उन इलाक़ों में तो तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं रहता, फिर आप वहाँ रहने वालों में किस के लिए दुआ करते हैं? ठीक है मेरा वहाँ कोई रिश्तेदार नहीं रहता लेकिन वहाँ रहने वाले भी तो अल्लाह ही के बंदे हैं और हमारे ही नबी के उम्मती हैं, इस निस्बत की बिना पर उनका हम पर हक़ है कि हम उनकी ख़ैर ख़्वाही करें, उनके हक़ में ग़ायबाना दुआऐं करें, इसी लिए मैं उन्हें फरामोंश नहीं करता बल्कि उनके हक़ में भी हिदायत की दुआ माँगता रहता हूँ, जब आप इस तरह दुआ माँगेंगे तो इंशा अल्लाह बहुत से लोगों के लिए दुआ माँग लेंगे।

अगर आप मुनासिब समझें तो आप भी इस

तरह दुआ कर सकते हैं। इस दौरान अगर यह गुनहगार याद आ जाए तो आप इस के लिए भी दुआ कर दें कि बहुत मुहताज हूँ, मुहताज का हक़ भी होता है और उसे देख कर लोगों को रहम भी आता है, लिहाज़ा आप मेरी मुहताजी का ख़्याल करते हुए मेरे लिए भी दुआ कर दें कि अल्लाह पाक मेरे गुनाहों को माफ फ़रमा दें और मुझ से राज़ी हो जाऐं।

## दौराने तवाफ काबतुल्लाह को देखने का हुक्म

दौराने तवाफ़ काबतुल्लाह की तरफ मुंह करना मुहरमाते तवाफ़ में से है, हाँ अलबत्ता शुरू तवाफ़ में हजरे असवद के इस्तिक़बाल के वक़्त जायज़ है।

(मुअल्लिमुल हुज्जाज स १३०, ३१)





## शिकायतों से गुरेज़ करें

तवाफ़ के दौरान आप को बहुत धक्के लगेंगे लेकिन आप की ज़बान पर उसका तज़किरा न हो कि लोग कितने धक्के मारते हैं, काले लोग ऐसे हैं, गोरे लोग ऐसे हैं, ईरानी ऐसे हैं, तुर्की ऐसे हैं वग़ैरह वग़ैरह।

इसी तरह कुछ लोग औरतों का रोना बहुत रोते हैं, वह बस एक ही बात करते हैं कि यार यह भी कोई निज़ाम है, औरतों को तो बिल्कुल अलग कर देना चाहिए, इधर से आती हैं तो धक्का मारती हैं उधर से आती हैं तो धक्का मारती हैं, उन लोगों पर बस यही फिक्र सवार रहती है।

एक आदमी किसी बुज़ुर्ग के पास बैठ कर दुनिया की बुराई कर रहा था। फ़रमाया अगर यह दुनिया तुझे बुरी लगती है तो अपनी ज़बान

पर उसका तज़किरा न लाता, क्या कोई आदमी किसी बुरी चीज़ का भी तज़किरा किया करता है? इसी तरह किसी ने हज़रत राबिआ बसरिया रह० से कहा कि आप शैतान का तज़किरा क्यों नहीं करतीं? फरमाया रहमान के तज़किरे से फ़ुरसत पाऊँ तो शैतान का तज़किरा करूँ।

मियाँ! जब अल्लाह की याद से फ़ुरसत मिलेगी तभी तो आदमी दूसरों का तज़किरा करेगा कि यह धक्का देती है और वह धक्का देती है। कुछ लोगों ने मेरे पास आकर भी औरतों की इसी तरह शिकायत की। मंने उन से कहा कि तुम लोग फ़ुज़ूल बातें करते रहते हो कि यह धक्का देती हैं वह धक्का देती हैं, यह क्यों नहीं सोचते कि यह औरतें अल्लाह का घर देख कर उनकी मुहब्बत में ऐसी दीवानी हो जाती हैं कि उन्हें उसका होश ही नहीं रहता कि हमारे क़रीब मर्द हैं या औरतें,



हज और उमरा तजरबात की रोशनी में

हमारा किसी को धक्का लग रहा है या नहीं लग रहा, आप उन औरतों से मुताअल्लिक़ यह राय क्यों नहीं क़ायम कर लेते कि यह अल्लाह का घर देख कर उनकी याद में ऐसी खो जाती हैं कि उन्हें किसी बात का होश नहीं रहता, इस लिए आप इन सब बातों का तज़किरा ही न करें।

## तवाफ़ के फौरन बाद सई करना ज़रूरी नहीं

तवाफ़ से फ़ारिग़ होने के बाद सई करना होता है, लेकिन इस तअल्लुक़ से यह मस्अला जान लें कि तवाफ़ के फौरन बाद सई करना ज़रूरी नहीं है। और यह बात है कि सई किए बग़ैर और हल्क़ कराए बिग़ैर या बाल कटवाए बग़ैर आप ऐहराम नहीं खोल सकते, लेकिन जिन लोगों के साथ बूढ़ी औरतें हों, बीमार

लोग हों उन्हें चाहिए कि तवाफ़ के बाद कुछ देर आराम कर लें, वहीं हरम में बैठ जाऐं या अपने घर चले जाऐं और आराम करने के बाद दोबारा आकर सई कर लें, लेकिन अगर तवाफ़ के बाद भी आप के अंदर और आप की मस्तूरात के अंदर सई की हिम्मत बाक़ी हो तो फिर उसी वक़्त सई कर लें।

## अल्लाह पाक की मेहरबानी

तवाफ़ की तरह सई भी इतमिनान से करना चाहिए। अलबत्ता तवाफ़ और सई के दरमियान यह फर्क़ है कि जिस जगह से तवाफ़ शुरू किया जाता है वापस उस जगह पहुंचने पर ही पूरा एक चक्कर शुमार किया जाएगा, जबकि सई में ऐसा नहीं है। बल्कि सई जहाँ से शुरू होती है, वहाँ से चलने के बाद आधा चक्कर पूरा होने पर उसे पूरा चक्कर कर लिया जाता है और





जब लौट कर उस जगह पहुंचेंगे जहाँ से सई शुरू की थी तो आप के दो चक्कर शुमार किए जाऐंगे।

देखिए! यह भी अल्लाह पाक की कितनी बड़ी मेहरबानी है कि हम आधा चक्कर चलें, लेकिन उसे पूरा शुमार कर लिया जाए, इस लिए कि सई का फासला बड़ा लम्बा होता है, लिहाज़ा अल्लाह पाक ने भी कह दिया कि तुम साढ़े तीन चक्कर लगा लो तो मैं उन्हें पूरे सात चक्कर शुमार कर लूंगा। अलग़र्ज़ हज के जितने अरकान हैं वह सब के सब समझ से बालातर हैं और यह इसी लिए हैं कि अल्लाह पाक अपने बंदों को यह समझाना चाहते हैं कि जो मैंने कह दिया तुम वही करो, कहीं अपनी अक़्ल मत दौड़ाओ।

## दौराने सई दुआ क़बूल होती है

बहुत से लोग सई शुरू करते हैं और यूँही ख़ामोशी के साथ पूरी सई ख़त्म कर देते हैं, हालांकि सई के दौरान दुआ माँगना चाहिए, इस लिए कि वह दुआ की क़बूलियत का वक़्त है, लिहाज़ा इस मौक़े को ग़नीमत समझते हुए दुआ का ख़ूब ऐहतिमाम करना चाहिए। फिर वैसे भी उस वक़्त कोई काम तो होता नहीं, इस लिए अपने आप को दुआ ही में मशग़ूल रखना चाहिए।

## एक ग़लत फ़हमी का इज़ाला

बाज़ लोग उस ग़लत फ़हमी में मुबतला रहते हैं कि जब तक पूरी पहाड़ी पर नहीं चढ़ेंगे उस वक़्त तक हमारा चक्कर पूरा नहीं होगा, इस लिए वह लोग पहाड़ी के आख़िरी सिरे तक चढ़ने की कोशिश करते हैं, हालांकि





ऐसा नहीं है। सफा और मरवा आने जाने के रास्ते के दरमियान एक पार्टीशन बनाया गया है, उस पार्टीशन के आगे बढ़ते ही जो पहला सुतून मिलता है, आप बस वहाँ तक चले जाऐं और फिर वहीं से लौट आऐं, आप का चक्कर पूरा हो जाएगा।

## सई के दौरान दौड़ना

सई के दौरान कुछ दूर चलने के बाद दो अदद हरी लाइटें कुछ फ़ासले से लगी हुई नज़र आऐंगी उन दोनों लाइटों के दरमियान मर्दों को दौड़ना होता है, जब कि औरतें बदस्तूर अपनी रफ्तार में चलती रहेंगी, उनके लिए दौड़ना मना है। इस अमल में भी बज़ाहिर यह समझ में आता है कि यह भी एक पागलपन है कि कुछ दूर चलो फिर दौड़ो, फिर उसके बाद दोबारा चलना शुरू करो, हालांकि यह पागलपन नहीं है।

यह दर हक़ीक़त हज़रत हाजिरा की यादगार है जो अल्लाह की एक दीवानी बंदी थीं और सौ फीसद अल्लाह की मानती थीं। उन्होंने अपने बेटे हज़रत इस्माईल के लिए पानी की तलाश में उस फासले के दरमियान दौड़ लगाई थी, अल्लाह पाक को उन का यह अमल इस क़दर पसंद आया कि अल्लाह पाक ने उसे उनकी यादगार के तौर पर हमेशा के लिए बाक़ी रखा और क़यामत तक आने वाले इंसानों को बता दिया कि देखो! अगर तुम मेरी मान कर और मेरी मुहब्बत में दीवाने बन कर ज़िंदगी गुज़ारो तो मैं तुम्हें भी इस तरह ज़िन्दा रखूंगा कि लोग हमेशा तुम्हारा तज़किरा किया करेंगे।

लेकिन दोस्तो! हम अपने तज़किरे को बाक़ी रखने के लिए न दौड़ें बल्कि अल्लाह का हुक्म





और हज़रत हाजिरा की सुन्नत समझ कर दौडें और यह नीयत करें कि हमारे इस अमल से कि अल्लाह का नाम जिन्दा हो, इस्लाम जिन्दा हो, नबी की सुन्नत जिन्दा हो और उस अमल की बरकत से हमें ऐसा बन कर जीने की तौफ़ीक़ मिले कि लोग हमें देख कर कहने लगें कि देखो! अल्लाह वाला ऐसा होता है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उम्मती ऐसा होता है।

## हलक़ करना अफ़ज़ल है

सई से फारिग़ होने के बाद आप को अपने बाल कटवाने हैं, बाल कटवाये भी जाते हैं और मुंढवाये भी जाते हैं, अलबत्ता हलक़ कराना और बाल मुंढवा देना अफ़ज़ल हैं इस लिए हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाल कटवाने के लिए एक मर्तबा

और हलक़ कराने वाले के लिए तीन मर्तबा दुआ की है। अब यह आप के इख़्तियार में है कि आप हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तीन मर्तबा वाली दुआ लेना चाहते हैं या एक मर्तबा वाली। औरतों के लिए बाल का कटवाना ज़रूरी है लेकिन कितना कटवाना है उसका मस्अला आप उलमा से मालूम कर लें।

बाल कटवाने के बाद आप हालते ऐहराम से निकल आऐंगे, यानी अब ऐहराम वाली तमाम तर पाबंदियाँ ख़त्म हो जाऐंगी, आप अपने कपड़े पहेनना चाहें तो पहेन सकते हैं। अब हज से पहले जब तक आप मक्का मुकर्रमा में रहें और फिर हज से वापसी के बाद भी जब तक आप का क़याम मक्का मुकर्रमा में रहे, उस वक़्त तक आप इबादत में मशग़ूल रहें।





## इबादतों में अफ़ज़ल तवाफ है

हाजी के लिए वहाँ इबादतों में सब से अफ़ज़ल इबादत तवाफ़ है, इस लिए कि दीगर इबादात का मौक़ा तो उसे अपने मुक़ाम पर रहकर भी मिल जाएगा, लेकिन तवाफ़ का मौक़ा नहीं मिल सकता। इस लिए उलमा ने लिखा है कि वहाँ ज़्यादा से ज़्यादा अपने आप को तवाफ़ में मशगूल रखना चाहिए और अगर तवाफ़ न कर रहे हों तो फिर नमाज़ और तिलावते क़ुरआन में मशगूल रहना चाहिए।

## हरम में नमाज़ किस तरह पढ़ें?

हरम में नफ़िल नमाज़ों का ख़ूब ऐहतिमाम करें, लेकिन जैसी ग़फ़लत वाली नमाज़ हम अपने मुक़ाम पर रह कर पढ़ा करते थे, ऐसी ग़फ़लत वाली नमाज़ हरम में न पढ़ें, बल्कि ख़ूब दिल लगा कर और अल्लाह की याद और

ध्यान के साथ ख़ूब इतमिनान वाली नमाज़ पढ़ें। यह तय कर लें कि हम दो रकअत नफ़िल १० मिनट, १२ मिनट बल्कि १५ मिनट में पढ़ेंगे, ग़र्ज़ यह कि जितनी लम्बी नमाज़ मुम्किन हो पढ़ें, रूकू सजदे ख़ूब लम्बे लम्बे करें। जब तक नमाज़ में बल्कि नमाज़ के हर हर रूक्न में अल्लाह की याद न आए उस वक़्त तक उस रूक्न से अलाहिदा न हों, ख़ूब इतमिनान से नमाज़ पढ़ें और नमाज़ को ख़ूब बनाने की मश्क़ करें।

अलबत्ता जिन लोगों के ज़िम्मे नमाज़ों की क़ज़ा बाक़ी है वह नफ़िल नमाज़ें पढ़ने के बजाए क़ज़ा नमाज़ें पढ़ें, लेकिन जिन के ज़िम्मे क़ज़ाए उम्री नहीं है वह नफ़िल का ख़ूब ऐहतिमाम करें और तय कर के पढ़ें कि आज हम बीस रकआत नफ़िल पढ़ेंगे, आज हम





पचास रकआत नफ़िल पढ़ेंगे, जब वहाँ इस तरह इबादत का शौक़ पैदा हो जाएगा तो फिर इंशा अल्लाह वह शौक़ अपने मुक़ाम पर पहुंचने के बाद भी बाक़ी रहेगा।

दोस्तो! हम इबादत तो करते हैं लेकिन दिल लगा कर नहीं करते, हमारे अंदर इबादत का ज़ौक़ व शौक़ नहीं है। सहाबए किराम की इबादतों को देखें, अल्लाह वालों की इबादतों को देखें कि उनके अंदर इबादत का इतना शौक़ होता था कि जब नमाज़ के लिए खड़े होते थे तो कहते थे कि आज की रात क़याम की रात है, आज की रात रूकू की रात है, आज की रात सजदे की रात है, पूरी पूरी रात एक एक रूकन में गुज़ार देते थे।

दरमियान में एक ज़रूरी बात यह भी अर्ज़ करता चलूं कि जब आप के सफ़र की तारीख़

तय हो जाए और आप को मालूम हो जाए कि मक्का मुकर्रमा में कितने दिन रहना है, मदीना मुनव्वरा में कितने दिन रहना है तो किसी मुफ्ती साहब से क़स्र नमाज़ों के अहकाम ज़रूर मालूम कर लें।

## अपने औक़ात की तरतीब ख़ुद बनाऐं

अगर हज में कुछ लोग आप के साथ हों तो हरम जाते वक़्त ग्रुप की शकल न बनाऐं कि पूरी जमात एक साथ जा रही है। अगर एक साथ जाना भी हो तब भी हरम में पहुंच कर सारे लोग मुतफ़र्रिक़ हो जाऐं। इस लिए कि एक साथ रहने की सूरत में इनफिरादी आमाल के अंदर बहुत ख़लल वाक़े होता है, इबादत कम और बातें ज़्यादा होती हैं। लिहाज़ा बेहतर यह है कि आप इनफिरादी तौर पर अपने औक़ात की तरतीब ख़ुद बनाऐं कि मुझे कब





उठना है, कब सोना है, कब हरम जाना है।

उस की वजह यह है कि हर आदमी की तबीयत अलग होती है, क़ुव्वत अलग होती है, यह देख कर न चलें कि फ़लाँ साथी सोया है तो हम भी सोऐंगे, वह हरम जाएगा तो हम भी जाऐंगे, बल्कि अपना निज़ामुल औक़ात ख़ुद बनाऐं और ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त हरम में रहने की कोशिश करें, वहाँ किसी को न पहचानें बल्कि अपने काम से काम रखें।

सारे साथी खाने की तरतीब एक साथ रखें ताकि इजतिमाई काम एक साथ अंजाम दिया जा सके। मस्अलन अगर टूर वाला ज़ोहर की नमाज़ के बाद खाना खिलाता है तो सारे लोग इकट्ठे होकर खाना खा लें, नीज़ इजतिमाई तालीम का भी एक वक़्त तय कर लें।

## औरतों को घर की नमाज़ में हरम का सवाब मिलता है

किताबों में लिखा हुआ है कि औरतों का अपने घरों में नमाज़ पढ़ना हरम में नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है, उन्हें घर ही पर हरम का सवाब मिल जाता है। मुम्किन है औरतें यह सोचें कि जब हमें घर ही पर नमाज़ पढ़ाना था तो फिर हम यहाँ क्यों आऐ?

देखिए! मैं औरतों को हरम में जाने या ले जाने से मना नहीं कर रहा हूँ, औरतें बेशक हरम में जा सकती हैं, लेकिन वह नमाज़ पढ़ने के लिए नहीं बल्कि ख़ानए काबा को देखने की नीयत से जाऐं, इस दौरान अगर नमाज़ का वक़्त हो जाऐ तो नमाज़ भी पढ़ लें, लेकिन नीयत यही हो कि हम ख़ानए काबा को देखने आए हैं, अगर मैं इस वक़्त घर पे होती तो





नमाज़ वहीं पढ़ती। इस लिए ख़ास नमाज़ पढ़ने की नीयत से हरम में न जाऐं।

हम और आप ज़रा ग़ौर करें कि यह अल्लाह पाक की कितनी बड़ी मेहरबानी है और उन्होंने हमें कैसी प्यारी शरीअत दी है जिस में औरतों की सुहूलत और राहत का और उन्हें मशक़्क़त से बचाने का इस क़द्र ख़्याल रखा गया है कि उन्हें घर ही में नमाज़ पढ़ने की सोहूलत दे दी गई कि तुम घर ही में नमाज़ पढ़ लिया करो, तुम्हें घर की नमाज़ में ही हरम का सवाब दे दिया जाएगा। इस लिए कि औरतें फ़ितरतन कमज़ोर हैं, यह कहाँ बार बार दौड़ कर हरम जाऐंगी कि अभी अस्र से आईं थीं कि फिर मग़्रिब में जाएँ और अभी मग़्रिब से आईं थीं कि फिर ईशा में जाऐं। लिहाज़ा उन्हें तकलीफ़ और मशक़्क़त से बचाने के लिए शरीअत ने उनके लिए यह सुहूलत

रखी है कि वह घर ही में नमाज़ पढ़ लिया करें, उन्हें हरम का सवाब मिल जाएगा, बल्कि उनकी घर वाली नमाज़ को हरम वाली नमाज़ से भी अफ़ज़ल क़रार दिया गया है।

## औरतों के लिए ज़रूरी हिदायात

औरतें अगर हरम में जाना चाहें तो वह रात में हरम चली जाया करें और वहाँ बैठ कर ख़ूब देर तक अल्लाह का घर देखें, तवाफ़ करना चाहें तो किनारे किनारे होकर ख़ूब तवाफ़ करें, हाँ अगर चंद औरतें साथ में हों तो वह आपस में यह तय कर लें कि देखो बहन! हम हज करने आए हैं, अल्लाह को याद करने आए हैं, उन का ताअल्लुक़ पाने आए हैं, लिहाज़ा हम आपस में कोई बात बग़ैर सोचे नहीं करेंगे, सिर्फ ज़रूरी बात करेंगे। यह बात मैं ख़ुसूसन औरतों से मुताअल्लिक़ इस लिए





कह रहा हूँ कि उन्हें हरम में बहुत औरतें मिलेंगी और मुख़्तलिफ़ जगहों की मिलेंगी। जब यह औरतें इकट्ठा होंगी तो लाज़िमन एक दूसरे से बातें करेंगी कि बहन! आप की कितनी बेटियाँ हैं? कितने बेटे हैं? फिर दूसरी जवाब देगी, फिर सवाल होगा कि लड़की की शादी कहाँ की? फिर उसके बाद ससुराल वालों का तज़किरा होगा और उस तज़किरे में उनकी ग़ीबत होगी कि वह ऐसे हैं और वैसे हैं, लिहाज़ा ऐहतियात इसी में है कि फ़ुज़ूल बातों में मशग़ूल होने के बजाए अपनी अपनी इबादतों में लगी रहें, इस लिए जहाँ चार औरतों को इकट्ठा देखें वहाँ से अलग हो जाऐं, अगर औरतें ऐसा न करेंगी तो फिर बड़ा नुक़सान उठाऐंगी और उन्हें हज का पूरा नफ़ा नहीं मिलेगा।

## मुलाक़ात...एक धोका

कुछ लोग यह हिमाक़त करते हैं कि अपने साथी को अपने इलाक़े के आने वाले हाजियों के बारे में ख़बर कर देते हैं कि फलाँ साहब हज के लिए आए हुए हैं और फलाँ जगह ठहरे हुए हैं, अगर आप मिलना चाहें तो मैं आप को मिला लाऊँ। फिर मुलाक़ात की तरतीब बनती है और दो चार आदमी ग्रुप की शक्ल में मुलाक़ात के लिए निकलते हैं और वहाँ पहुॅंच कर ख़ूब बातें करते हैं, इसी तरह दूसरे दिन फिर किसी साहब से मुलाक़ात की तरतीब बनाते हैं कि आज फलाँ के पास मिलने जाना है और आज फलाँ के यहाँ जाना है। हालांकि उन्हें वतन में किसी की याद नहीं आती। जिन से मुलाक़ात के लिए यह लोग जा रहे हैं उन से अपने वतन में मिले हुए कई कई साल हो





चुके होते हैं, वहाँ तो कभी मुलाक़ात करने नहीं जाते, लेकिन यहाँ पहुँच कर इन्हें उनकी बड़ी याद आती है।

ख़ूब अच्छी तरह समझ लें! कि यह सब नफ्स और शैतान की चाल है कि किसी तरह हाजी को हरम से बाहर निकालो और दोस्तो की महफ़िल में पहुँचाओ, इस लिए वह उन्हें हर दम दोस्तों की याद दिलाते हैं। लिहाज़ा जब कोई शख़्स आप के किसी दोस्त से आप की मुलाक़ात कराना चाहे तो आप उन से बड़ी मुहब्बत से कह दें कि देखो भाई! हम यहाँ दोस्तों का तज़किरा करने और उन से मुलाक़ातें करने नहीं आए हैं, हम यहाँ अल्लाह का तज़किरा करने और उन्हें अपना दोस्त बनाने आए हैं, रही दोस्त अहबाब से मुलाक़ात तो वह अपने वतन में जाकर भी कर लेंगे।

## हरम में ज़बान की हिफ़ाज़त निहायत ज़रूरी है

इसी तरह बहुत से लोग मुलाक़ात पर बिला ज़रूरत एक दूसरे से पूछते हैं कि आप किस टूर से आए हैं? आप के टूर वाले ने कितना पैसा लिया है? वग़ैरह वग़ैरह। आप ख़ुद सोचें कि इन सवालात से आप को क्या फायदा होगा कि कौन किस टूर से आया है और कितना पैसा देकर आया है।

इसी तरह बहुत से लोग बड़े होशियार होते हैं, वह अपने टूर में आने वालों से हरम के अंदर पूछते हैं कि तुम ने टूर वाले को कितने पैसा दिया है? वह जानते हैं कि यह शख़्स हरम में झूठ नहीं बोलेगा। वह यह सवाल इस लिए करते हैं कि उन्हें यह शुबहा होता है कि शायद टूर वाले ने उस शख़्स से कुछ कम पैसा लिया





है, वह समझते हैं कि टूर वाले ने हम से ८२ हज़ार लिया है और उस आदमी से ८० हज़ार लिया है, लिहाज़ा अगर उस से हरम में पूछेंगे तो वह हरम में सच सच बता देगा। अब अगर उस ने कह दिया कि मुझ से ८० हज़ार लिया है, तो अब यह टूर वाले के पास आकर लड़ते हैं कि तूने दूसरों से ८० हज़ार लिया है और मुझ से ८२ हज़ार लिया है, क्या यही तेरा इंसाफ है? फिर झगड़ा शुरू होता है कि तू ऐसा है और तू वैसा है?

यह सवाल बिला वजह एक नया तनाज़े को जन्म देता है। यह सब उसी वक़्त होता है जब हम फ़ुज़ूल बात करते हैं या किसी के फ़ुज़ूल सवाल का जवाब देते हैं, लिहाज़ा हमें वहाँ इस क़िस्म की तमाम फ़ुज़ूल और लग़्व बातों से बहुत बचना चाहिए।

## मस्जिद में फ़ुज़ूल बातें करने पर वईदें

वैसे भी मस्जिद के अंदर दुनियवी बातें करना सख़्त मना है, जब आम मस्जिदों के अंदर बात करने की मनाई है तो फिर यह तो हरम है, यहाँ दुनिया वी बातें करने मनाई और मज़म्मत और भी ज़्यादा है।

चुनान्चे फतहुल क़दीर में लिखा है कि "मस्ज़िद में दुनिया की बातें करना नेकियों को इस तरह खा लेता है जिस तरह आग लकड़ियों को खा लेती है''।

और ख़ज़ानतुल फ़िक़्ह में लिखा है कि "जो शख़्स मस्जिद में दुनिया की बातें करता है, अल्लाह तआला उसके चालिस दिन के आमाल हब्त कर देते हैं। (इशबाह वन्नज़ाइर)

इब्नुलहाल मालिकी ने लिखा है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मंक़ूल





है कि "आख़िरी ज़माने में मेरी उम्मत के लोग मस्जिदों में दाख़िल होंगे और हल्क़ा बना कर बैठ जाऐंगे और दुनिया की बातें करेंगे, वह लोग दुनिया से मुहब्बत करने वाले होंगे, तुम उन में न बैठना कि अल्लाह को उनकी कोई ज़रूरत नहीं है''

नीज़ एक हदीस का मफ़हूम है कि "आदमी जब मस्जिद में आता है और बातों में लग जाता है तो फरिश्ते उस से कहते हैं कि ऐ अल्लाह के वली! ख़ामोश हो जा। अगर वह ख़ामोश नहीं होता तो कहते हैं कि अल्लाह के दुश्मन! ख़ामोश हो जा। जब वह उस पर भी ख़ामोश नहीं होता तो कहते हैं कि खुदा की तुझ पर लानत व फटकार हो ख़ामोश हो जा। (मदख़ल स. २२७)

इन वईदों के पेशे नज़र आप हरम के अंदर

बात चीत करने से बहुत गुरेज़ करें। बल्कि सुबह सवेरे ही तय कर लें कि हम बग़ैर सोचे बात नहीं करेंगे। और इस बात का इतना एहतिमाम करें कि आप सोते वक़्त क़सम खाने के क़ाबिल हो जाऐं कि मैंने आज के दिन एक भी लायानी नहीं की। अगर वहाँ रह कर इसका एहतिमाम हो जाएगा तो फिर इंशा अल्लाह आप की ज़िंदगी ऐसी संवर जाएगी कि आप ख़ुद अपनी ज़िंदगी में बहुत नुमायाँ फर्क़ महसूस करेंगे। इस लिए कि हरम तरबियत की जगह है, अगर वहाँ इस बात पर क़ाबू न पाया गया और इसकी मश्क़ न की गई तो फिर ज़िंदगी भर इसी तरह लायानी करते फिरते हैं।

## निगाह की हिफ़ाज़त भी बहुत ज़रूरी है

इसी तरह वहाँ निगाह की हिफ़ाज़त भी बहुत ज़रूरी है। लिहाज़ा सुबह सवेरे यह तय कर लें





कि हम निगाह उठा कर नहीं चलेंगे, नीज़ अल्लाह पाक से दुआ भी माँगेंगे कि या अल्लाह! हमारी निगाहों की हिफ़ाज़त फरमा।

हज के दौरान हमारे साथी यह तय कर लेते हैं कि हम निगाह उठा कर नहीं चलेंगे, हमारी निगाह अपने क़दमों पर ही होगी। जब वह अपने कमरों ने निकल कर हरम जाते हैं तो उनकी निगाह क़दमों पर होती है। जब हरम में दाख़िले का वक़्त आता है तो मजबूरन पूरी एहतियात के साथ निगाह उठा कर दरवाज़ा देखते हैं और फिर निगाह निची कर लेते हैं। आप उन से जाकर पूछें कि अल्लाह पाक ने इस एहतिमाम के नतीजे में उनका दिल कैसे बनाया है। लिहाज़ा आप भी यह दो बातें सुबह सवेरे ही तय कर लें कि बग़ैर सोचे नहीं बोलेंगे और निगाह की बहुत हिफ़ाज़त करेंगे।

फिर सोने से पहले इस बात का हिसाब भी लगाऐं कि इन बातों पर किस क़दर अमल हुआ है।

## नफ़िली तवाफ कब बंद करें?

जो लोग हज से चंद रोज़ पहले मक्का मुकर्रमा पहुंच जाऐं उन्हें चाहिए कि वह हज से दो तीन रोज़ क़ब्ल नफ़िली तवाफ करना बंद कर दें, नफिली तवाफ में मशग़ूल होकर ख़ुद को न थकाऐं। इस लिए कि असल हज है और हज के तमाम अरकान की अदाएगी बशाशत के साथ करना मतलूब है। नफ़िली आमाल में ख़ुद को इतना थका देना कि फर्ज़ की अदाएगी में कसल और सुस्ती पैदा होने लगे और बशाशत जाती रहे, किसी तरह मुनासिब नहीं है।

नीज़ उस वक़्त नफ़िली तवाफ बंद करने में यह नीयत भी कर लें कि बहुत से हुज्जाज





बिल्कुल हज से एक दो रोज़ क़ब्ल मक्का मुकर्रमा पहुंचते हैं, उन का उमरा वग़ैरह बाक़ी होता है। चूंकि हम उमरे से फ़ारिग़ हो चुके हैं, नफ़िली तवाफ भी हम ने ख़ूब कर लिए हैं, लिहाज़ा अब हम उन आने वाले हुज्जाज को राहत पहुंचाने की ग़र्ज़ से तवाफ़ करना बंद कर रहे हैं कि अगर हम भी तवाफ़ करेंगे तो भीड़ और बढ़ जाएगी और आने वाले हुज्जाज को दुशवारी का सामना करना होगा, लिहाज़ा हम तवाफ़ नहीं करेंगे। इस नीयत के साथ तवाफ़ न करना भी आप के लिए बाइसे सवाब होगा। उस वक़्त तवाफ़ न करने का एक फायदा तो यह होगा कि आने वाले हुज्जाज को राहत होगी और दूसरा फायदा ख़ुद आप को होगा कि आप हज से क़ब्ल पूरी तरह ताज़ा दम हो जाऐंगे।

## हज के पाँच दिन

मुअल्लिम हज़रात ७ तारीख़ की रात में लोगों को मिना जाने के लिए बुला लेते हैं, उनके बुलाने पर आप ७ तारीख़ में मिना चले जाऐं। हमारे हज़रत फ़रमाया करते थे कि जब मुअल्लिम हज़रात को इस में राहत है कि वह हमें ७ तारीख़ में मिना जाने के लिए बुला लें तो हमें उनकी बात मान कर ७ तारीख़ में मिना चले जाना चाहिए।

इसी तरह हज़रत हज के पाँच दिनों से मुताअल्लिक़ फरमाया करते थे कि हज के पाँच दिनों पर हमारी इतनी गिरफ़्त हो कि उन दिनों का कोई एक लम्हा भी ज़ाया न जाने पाए, कोई कलाम ग़लत न होने पाए, कोई निगाह ग़लत न उठे, ईसार व हमदर्दी का पूरा पूरा मुज़ाहिरा हो, बस मैं दूसरे हाजियों को





पहले चढ़ा दें, ख़ुद पीछे रह जाऐं, हाँ अगर मस्तूरात साथ में हों और उनके बैठने का इंतेज़ाम करना हो तो फिर पहले चढ़ कर उनके बैठने के लिए जगह बना लें।

अगर अल्लाह पाक ने आप को हिम्मत और कुव्वत दी है तो आप बीमार और माज़ूर हुज्जाज की राहत की ख़ातिर बस की छत पर बैठ जाऐं, उन्हें राहत के साथ बस में बैठने दें, मैं आप के सामने सच कह रहा हूँ कि जितनी राहत ऊपर बैठने में होती है अंदर बैठने में नहीं होती कि इतमिनान से पैर फैला लेते हैं, लेट जाते हैं, दुआ माँग लेते हैं, लिहाज़ा अगर अल्लाह पाक ने सेहत और कुव्वत अता फरमाई है तो अगर इस सेहत व कुव्वत की बिना पर दूसरों को कुछ राहत पहुँच जाए तो यह तो हमारे लिए बहुत ही सआदत की बात

होगी। लिहाज़ा उस वक़्त ईसार व हमदर्दी का मुज़ाहिरा करें कि ख़ुद तकलीफ उठा लें लेकिन दूसरों के लिए राहत का इंतेज़ाम कर दें।

एक दफा हम लोग मिना पहुंचे तो देखा कि एक बड़े ख़ेमे में दो औरतें हैं और पूरे ख़ेमे पर क़ब्ज़ा जमाए बैठी हैं, एक तरफ उनका सामान रखा हुआ है और दूसरी तरफ ख़ुद बैठी हैं, बक़िया पूरा ख़ेमा ख़ाली है। हम ने उन से दरख़्वास्त की कि अगर आप दोनों एक किनारे हो जाऐं तो ख़ेमे के अंदर हम लोगों के लिए भी जगह हो जाएगी। कहने लगीं नहीं नहीं हम नहीं हटेंगे, हमारे साथ बहुत लोग हैं। हालांकि उनके साथ ज़्यादा लोग नहीं थे। जब वह दोनों किसी तरह हटने पर तैयार न हुईं तो हमारे साथियों ने मुझ से कहा कि शकील भाई! आप ही समझाइये। मैंने कहा





भाई! मैं यहाँ समझाने नहीं ख़ुद समझने आया हूँ, अगर उन्हें समझाने जाऊँ तो लामुहाला उन से बात करते हुए उन्हें देखना पड़ेगा जोकि मैं नहीं चाहता, फिर यह कि अगर बात करने और समझाने के बावजूद यह न मानें तो मुझे तेज़ बोलना पड़ेगा और मैं यहाँ तेज़ बोलना भी नहीं चाहता, इस लिए मैं तो उन्हें नहीं समझाऊँगा। अगर हमें ख़ेमे के अंदर जगह नहीं मिली तो हम बाहर चले जाऐंगे, लेकिन निगाह को ग़लत इस्तेमाल नहीं करेंगे और न ही किसी के साथ तेज़ कलामी करेंगे। इस तरह के वाक़ेआत वहाँ बकसरत पेश आते हैं और हर जगह आप को सब्र का दामन थामे रखना होगा वरना आप हज की रूह को नहीं पा सकेंगे। बस हर वक़्त इस बात का इस्तिहज़ार रखें कि मेरे अल्लाह की यही मर्ज़ी

है और मैं अपने अल्लाह की मर्ज़ी पर राज़ी हूँ।

याद रखें! हमें अपने ख़ेमे के अंदर जो डेढ़ फिट की जगह सोने के लिए मिलती है वही हमारी जगह है, अगर उस से ज़्यादा जगह घेर कर बैठते हैं तो यह नाजायज़ है। जो शख़्स वहाँ जाकर नाजायज़ क़ब्ज़ा करेगा तो उसका यही मिज़ाज बनेगा, फिर वह अपने मुक़ाम पर आकर इसी तरह दूसरों की ज़मीनों पर नाजाजय़ क़ब्ज़ा करेगा। इस लिए इस बात का बहुत ही ख़्याल रखें। यह हरगिज़ न करें कि लम्बे लम्बे बिस्तर बिछाऐं, ख़ूब जगह घेरें, बल्कि ख़ूब सिकुड़ कर रहें, दूसरों को जगह दें, ईसार व हमदर्दी का मुज़ाहिरा करें।

देखिए! जब आदमी ईसार व हमदर्दी का मुज़ाहिरा करता है तो अल्लाह पाक ख़ुद उसके





लिए रास्ता पैदा फरमा देता है। चुनान्चे उस वक़्त हम उन से उलझने के बजाए बाहर जाकर बैठ गए। मियाँ जब अल्लाह पाक ने बुलाया है तो जगह का इंतेज़ाम भी तो वही करेगा। हमारे साथियों ने एक चक्कर लगाया और आकर मुझ से कहा कि हम ने एक ख़ेमा देखा है, बिल्कुल रोड के पास है, बहुत कुशादा भी है और हवादार भी है और पूरा ख़ाली है। हमारे बहुत से साथी तो वहाँ चले गए, लेकिन हम पाँच छः लोग बाहर ही सो गए और निहायत आराम से सोए। देखिए! झगड़े को टालने पर और ईसार करने पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने कैसी अच्छी और कुशादा जगह का इंतेज़ाम फरमाया।

इस तरह के हालात आप के साथ भी पेश आऐंगे, उस वक़्त आप यह न कहें कि हम ने

मुअल्लिम को फ़ीस दी है, हम क्यों बाहर जाऐं? जब आप ऐसा कहेंगे तो लामुहाला झगड़ा शुरू होगा जिस से आप को बहुत बचना है। अगर कोई ऐसा वाक़िआ पेश आ जाए तो उन्हें प्यार मुहब्बत से सझमाऐं कि भाई! अगर आप लोग थोड़ा खिसक जाते तो हमें भी जगह मिल जाती, अगर आप नहीं खिसकेंगे तो हम आप से झगड़ा नहीं करेंगे, हम बाहर चले जाऐंगे, धूप में रह लेंगे, इस तरह मुहब्बत से, कहीं झगड़े वाली फ़िज़ा न बनने दें, फिर देखें किस तरह अल्लाह पाक आप के लिए राहत और आसानी का इंतेज़ाम फरमाते हैं।

अल ग़र्ज़ कहने का मंशा यह है कि जाने से क़ब्ल यह तय कर लें कि हम पूरे सफर में किसी से झगड़ा नहीं करेंगे, अगर कहीं झगड़े की फिज़ा बनेगी तो हम वहाँ से हट जाऐंगे,





सब्र करेंगे, ईसार व हमदर्दी का मुज़ाहिरा करेंगे, तकलीफ की जगह ख़ुद रह लेंगे और राहत की जगह अपने भाई को दे देंगे।

## ईसार व हमदर्दी

जिस तरह सफ़रे हज में बकसरत झगड़े के मवाक़े पेश आते हैं इसी तरह बकसरत ईसार व हमदर्दी के मवाक़े भी पेश आते हैं, लिहाज़ा जहाँ सफरे हज के सिलसिले में बहुत सी चीज़ों की तैयारियाँ करते हैं उन में एक तैयारी यह भी करें कि हज के लिए रवाना होने से क़ब्ल ही अपने अंदर ईसार व हमदर्दी का जज़्बा पैदा करें और यह तय कर लें कि हम इंशा अल्लाह पूरे सफ़र ईसार व हमदर्दी का मुज़ाहिरा करेंगे, ख़ुद तकलीफ उठा लेंगे, लेकिन दूसरों को राहत पहुंचाऐंगे, जब कभी ईसार व कुरबानी का मौक़ा आएगा हम उसके लिए तैयार रहेंगे,

हमेशा अपनी राहत पर दूसरों की राहत को मुक़द्दम रखेंगे। जब ईसार व कुरबानी के साथ आप अपना यह सफ़र मुकम्मल कर लेंगे तो फिर ईसार व कुरबानी के साथ जीना आप का मिजाज़ बन जाएगा और फिर इंशा अल्लाह ता ज़िंदगी यह मिज़ाज बना रहेगा।

दोस्तो! ज़रा ग़ौर करें कि हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी २३ साला ज़िंदगी में सहाबाए किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की कैसी तरबियत फरमाई थी कि उन्होंने ईसार व हमदर्दी का वह आला नमूना दिखलाया कि रहती दुनिया तक कोई उसकी मिसाल पेश नहीं कर सकता। चुनान्चे आप देखेंगे कि जंग के मैदान में ज़ख्मी होकर प्यासे पड़े हैं लेकिन पानी अपने साथी की तरफ बढ़ा रहे हैं कि





पहले उन्हें पिलाऊँ, यानी बज़बाने हाल यह कह रहे हैं कि हम जान तो दे देंगे लेकिन अपने भाई से पहले पानी नहीं पिऐंगे।

दोस्तो! हम उन्हीं के नाम लेवा और उन्हीं की मुहब्बत का दम भरने वाले हैं लेकिन वहाँ पहुंच कर हम उन सब वाक़ेआत को फरामोश कर बैठते हैं और लड़ाई झगड़े पर उतर आते हैं, अपनी ताक़त दिखलाते हैं। आप हरगिज़ ऐसा न करें, बल्कि दूसरे बहुत से अच्छे अख़्लाक़ अपनाने के साथ साथ बतौर ख़ास इस वस्फ को भी अपनाऐं और इस बात का बहुत ख़्याल रखें कि पूरे सफरे हज में ईसार व हमदर्दी का मुज़ाहिरा हो।

दोस्तो! यह आप को सिर्फ बोलना नहीं है, बल्कि अमली तौर पर करके दिखलाना है। अगर आप हज के पाँच दिनों में ख़ुद तकलीफ

बरदाश्त करके दूसरों की राहत का ख़्याल रखेंगे तो अल्लाह पाक आप के लिए पूरी ज़िंदगी में राहत व आराम का फैसला फरमा देगा।

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैह ने लिखा है कि इस सफर में आदमी जो कुछ ख़र्च करे उसको निहायत ख़ुशदिली से करे और जो नुक़सान जानी या माली पहुंचे उसको तय्यबे ख़ातिर से (ख़ुशदिली से) बरदाश्त करे कि यह उसके हज के क़बूल होने की अलामत है। मिना, अरफात और मुज़दलिफा यही वह जगहें हैं जहाँ जिस्मानी मशक़्क़त बार बार पेश आती हैं, आप हर जगह सब्र का मुज़ाहिरा करें और सब्र करके अपने हज को मक़बूल बनाऐं। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शादे ग्रामी है कि आप ने हज़रत आईशा





सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से फरमाया कि आईशा! तेरे उमरे का सवाब बक़दर तेरी मशक़्क़त के है।

## मिना, अरफ़ात और मुज़दलिफ़ा में क़याम

आप ७ तारीख़ की रात में या ८ तारीख़ की सुबह में मिना पहुंचेंगे, उस रोज़ आप को मिना में रहना है, दिन भर और रात भर रह कर ९ तारीख़ की सुबह फज्र की नमाज़ पढ़ने के बाद आप को अरफात जाना है। अरफ़ात में सिवाए इबादत के और कोई काम नहीं होता, लिहाज़ा आप वहाँ ख़ास तौर से दुआ का ख़ूब एहतिमाम करें कि उस रोज़ अरफ़ात के मैदान में अल्लाह की रहमत बरस्ती रहती है, हम चूंकि मुहताज और फ़क़ीर बंदे हैं, लिहाज़ा जितना माँग सकते हैं और जो कुछ माँग सकते हैं सब माँग लें। यहाँ भी हर जगह झगड़े की

फ़िज़ा बनेगी, पानी लाने में, इस्तिंजा करने में, खाना लेने में, लेकिन हर जगह आप को बहुत चौकन्ना रहना है और निहायत सब्र व तहम्मुल का मुज़ाहिरा करना है।

आप अरफात के दिन नमाज़ें अपने ख़ेमे ही में पढ़ें। बाज़ लोग मस्जिद की फ़ज़ीलत पाने के शौक़ में नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद चले जाते हैं, लेकिन वापसी में ख़ेमा भूल जाते हैं और साथियों से बिछड़ जाते हैं जिस की बिना पर उन्हें बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता है।

लेकिन अगर आप को मस्जिद ही जाना है तो फिर इस बात का ख़्याल रखें कि वहाँ आप को इमाम के पीछे ज़ोहर और अस्र की नमाज़ एक साथ पढ़ना होगा और अगर आप अपने ख़ेमे में नमाज़ पढ़ते हैं तो फिर आप को ज़ोहर





की नमाज़ ज़ोहर के वक़्त में और अस्र की नमाज़ अस्र के वक़्त में पढ़ना है।

सूरज गुरूब होने के बाद आप को अरफ़ात के मैदान से निकलना है, लेकिन यह ख़्याल रहे कि आप मग़्रिब की नमाज़ अरफ़ात में नहीं पढ़ेंगे, बल्कि यहाँ से निकल कर सीधे मुज़दलिफा पहुंचेंगे और मग़्रिब और ईशा की नमाज़ें मुज़दलिफ़ा पहुंच कर एक अज़ान और एक इक़ामत के साथ ईशा के वक़्त में पढ़ेंगे।

देखिए! यहाँ भी एक बात ख़िलाफे अक़्ल पेश आती है। वह यह कि अरफात के मैदान में मग़्रिब का वक़्त हो चुका है, लेकिन यहाँ नमाज़ पढ़ने से रोक दिया गया और यह कहा गया कि सीधे मुज़दलिफा जाओ और वहाँ पहुंच कर मग़्रिब और ईशा की नमाज़ें एक साथ ईशा के वक़्त में पढ़ो। जैसा कि मैंने पहले

अर्ज़ किया था कि इस तरह के अहकामात के ज़रिये अल्लाह पाक यही समझाना चाहते हैं कि यहाँ आकर तुम हमारी मानो, अपनी न चलाओ, हमारा हुक्म तुम्हें समझ में आए या न आए, लेकिन तुम वही करो जो हम कहें, कहीं भी अपनी अक़्ल न दौड़ाओ।

अगर आप अरफात से निकल कर मग़्रिब के वक़्त ही मुज़दलिफा पहुंच जाऐं जब भी आप मग़्रिब की नमाज़ न पढ़ें बल्कि मग़्रिब का वक़्त गुज़ार कर ईशा के वक़्त में मग़्रिब की नमाज़ पढ़ें, नीज़ मग़्रिब पढ़ते हुए क़ज़ा की नीयत न करें बल्कि अदा ही की नीयत करें, वक़ूफे मुज़दलिफा का वक़्त ज़िल हिज्जा की १० तारीख़ को तुलूए सुबहे सादिक़ और तुलूए शम्स के दरमियान का वक़्त है, लिहाज़ा आप फज्र की नमाज़ मुज़दलिफा में पढ़ कर सूरज





तुलू होने के बाद मिना के लिए रवाना हों।

मिना पहुंचने के बाद उस रोज़ आप को सिर्फ बड़े शैतान को कंकरी मारना है। आम तौर पर लोग यह जानते हैं कि मिना पहुंचने के बाद ज़वाल से पहले कंकरी मारना अफज़ल है, लिहाज़ा मिना पहुंचने के बाद थके माँदे सीधे शैतान को कंकरी मारने पहुंच जाते हैं, हालांकि उस वक़्त जमरात पर बहुत हुजूम रहता है, कंकरी मारने में बड़ी दुश्वारी होती है, हुज्जाजे किराम दबते हैं, मरते हैं, हर साल इस तरह की ख़बरें सुनने में आती है। उसकी वजह यही है कि अफ़ज़लियत के हुसूल में उस वक़्त बहुत से हुज्जाज कंकरी मारने पहुंच जाते हैं जिस की वजह से बहुत हुजूम हो जाता है। लेकिन आप उस वक़्त कंकरी मारने न जाऐं बल्कि मिना पहुंचने के बाद सीधे अपने ख़ेमे में

चले जाऐं और ख़ूब आराम करें, इतमिनान से ज़ोहर की नमाज़ पढ़ें, खाना खाऐं और अस्र तक अपने ख़ेमे ही में रहें। पहले उलमा कंकरी मारने में ताख़ीर को मकरूह बताया करते थे लेकिन उलमा ने हालात को देखते हुए कंकरी में ताख़ीर को मकरूह नहीं लिखा है और हम ने अपने बड़ों को ऐसा करते देखा भी है। लिहाज़ा आप अस्र तक अपने ख़ेमे में रहें और अस्र पढ़ने के बाद कंकरी मारने जाऐं।

हमारा मामूल यह है कि हम गुरूब से क़ब्ल कंकरी मारने की जगह पहुंच जाते हैं और अपना मुसल्ला भी साथ ले जाते हैं, अगर उस वक़्त भी भीड़ देखते हैं तो कंकरी नहीं मारते, बल्कि इंतेज़ार करते हैं और मग़रिब पढ़ने के बाद कंकरी मारते हैं, लेकिन अकसर ऐसा देखा





गया है कि मग़रिब की अज़ान पर कंकरी मारने वाले लोग रूक जाते हैं कि अज़ान हो रही है, अब नमाज़ के बाद कंकरी मारेंगे, जूंही लोग छुटते हैं हम फौरन कंकरी मार कर फारिग़ हो जाते हैं।

यह भी देखा गया है कि बहुत से लोग गुस्से के अंदर इस क़दर तेज़ कंकरी मारते हैं कि कंकरी टकरा कर वापस आ जाती है। याद रखें! जो कंकरी टकरा कर वापस आ जाएगी वह शुमार नहीं होगी, लिहाज़ा इस बात का ख़्याल रखें कि कंकरी इतनी तेज़ न मारें कि टकरा कर वापस आजाऐ, बल्कि इस तरह मारें कि कंकरी सुतून की जड़ में जा गिरे।

## एक तजरबा

चूंकि कंकरी मारते वक़्त उमूमन बहुत भीड़ होती है और हुजूम इस क़दर होता है कि

मजमा आता है और हटता है। इस बिना पर लोग एक दम उजलत का ज़ेहन बना कर जाते हैं कि जल्दी जाऐंगे, जल्दी घुसेंगे और जल्दी से कंकरी मार कर चले आऐंगे और आप जानते हैं कि जल्दी में काम ग़लत हो जाता है। इस लिए आप कंकरी मारने में उजलत का मुज़ाहिरा न करें बल्कि उसका आसान और बेहतर तरीक़ा यह है कि आहिस्ता आहिस्ता अंदर घुसते चले जाऐं और बिल्कुल आगे पहुंच कर क़रीब से इतमिनान के साथ कंकरी मारें। हम हमेशा इसी तरह कंकरी मारते हैं और मस्तूरात साथ होती हैं तो उन्हें भी इसी तरह क़रीब तक ले जाते हैं, हमारी मस्तूरात कहती हैं कि हम ने बहुत इतमिनान से कंकरी मारी हमें कंकरी मारते हुए कोई तकलीफ नहीं हुई।





## १० ज़िल हिज्जा के तीन काम

उस रोज़ तीन काम करने होते हैं।

१. कंकरी मारना। २. कुरबानी करना।

३. हल्क़ कराना।

अहनाफ के नज़दीक इन तीनों कामों में तरतीब वाजिब है कि पहले कंकरी मारी जाए, फिर क़ुरबानी की जाए और फिर हलक़ कराया जाए।

आज कल बहुत से टूर वाले भी कुरबानी का इंतेज़ाम करने लगे हैं। आप चाहें तो अपने टूर वालों के साथ चले जाऐं और अपने सामने अपनी कुरबानी करा लें और अगर यह मुनासिब न समझें तो फिर सीधे "मदरसा सौलतिया" पहुंच कर वहीं अपने पैसा जमा करा दें फिर वहाँ के ज़िम्मेदारान हल्क़ का जो वक़्त बतलाऐं उस वक़्त हल्क़ करा लें। वहाँ

के मुन्तज़मीन बहुत मुहतात हैं। बतलाए गए वक़्त से पहले आप की कुरबानी कर देते हैं। इस लिए "मदरसा सौलतिया" में अपनी कुरबानी की रक़म जमा करा दें। अलबत्ता जहाँ भी कुरबानी की रक़म दें वक़्त की तअय्युन में बहुत ऐहतियात रखें इस लिए कि हम अहनाफ के यहाँ मज़कूरा तीनों कामों में तरतीब वाजिब है।

## एक अहम बात

गुमशुदा साथियों की तलाश और कुरबानी हो जाने की इत्तिला जैसे मक़ासिद के लिए मोबाइल फोन भी उस वक़्त के हालात में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की एक बड़ी नेमत है। अलबत्ता उसका बेजा इस्तेमाल कि उसके ज़रिए हर वक़्त वतन वालों से राब्ता बनाए रखें, मुनासिब नहीं है। इस लिए कि अल्लाह पाक





ने यहाँ आप को इस लिए बुलाया था कि यहाँ के माहौल में रख कर आप अपना दिल बनाते, वरना आप के वतन से दूर बुलवाने की क्या ज़रूरत थी।

रहा मस्अला घर वालों के अहवाल मालूम करने का तो मैं उस से मना नहीं करता, आप कभी कभार फोन करके घर वालों की ख़ैरियत भी मालूम कर लें लेकिन हर दम फोन करके अहवाल मालूम करने की फिक्र में न रहें। इस लिए कि ज़िंदगी में उतार चढ़ाव तो आते ही रहते हैं, जब बार बार वतन फ़ोन करेंगे तो कभी बीवी के बीमार होने की, कभी बच्चे के बीमार होने की तो कभी किसी रिश्तेदार के बीमार होने की इत्तिला मिलती रहेगी जिस की वजह से हर वक़्त आप का दिल घर में अटका रहेगा, आप हरम में हों और आप का दिल

वतन में हो, यह बात कुछ अच्छी मालूम नहीं होती।

एक मर्तबा हज़रत हाजी इम्ददुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की रह० के किसी मुरीद ने आप को ख़त लिखा कि हज़रत! आप के पास हरम में आकर रहने को दिल चाहता है। फ़रमाया तुम अपने वतन में रहो और तुम्हारा दिल यहाँ रहे यह बेहतर है इस बात से कि तुम यहाँ रहो और तुम्हारा दिल अपने वतन में रहे।

## मोबाइल की रिंग टोन बदल लें

हज पर जाने से क़ब्ल एक ज़रूरी काम यह भी करें, बल्कि अभी कर लें कि अपने मोबाइल फोन की रिंग टोन (घंटी) बिल्कुल सादा तर्ज़ की कर लें। अगर ख़ुद न जानते हों तो किसी जानने वाले से करवा लें और अगर आप के





मोबाइल में कोई सादा रिंग टोन ही न हो तो फिर किसी कम्प्यूटर के जानने वाले के ज़रिए सादा रिंग टोन डाउन लोड करा लें। इस लिए कि म्यूज़िक सुनना और सुनाना हराम है और इस मुबारक सफ़र में उसकी हुरमत तो और भी ज़्यादा बढ़ जाती हैं आज कल तवाफ़ के दौरान और रौज़ए अक़दस के सामने फ़ोन पर बेहूदा घंटियाँ सुनाई देती हैं, फिल्मी गाने सुनाई देते हैं, ज़रा ग़ौर करें कि जो नबी गाने बाजे और म्यूज़िक को ख़त्म करने आए थे उन ही के नाम लेवा उम्मती शैतान के इस पैग़ाम को लेकर उनके शहर में घूमते फ़िरते हैं और हद तो यह है कि उन के सामने खड़े होकर उन्हें सुनाते हैं, आख़िर यह कितनी शर्म की बात है। हम ज़रा सोचें तो सही कि हमारे इस अमल से आप की रूहे मुबारक को किस क़द्र

तकलीफ पहुंचती होगी। इस लिए बहुत सी वुजूहात के पेशे नज़र बेहतर तो यही है कि मोबाईल फोन को मस्जिदे हराम और मस्जिदे नबवी के अंदर उमूमन बंद ही रखें, जब ज़रूरत हुई आन करके बात कर ली और फिर बंद कर दिया।

## तवाफे ज़ियारत

मज़कूरा आमाल से फारिग़ होने के बाद अब आप को तवाफे ज़ियारत करना है। तवाफ़े ज़ियारत में कोई तरतीब नहीं है, आप चाहें तो कंकरी मारने से पहले तवाफ कर लें या कंकरी मारने के बाद करें। अलबत्ता ज़ुल हिज्जा की १०, ११, १२ इन तीन तारीख़ों में तवाफ़े ज़ियारत कर लें।

तवाफ़ के लिए पाक होना और बावुज़ू होना ज़रूरी है, लिहाज़ा जिन हाजियों के साथ





उनकी मस्तूरात हैं अगर उन्हें अय्याम आ गए तो फिर वह तवाफ़े ज़ियारत नहीं कर सकतीं। पस जब अय्याम के दिन क़रीब आ जाऐं कि अब तीन चार दिन में अय्याम शुरू होने वाले हैं तो अब वह उस पर मुत्मईन न रहें कि अभी तो तीन चार रोज़ बाक़ी हैं, लिहाज़ा तवाफ़े ज़ियारत बाद में कर लेंगे। इस लिए कि हालात और मौसम की तबदीली की वजह से अय्याम पहले भी आ सकते हैं। ऐसी औरतों के लिए बेहतर यही है कि वह मुज़दलिफ़ा से या मिना से निकल कर सीधे हरम चले जाऐं और तवाफे ज़ियारत से फ़ारिग़ हो लें।

यह बात भी जान लें कि तवाफ़ के लिए पाक होना और बावुज़ू होना दोनों ज़रूरी हैं लेकिन सई के लिए यह दोनों चीज़ें ज़रूरी नहीं हैं, ताहम मुस्तहब ज़रूर हैं। लिहाज़ा सई को

मुअख़्ख़र करके बाद में भी किया जा सकता है। अलबत्ता जिन मस्तूरात के साथ यह मुआमला नहीं है उनके लिए बेहतर यह है कि वह उस दिन तवाफे ज़ियारत न करें, इसी में उनके लिए राहत है, बल्कि अगले दिन यानी ११ ज़ुल हिज्जा की सुबह में जल्दी चले जाऐं, तहज्जुद के वक़्त चले जाऐं या फिर फज्र पढ़ कर चले जाऐं, लेकिन जल्दी निकलें ताकि धूप से महफ़ूज़ रहें। लिहाज़ा जिन हाजियों के साथ मस्तूरात हैं वह इन बातों का बहुत ख़्याल रखें।

तवाफ़े ज़ियारत से फ़ारिग़ होने के बाद वापस मिना जाना ज़रूरी नहीं है बल्कि तवाफ़े ज़ियारत से फ़ारिग़ होकर आप अपने कमरे पर जाकर आराम करें, खाना खा लें, वहीं अस्र, मग़रिब और ईशा की नमाज़ें पढ़ लें यह सब





जायज़ है। ईशा की नमाज़ और खाने वग़ैरह से फ़ारिग़ होकर मिना वापस चले जाऐं। यह मैं इस लिए कह रहा हूँ कि आप को मिना की बनिस्बत मक्का मुकर्रमा में अपने कमरे पर ज़्यादा राहत मिलेगी, मिना में इस्तिंजे के लिए क़तार में खड़ा रहना होगा, वुज़ू के लिए क़तार में खड़ा रहना होगा, लिहाज़ा बेहतर यही है कि उस रोज़ दिन में आप मक्का मुकर्रमा में अपने कमरे पर रह कर आराम कर लें और रात में मिना वापस हो जाऐं।

जब आप मिना जाऐं तो अपने ख़ेमे पर जाने के बजाए सीधे कंकरी मारने चले जाऐं, इस में फायदा यह होगा कि अगर आप तवाफ़े ज़ियारत से फ़ारिग़ होकर वापस उसी वक़्त ख़ेमे में चले जाऐंगे तो आप को कंकरियाँ मारने के लिए दोबारा आना और फिर वापस

जाना पड़ेगा जिस में आप को बड़ी ज़हमत होगी। उस ज़हमत से बचने के लिए बेहतर यही है कि मक्का से मेना वापस होते वक़्त रास्ते में कंकरियाँ मारने के लिए आने जाने का चक्कर बच जाएगा। तवाफ़े ज़ियारत के लिए मक्का चले गए और वापसी में कंकरी मारते हुए चले आए, इस तरह आप दूसरे रोज़ की कंकरी से भी फ़ारिग़ हो जाऐंगे, इस तरह करने में आप के लिए ज़्यादा राहत है।

## यह मस्अला भी जान लें

याद रखें! जिन औरतों को अय्याम क़रीब होने का इल्म था, उसके बावजूद उन्होंने सुस्ती और काहिली के सबब तवाफ़े ज़ियारत न किया तो उनके ज़िम्मे दम वाजिब होगा। मुअल्लिमुल हुज्जाज में लिखा है कि जो औरत यह जानती





है कि अनक़रीब उसे हैज़ आने वाला है और अभी हैज़ आने में इतना वक़्त बाक़ी है कि वह पूरा तवाफ या चार फेरे कर सकती है लेकिन नहीं किया और हैज़ आ गया, फिर अय्यामे नहर गुज़रने के बाद पाक हुई तो उस पर दम वाजिब होगा और अगर चार फेरे नहीं कर सकती तो कुछ वाजिब न होगा। अलबत्ता मर्दों के लिए मज़कूरा दिनों में तवाफ़े ज़ियारत करना शर्त है, न करेंगे तो दम देना पड़ेगा। (मुअल्लिमुल हुज्जाज, मकतबा सअदी बुकडिपो, स.१७७)

## चंद राहत रसाँ मशवरे

१२ तारीख़ की कंकरी में यह होता है कि लोग पहले से वापसी की तैयारी कर लेते हैं कि ज़वाल होते ही कंकरी मारेंगे और मक्का पहुंच जाऐंगे, इस लिए वह लोग ज़वाल से क़ब्ल

सामान समेत निकल जाते हैं, हालंकि उस वक़्त वहाँ बहुत हुजूम होता है और उसी हुजूम में अमवात के वाक़ेआत बकसरत पेश आते हैं। आप ऐसा न करें, बल्कि आप अपनी साबिक़ा तरतीब के मुताबिक़ अस्र तक अपने ख़ेमे ही में अराम करें और अस्र के बाद अपना सामान लेकर कंकरी मारते हुए वहीं से मक्का चले जाऐं कि उस वक़्त भीड़ बहुत हद तक छट जाती है और आप इतमिनान के साथ कंकरी मार सकते हैं।

आम तौर से लोग यह समझते हैं कि अगर उन्होंने १२ तारीख़ की कंकरी ग़ुरूब के बाद मारी तो उनहें १३ तारीख़ को भी मिना में रूक कर कंकरी मारना पड़ेगा, जबकि ऐसा नहीं है। अगर आपने १२ तारीख़ की कंकरी ग़ुरूब के बाद मारी या ईशा के बाद मारी तब





भी आप के ज़िम्मे १३ तारीख़ का क़याम ज़रूरी नहीं है, हाँ अलबत्ता अगर सुबहे सादिक़ हो गई तो फिर आप को ज़वाल तक रूकना पड़ेगा और १३ तारीख़ को भी कंकरी मारना होगा। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स आप से कहे कि आप ने १२ तारीख़ की कंकरी गुरूब के बाद मारी है, लिहाज़ा अब आप १३ तारीख़ को भी मिना में रूकें और कंकरी मारें तो आप उनकी बातों में न आऐं।

नीज़ एक काम और कर लें जिस से इंशा अल्लाह आप को बड़ी राहत होगी। वह यह कि आप ११ तारीख़ को तवाफे ज़ियारत करने जाऐं तो अपना ज़ायद सामान अपने साथ मक्का मुकर्रमा लेते जाऐं, इस लिए कि जब आप मिना आते हैं तो अपनी ज़रूरत का बहुत सामान साथ लाते हैं, लिहाज़ा जब आप ११ तारीख़ को

तवाफ़े ज़ियारत के लिए मक्का मुकर्रमा जाऐं तो अपना ज़ायद सामान लेते जाऐं ताकि १२ तारीख़ को वापसी के मौक़े पर आप पर ज़्यादा सामान का बोझ न रहे बल्कि हल्का फुल्का सामान साथ हो जिसे आप बआसानी उठा सकें और कंकरी मारते हुए मक्का मोकर्रमा वापस चले आऐं। इस तरह करने से आप आख़िरी दिन समान लाद कर लाने से बच जाऐंगे।

## एक ज़रूरी इंतिबाह

नीज़ एक बात यह भी जान लें कि जो हुज्जाज सेहतमंद हैं, चलते फिरते हैं, उन्हें अपनी कंकरी ख़ुद मारना चाहिए, उनका यह उज़्र क़ाबिले क़ूबूल नहीं है कि हमें भीड़ से वहशत होती है, घबराहट होती है, हाँ अलबत्ता जो हुज्जाज वाक़ई माज़ूर हैं, वह अपना मस्अला किसी मुफ्ती साहब से मालूम कर लें





उन्हें कंकरी मारने के लिए किसी को अपना वकील बनाना जायज़ है या नहीं।

## मदीने पाक की फ़ज़ीलत

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ऐ अल्लाह! मदीना को हमारा महबूब बना दे जैसे हम मक्का से मुहब्बत करते थे, बल्कि उस से भी ज़्यादा। (मिश्कात)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ऐ अल्लाह! इबराहीम अलैहिस्सलाम ने आप से मक्का के लिए दुआ की थी, मैं आप से मदीने के लिए दुआ करता हूँ, वह भी और इतनी ही और भी। (मिश्कात)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत है कि हज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

जब सफ़र से तशरीफ लाते और मदीना की वादियों को देखते तो मदीने की मुहब्बत की वजह से सवारी तेज़ कर देते। (मिश्कात)

हज़रत यहिया बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: रूए ज़मीन में कोई जगह ऐसी नहीं जहाँ मुझ को अपनी क़ब्र होना मदीने से ज़्यादा पसंदीदा हो, यह बात आप ने तीन मर्तबा इर्शाद फरमाई। (मिश्कात)

## मदीने पाक की हाज़िरी

मदीना जाऊँ फिर आऊँ मदीना फिर जाऊँ
तमाम उम्र इसी में तमाम हो जाए

दिखा दे या इलाही! वह मदीना कैसी बस्ती है।
जहाँ पर रात दिन मौला तेरी रहमत बरस्ती है।





याद रखें! मदीने पाक की हाज़िरी इंतेहाई सआदत की बात है और बहुत सी बरकात के हुसूल का ज़रिया है। यहाँ आप का मसाइल से तो साबेक़ा नहीं पड़ेगा, अलबत्ता मदीने के क़याम के ताअल्लुक़ से चंद बातों का ख़्याल रखना बहुत ज़रूरी है।

मदीने पाक पहुंच कर वहाँ बहुत अदब व ऐहतिराम के साथ रहें, वहाँ की बेअदबी, महरूमी का सबब होती है, चुनान्चे बाज़ अकाबिर के मुताअल्लिक़ मन्कूल है कि उन्होंने वहाँ इस तरह हाज़िरी दी है कि तीन तीन दिन, चार चार दिन और पाँच पाँच दिन तक न कुछ खाया न पेशाब पाख़ाना किया। हम मदीने के ऐहतिराम में इतना नहीं कर सकते तो कम अज़ कम इतना ही कर लें कि वहाँ अदब के साथ रहें, अपनी जानिब से कोई

बेअदबी न होने दें।

## हाज़िरी से पहले तौबा व इस्तिग़फ़ार करें

उलमा ने लिखा है कि मदीने पाक जाते हुए रास्ते में कसरत से दुरूद शरीफ पढ़ने का ऐहतिमाम करें उन ही उलमा की बरकत से और उन्ही के सदक़े में यह बात समझ में आती है कि जब आप मदीने पाक का सफ़र शुरू करें तो बस में बैठ कर कम अज़ कम तीन सौ मर्तबा सच्चे दिल से तौबा व इस्तिग़फ़ार करें, इस लिए कि हमारी ज़बान गंदी, हमारी निगाहें गंदी, हमारा दिल गंदा बल्कि हमारा सारा वुजूद गंदा, लिहाज़ा सब से पहले तीन सौ मर्तबा दिल लगा कर तौबा व इस्तिग़फार करके ख़ुद को गुनाहों से पाक साफ करें, बल्कि गुनाहों को सोच सोच कर तौबा इस्तिग़फार करें और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से





कहें कि या अल्लाह! आप जानते हैं कि हम ने यह सारी नाफ़रमानियाँ की हैं, आप ने हमें अरफात में बुला कर हमारे सब गुनाहों को माफ कर दिया है, लेकिन अरफ़ात से वापसी के बाद हम से जो गुनाह हुए या मदीने पाक जाते हुए बेख़्याली में जो गुनाह हम से हो जाऐं, आप उन तमाम गुनाहों को भी माफ फरमा दीजिए और मदीने पाक पहुंचने से क़ब्ल हमें गुनाहों से ऐसा पाक साफ कर दीजिए कि उन गुनाहों की कोई नुहूसत हमारे क़ल्ब और हमारे वुजूद पर बाक़ी न रहे।

वैसे भी बस में बहुत यक्सूई रहती है, कोई काम नहीं होता, लिहाज़ा पूरे ध्यान और तवज्जुह के साथ अपने गुनाहों को सोच सोच कर अल्लाह पाक से बातें करते हुए और अपने गुनाहों की माफ़ी मांगते हुए मदीने पाक का सफ़र करें, इस्तिग़फ़ार के बाद फिर दुरूद

शरीफ़ की कसरत करें।

## हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हस्सास तबीयत

हदीस पाक का महफ़ूम है कि "एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ का सलाम फेर कर इर्शाद फ़रमाया: लोग अच्छी तरह वुज़ू करके नहीं आते जिस की वजह से नमाज़ में ख़लल वाक़े होता है'' यह तबीयत इतनी हस्सास हो कि अच्छी तरह से वुज़ू न होने पर उनकी नमाज़ में ख़लल आ जाता हो, तो हम ख़ुद सोचें कि अगर हम उनके पास इतने गुनाहों के साथ जाऐंगे तो उन्हें किस क़दर तकलीफ होगी, इस लिए अल्लाह पाक के हुज़ूर सच्चे दिल से तौबा व इस्तिग़फ़ार करें ताकि हमारे गुनाहों का कोई असर हमारे वुजूद





पर बाक़ी न रहे।

## अल्लाह पाक की याद का आसान मुराक़बा

दोस्तो! एक काम और कर लें और उसकी मश्क़ जाने से क़ब्ल अपने वतन में रहते हुए शुरू कर दें। वह यह कि हम सब जानते हैं कि अल्लाह पाक हमें देख रहे हैं और हमारे साथ हैं, लेकिन हमें इस का इस्तिहज़ार नहीं रहता। लिहाज़ा थोड़े थोड़े वक़्फे से यह तसव्वुर करें अल्लाह पाक मुझे देख रहे हैं, अल्लाह पाक मेरे साथ हैं, आप को फलाइट में, बस में, हरम में, इस के अलावा और भी बहुत से मवाक़े पर तन्हाई मिलेगी, वहाँ आप को कुछ पढ़े बग़ैर सिर्फ़ यह तसव्वुर करना है कि अल्लाह पाक मुझे देख रहे हैं, मेरे साथ हैं, अल्लाह की रहमत आ रही है, मेरे दिल पर

बारिश की तरह बरस रही है, मेरे दिल को गुनाहों से पाक साफ़ कर रही है, इस तसव्वुर और मुराक़बे से इंशा अल्लाह आप के दिल की एक कैफ़ियत बनेगी, अगर हो सके तो रोज़ाना एक वक़्त मुक़र्रर करके थोड़ी देर के लिए इस तसव्वुर के साथ बैठ जाऐं, उसकी मश्क़ अभी से शुरू कर दें, यह थोड़ी देर का मुराक़बा इंशा अल्लाह हमेशा के लिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की याद दिल में बैठाने का ज़रिया बन जाएगा।

## अल्लाह पाक से किस तरह बातें करें?

यह तो मुराक़बे की बात थी कि आप यह तसव्वुर और मुराक़बा करें कि अल्लाह पाक मुझे देख रहे हैं और मेरे साथ हैं। इस के अलावा एक काम यह भी करें कि अभी से





अल्लाह पाक से बातें करना शुरू कर दें, उसकी आदत डालें, आप सोच रहे होंगे कि अल्लाह से किस तरह बात की जाए, तो मैं आप को उसका तरीक़ा बताता हूँ कि आप हरम में जाकर बैठ जाऐं और अल्लाह से बात करना शुरू करें कि या अल्लाह! मैं आप के घर आया हूँ, आया नहीं हूँ बल्कि आप ने मुझे बुलाया है। या अल्लाह ! आप मुझे देख रहे हैं, मेरा दिल भी देख रहे हैं कि इस दिल में सब कुछ है मगर आप नहीं हैं। या अल्लाह! मैं आप के दरबार में आया हूँ, इस उम्मीद के साथ कि आप बड़े सख़ी हैं, बड़े करीम हैं, बड़े दाता हैं, आप से ज़्यादा अता करने वाला कोई नहीं है, या अल्लाह! आप ने देख लिया कि मैंने इस दिल में मख़्लूक़ को बसा रखा है, ढेर सारी गंदगियों को भर रखा है। या अल्लाह! मैं

जानता हूँ कि आप पाक हैं और पाक जगह ही रहते हैं, इतनी गंदगियों के होते आप मेरे दिल में नहीं आ सकते, मैं ऐसा नहीं हूँ कि आप मुझे मिल जाऐं, लेकिन या अल्लाह! मैं आप को पाने की ख़्वाहिश रखता हूँ, आप को पाना चाहता हूँ, आप का हो जाना चाहता हूँ, या अल्लाह! मैं इस लायक़ कहाँ था कि आप के घर आता, यह तो आप ने अपने करम से मुझे अपने दरबार में बुलाया है। या अल्लाह! जब आप ने अपने करम से बुला ही लिया है तो अब मज़ीद करम यह कर दीजिए कि आप मुझे मिल जाए, मुझे गुनाहों से पाक साफ़ कर दीजिए, मेरे दिल पर लगे गुनाहों के धब्बों को धो दीजिए, मेरे दिल को नूरानी बना दीजिए और इस दिल को अपना मस्कन बना लीजिए, मेरे दिल में आ जाइए, बस जाइए, समा जाइए,



हज और उमरा तजरबात की रोशनी में

या अल्लाह आप मुझे अपनी पसंद का बना लीजिए, या अल्लाह! मैं यहाँ आप से आप को माँगने आया हूँ, आप को पाने आया हूँ, आप मुझे मिल जाइए, अपना बना लीजिए और फिर सारी ज़िंदगी अपना ही बन कर जीने की तौफीक़ दीजिए।

इस तरह आप अपनी ज़बान में जिस तरह भी चाहें अल्लाह पाक से बात करें और उन से सवाल करें, जब बात करना शुरू करें तो ख़ुद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त आप की रहबरी करेंगे और आप को बात का ढंग सिखाऐंगे। जब भी बात शुरू करें तो सब से पहले अपने गुनाहों का ऐतेराफ़ करें, सच्चे दिल से माफी मांगें फिर अल्लाह पाक की ख़ूब तारीफ़ करें, फिर हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ें।

यह भी जान लें कि अल्लाह पाक से बात करने के लिए हाथ उठाना ज़रूरी नहीं है, आप बग़ैर हाथ उठाए भी अल्लाह पाक से बात कर सकते हैं, माँग सकते हैं। इसी तरह जब मदीने पाक जाना हो तो रास्ते में इसी तसव्वुर के साथ कुछ देर तक अल्लाह पाक से बातें करते जाऐं, फिर उसके बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरू कर दें।

## मदीना पाक जाने से पहले सीरते मुबारका ज़रूर पढ़ें

दोस्तो! जाने से क़ब्ल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरते मुबारका ज़रूर पढ़ कर जाऐं। क्योंकि अब तक हम जिस तरह दुरूदे पाक पढ़ा करते थे। हमें वहाँ इस तरह दुरूद नहीं पढ़ना है बल्कि इस तसव्वुर के साथ दुरूद पाक पढ़ना है कि हम अपना यह दुरूद





हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुना रहे हैं।

नीज़ दुरूद पाक पढ़ते हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के हालात व वाक़ेआत पर एक तसव्वुराती निगाह डालते जाऐं, मस्लन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया में तशरीफ लाए तो यतीम थे,

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

यतीम और ग़रीब समझ कर किसी दूध पिलाने वाली ने आप को हाथ नहीं लगाया, सब मुंह फेर कर चली गईं,

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

दाई हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा आईं, उन्हें कोई न मिला तो फिर कैसे ले गईं,? उसे ले गईं जिसे सब छोड़ गए,

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

एक शीरख़्वार बच्चा माँ की गोद छोड़ कर एक अजनबी औरत के साथ जा रहा है,

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

फिर उस वक़्त के हालात सोचें कि दुबली पतली ऊँटनी थी जिस से चला भी नहीं जाता था, उसके थन भी सूख चुके थे, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सवार होते ही जैसे उसके बदन में कुव्वत आ गई, वह तेज़ रफ्तार दौड़ने लगी, उसके थन दूध से भर गए।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

फिर हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हु और आप के घर वालों का सैराब होना, फिर दाई हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा का आप को लेकर मक्का वापस आना, फिर ले जाना, और शक़्के सद का वाक़ेआ पेश आना जिस से दाई हलीमा





का घबराना और फिर वापस मक्का मुकर्ररमा लाना। यह सब वाक़ेआत सोचते जाऐं और दुरूदे पाक पढ़ते जाऐं।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

फिर छः साल की उम्र में माँ का भी साया छिन गया:

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

ज़रा सोचें कि उस वक़्त हज़रत नबिए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ६ साल की उम्र में मक्का की गलियों में कैसे भटकते रहे होंगे, माँ की गोद न देखा होता तो शायद माँ का पता न होता लेकिन जब देखा हुआ चेहरा है और खेली हुई गोद है तो भला याद कैसे न आएगी, आप तो माँ को जानने पहचानने लगे थे कि यह मेरी माँ है, ज़रा तसव्वुर करें कि उस वक़्त आप अपनी माँ को अपने सामने न

पाकर कैसे बेचैन हो जाते होंगे:

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

फिर वालिदा की वफ़ात के बाद आप दादा की परवरिश में चले आए, दो साल तक दादा मोहतरम ने आप की परवरिश की और इस तरह परवरिश की कि पोते एक लम्हे के लिए आँखों से दूर होने न दिया, ज़रा दूर हुए कि फौरन पुकारा कहाँ है मेरा मुहम्मद:

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

आठ साल की उम्र को पहुंचे तो दादा का भी इंतेक़ाल हो गया, देखने वालों ने देखा और लिखने वालों ने लिखा है कि हज़रत मुहम्मद दादा के जनाज़े के पीछे रोते हुए चल रहे हैं:

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

देखिए! इस मासूम को बचपन ही से कितने दुखों में डाला गया और उस पर ग़म और





आलम के कैसे कैसे पहाड़ बचपन ही में टूटते रहे:

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

इस तरह उन वाक़ेआत को सोच सोच कर दुरूदे पाक पढ़ते रहें। फिर आप का ग़ारे हेरा में जाना और वहाँ घंटों नहीं बल्कि कई कई दिनों अल्लाह पाक की याद में बैठना। सोचते रहें और हुज़ूर की याद के साथ दुरूद पाक पढ़ते रहें:

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

फिर हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम का पहली मर्तबा वही लेकर आना और आप को इस क़दर भींचना कि आप को अपनी जान का ख़ौफ होने लगा, उस वक़्त भी आप को बहुत तकलीफ़ पहुंची, सोचें और दुरूद पाक पढ़ें:

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

फिर आप का घबराते हुए हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आना और उन से चादर ओढ़ाने के लिए कहना, फिर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हु का आप को तसल्ली देना:

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

फिर नुबुव्वत मिलने के बाद आप का लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाना और दीन की दावत देना, जवाबन लोगों का आप के साथ तुर्शरूई से पेश आना, ज़रा सोचें कि उसके बाद आप को किन किन हालात का सामना करना पड़ा, सोचते रहें और दुरूदे पाक पढ़ते रहें:

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

फिर आप का अहले मक्का से मायूस होकर ताइफ़ का सफ़र करना कि शायद वह लोग





बात मान जाऐं, फिर ताईफ़ के हालात, अहले ताईफ़ की तरफ़ से तकलीफ़ों और अज़ीयतों का पहुंचना, सोचें और दुरूद पाक पढ़ें:

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

औबाश लड़कों का आप के पीछे पड़ना, आप को पत्थर मारना,आप का ख़ून से शराबोर होना, नअलैन मुबारक का ख़ून से भर जाना और आप का थकन से चूर होकर बैठ जाना, इन सब वाक़ेआत को सोचते रहें और दुरूदे पाक पढ़ते रहें:

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

अहले ताइफ़ का तरह तरह से तअ़ने देना कि अल्लाह को नबी बनाने के लए तूही मिला था, तेरे अलावा कोई नहीं मिला, अगर तू झूठा है तो हम तुझ से बात करना नहीं चाहते, जरा सोचें कि ऐसी बातों को सुन कर आप के दिल

पर कैसे चोट लगती होगी:

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

अगर किसी को किसी की जानिब से अज़ीयत पहुंचे तो उस वक़्त उसके दिल की जो कैफियत होती है और जिस की तरफ़ से अज़ीयत पहुंची है उसके ख़िलाफ़ जिस क़िस्म के जज़बात बनते हैं कि ज़रूर बदला लेंगे, फिर वक़्त गुज़रने के साथ साथ वह सारे जज़बात कमज़ोर हो जाते हैं, उस वक़्त अगर कोई इंतेक़ाम लेने को कहता है तो कहते हैं कि भाई! जाने दो, अब इंतेक़ाम लेकर क्या करेंगे, वक़्त तो गुज़र ही गया है और फिर धीरे धीरे आदमी उन तमाम तकालीफ को भूल जाता है। लेकिन यहाँ यह मामला नहीं है, यहाँ यह हाल है कि सारे ज़ख़्म ताज़ा हैं, उन ज़ख़्मों से ख़ून भी बह रहा है और इस क़दर बहा है कि





नालैने मुबारक ख़ून से भर चुके हैं और आप ज़ख़्मों से चूर होकर बिल्कुल निढाल हालत में एक जगह बैठ गए हैं:

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

इस हाल में आप से पूछा जा रहा है कि मेरे महबूब! बताइए मैं उनके साथ क्या मामला करूँ?

आप अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को बतौर ख़ास इस वाक़ए का हवाला दें कि या अल्लाह! उस वक़्त जो हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जज़बात थे और जिस शिद्दते तकलीफ के बावजूद आप ने उन ज़ालिमों के साथ शफ़क़त व तरह्हुम का मामला किया था, या अल्लाह! आज मैं आप को आप के महबूब के उन्हीं जज़बात का वास्ता देता हूँ कि आप उन जज़बात का कुछ हिस्सा

मुझे भी अता फ़रमा दीजिए और मेरे दिल में भी उम्मत के लिए ऐसी ही शफ़क़त व हमदर्दी पैदा फ़रमा दीजिए और मुझे ता ज़िंदगी उम्मत के साथ ऐसा ही सुलूक करने की तौफ़ीक़ दे दीजिए कि जब कभी ऐसा मौक़ा आए तो हम अपनी ज़ात के लिए कभी किसी से बदला न लें बल्कि हमेशा माफ़ करने वाले और दरगुज़र करने वाले बनें। इसी तरह फिर हिजरत का सफ़र सोचें और दुरूद पाक पढ़ते रहें। फिर आख़िर में हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के वाक़ऐ का तसव्वुर करें कि आप का आख़िरी वक़्त है, कुछ ही लम्हों बाद आप इस दुनिया से तशरीफ़ ले जाने वाले हैं। आप कोई मामूली इंसान नहीं है, बल्कि दो जहाँ के सरदार हैं और हाल यह है कि उस सरदार के





इंतेक़ाल के वक़्त उनके घर में चराग़ जलाने के लिए तेल तक मौजूद नहीं है। अलग़र्ज़ दुरूदे पाक पढ़ते हुए पूरी सीरते पाक पर एक तायराना नज़र डालते जाऐं और दिल की हुज़ूरी के साथ आक़ा को याद करते हुए दुरूद पाक पढ़ते जाऐं।

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَسَلَّمَ۔

## रौज़ए पाक पर हाज़िरी से पहले

रौज़ए पाक पर किस तरह हाज़िर हुआ जाए, इस ताअल्लुक़ से गुज़ारिशात मुलाहिज़ा फरमाऐं। इस सिलसिले में मैं आप को अपना मामूल सुनाता चलूँ, शायद आप को इस से कुछ नफा हो जाए। अल हम्दु लिल्लाह, अल्लाह पाक ही की दी हुई तौफ़ीक़ से मेरा मामूल यह है कि रौज़ए पाक पर हाज़िरी से क़ब्ल मैं दो रकअत तहियतुल मस्जिद पढ़ता हूँ,

फिर दो रकअत सलातुत्तौबा पढ़ता हूँ, फिर दिल से तौबा इस्तिग़फ़ार करता हूँ कि या अल्लाह! मैं आप के महबूब को चेहरा दिखाने के लायक़ नहीं हूँ, मैं वहाँ कैसे जाऊँ? लेकिन जाए बग़ैर भी तो चारा नहीं है, मैं उनके पास न जाऊँ तो फिर कहाँ जाऊँ? इस लिए बहुत डरते डरते, सहमते सहमते लरज़ते क़दमों के साथ पहुंचता हूँ और पहुंच कर सलाम पेश करते हैं, माफी मांगना शुरू करता हूँ और बतौरे ख़ास यह कहता हूँ कि या रसूलुल्लाह! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह पाक करीम हैं और आप भी करीम हैं, यह दो करीमों का दर है, मैं आप से करम की भीक माँगने आया हूँ, या रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप की हयाते तय्यबात में आप का मामूल यह था कि जब कोई गुनहगार



हज और उमरा तजरबात की रोशनी में

आप की ख़िदमत में हाज़िर होता और आप को गवाह बना कर अल्लाह पाक से माफी मांगता और आप से सिफ़ारिश की दरख़्वास्त करता तो आप उस के लिए दुआ फ़रमाते, अल्लाह के हुज़ूर उसकी सिफ़ारिश फरमाते, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अगरचे आप ज़ाहिरी तौर पर दुनिया से परदा फरमा गए हैं लेकिन हमारा अक़ीदा है कि आप अपनी क़ब्रे अनवर में हयात हैं, देखिए! आप के सामने आप का एक गुनहगार उम्मती सर पर गुनाहों की गठरी लिए खड़ा है, एक बिगड़ी और गंदी ज़िंदगी लेकर हाज़िर हुआ है। या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप अल्लाह पाक से मेरे हक़ में भी सिफ़ारिश कर दीजिए कि अल्लाह पाक मेरे गुनाहों को माफ़ फरमा दें और मुझ से राज़ी हों जाऐं। या रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप भी मुझ से राज़ी हो जाइएं। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप भी मुझ से राज़ी हो जाइऐ और मुझ पर प्यार भरी निगाह डाल दीजिए।

एक मर्तबा रौज़ए पाक पर खड़ा उसी अंदाज़ से माफी माँग रहा था कि यका यक मेरी ज़बान पर एक बड़ा ही अजीब जुमला आया कि या रसूलुल्लाह! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो कुछ आप दे सकते हैं दे दीजिए और जो कुछ अल्लाह पाक से दिला सकते हैं दिला दीजिए।

आप भी जब रौज़ए पाक पर हाज़िर हों तो एक तसव्वुर बाँध कर जाऐं और वह रिवायत बतौरे ख़ास ज़ेहन में रखें कि हज़रत नबीए करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का क़ल्बे





अतहर इतना पाक व साफ है कि अगर ठीक तरह वुज़ू न किया जाए तो उसका भी असर आप के क़ल्बे अतहर पर पड़ता था, लिहाज़ा अगर मैं गुनाहों से तौबा किए बिग़ैर जाऊँगा तो फिर आप के क़ल्बे अतहर पर उसका कितना असर पड़ेगा और आप को किस क़द्र तकलीफ होगी? लिहाज़ा हाज़िर होने से क़ब्ल अपने तमाम गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा कर लें, अल्लाह पाक से माफ़ी माँग लें कि या अल्लाह! आप मेरे सारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दीजिए और मुझे मक़बूल हाज़िरी की तौफ़ीक़ अता फरमाइए।

जब आप इस कैफ़ियत के साथ हाज़िर होंगे और इस तरह तौबा व इस्तिग़फ़ार करने के बाद हाज़िर होंगे तो इंशा अल्लाह, अल्लाह पाक आप को मक़बूल हाज़िरी की तौफ़ीक़ नसीब

फ़रमाऐंगे। हाज़िरी से क़ब्ल इन आमाल का करना फर्ज़ या वाजिब नहीं है, लेकिन हमें इस तरह हाज़िर होने से बड़ा नफ़ा होता है, अगर आप भी मुनासिब समझें तो ऐसा कर लें, उम्मीद है कि इंशा अल्लाह आप को भी नफ़ा होगा।

नीज़ पूरे सफ़रे हज में एक दुआ बार बार करते रहें कि या अल्लाह! जिस वक़्त जो काम जिस तरीक़े पर करना आप को पसंद हो, आप उस वक़्त उस काम को उसी तरीक़े के मुताबिक़ अंजाम देने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा।

रौज़ए पाक पर पढ़ा जाने वाला सलाम

जब आप रौज़ए पाक के सामने खड़े हों तो इन अलफ़ाज़ के साथ सलाम पेश करें।



हज और उमरा तजरबात की रोशनी में

## रौज़ये पाक पर पढ़ा जाने वाला सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللهِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللهِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ

अस्सलामु अलैक या रसूलल्लाह
अस्सलामु अलैक या नबीयल्लाह
अस्सलामु अलैक या हबीबल्लाह
अस्सलामु अलैक या ख़ैर ख़ल्क़िल्लाह
अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व
रहमतुल्लाही व बरकातुहू।

## दुआए अरफात

तफ्सीर दुर्रे मंसूर में बेहक़ी के हवाले से क़ुरआन मजीद की आयत

اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ

के तहत हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाह अन्हु से एक हदीस मंकूल हैं और इमाम बेहक़ी ने इस रिवायत की सेहत पर इन अलफ़ाज़ के साथ मोहर लगाई है:

وَلَيْسَ فِيْ اَسْنَادِهٖ مَنْ يُّنْسَبُ اِلَى الْوَضْعِ

वह रिवायत यह है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो मुसलमान अरफ़ा के दिन ज़वाल के बाद मैदाने अरफ़ात में क़िब्ला रूख़ होकर:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔ (سو مرتبہ)

१०० मर्तबा फिर सूरह इख़्लास

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۔ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۔ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۔ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ۔ پوری سورۃ (سو مرتبہ)





पूरी सूरत १०० मर्तबा पढ़े, उसके बाद यह दुरूद पाक:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ

सौ मर्तबा पढे।

तो अल्लाह पाक फ़रिश्तों से फ़रमाऐंगे ऐ मेरे फ़रिश्तो! इस बंदे की क्या जज़ा है जिसने मेरी तस्बीह व तहलील, तकबीर ताज़ीम, तारीफ़ व सना की और मेरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजा, (फिर ख़ुद ही फ़रमाते हैं कि) ऐ मेरे फ़रिश्तो! तुम गवाह रहो, मैंने उसको बख़्श दिया और उसकी शिफ़ाअत कुबूल की। और अगर यह अहले अरफ़ात के लिए शिफ़ाअत करे तो भी मैं

उसकी शिफ़ाअत कुबूल करूंगा। (दुर्रे मंसूर)

अल्लाह पाक उन गुज़ारिशात को क़ुबूल फ़रमाऐं और हम सब को कहने सुनने, सुनने से ज़्यादा अमल की तौफीक़ नसीब फ़रमाऐं, आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

## हज पर ले जाने वाले ज़रूरी सामान की फेहरिस्त

अब मैं आप को हज पर ले जाने वाले कुछ ज़रूरी सामान की तफ्सील बतला दूँ।

सफ़री मुसल्ला जिस से नीचे प्लास्टिक लगी होती है, चंद मिस्वाक, तस्बीह, तवाफ की तस्बीह, छोटा कुरआन मजीद, किब्ला नुमा, मार्करपेन, हज से मुताअल्लिक़ किताबें, मस्लन:





१. मुअल्लिमुल हुज्जाज
(मुफ्ती सईद अहमद साहब)

२. अहकामे हज
(हज़रत मुफ्ती मुहम्मद शफी साहब)

३. आसान हज
(हजरत मौलाना मंजूर नोमानी साहब)

४. हज क़दम बक़दम
(मुफ्ती अब्दुर्रऊफ साहब सिखरवी)

५. अपना हज ख़राब होने से बचाऐं।
(मुफ्ती लतीफुर्रहमान साहब)

**हज से मुतअल्लिक़ यह चंद किताबें ज़रूर साथ ले लें।**

**मामूलात की किताबें, मस्लन:**

★ मुनाजाते मक़बूल, ★१०० दुरूद, ★ मंजिल

यह तीन किताबें रोज़मर्री की चंद अहम दुआओं के इज़ाफ़े के साथ यकजा किताबी सूरत

में "औरादे मोमिन" के नाम से शाय हो चुकी हैं जिसे आप इदारा इस्लामियात, मुहम्मद अली रोड, मुम्बई (ताज ऑफिस के क़रीब) से हासिल कर सकते हैं। यह सारे सामान उस बैग में रखें जिस में आप पास पोर्ट और टिकट वग़ैरह रखेंगे।

२. हजामत का सामान,(कैंची, रेज़र मशीन वग़ैरेह) कंघी, छोटा आईना, ब्रश, मंजन, नाखुन तराश (नेल कटर), ख़िलाल, नहाने का साबुन, सर पर रखने वाला तेल, सुरमा, इत्तर (इन सामानों को लगेज में डाल दें, साथ में रखें)

३. कपड़े धोने के लिए बक़द्रे ज़रूरत पावडर, ऐहराम की हालत में इस्तेमाल के लिए बग़ैर खुशबू वाला साबुन जिसे छोटे छोटे टुकड़े कर के रखें, ब्रश, चंद मीटर प्लास्टिक



हज और उमरा तजरबात की रोशनी में

की रस्सी, तक़्रीबन एक दर्जन क्लिप, दीवार पर चिपक जाने वाला चंद हुक्स, बाल्टी और मग। (अगर कई आदमी एक साथ हों तो फिर एक बाल्टी और एक मग काफी है)

४. कुछ बर्तन, मस्लन कप, प्लेट, चम्चा, चाय या दूध गर्म करने के लिए कोई बर्तन, चाय छलनी, दस्तरख़्वान, चाक़ू, पिसा हुआ नमक, काली मिर्च।

५. अपने इस्तेमाल की ज़रूरी दवाऐं, खुसूसन दो दवा तो ज़रूर अपने साथ ले लें।

१. वह क्रिम जो ज़्यादा चलने की वजह से जाँघों के छिल जाने पर लगाया जाता है।

२. नज़ला खाँसी और गले की ख़राश के लिए कोई दवा डॉक्टर के मशवरे से ज़रूर ले लें।

६. चश्मे की चैन, एक ज़ायद चश्मा, चश्मे

के नम्बर का काग़ज़, अपने क़लम के अलावा चंद ज़ायद क़लम, काग़ज़, फोन की डायरी, पेंसिल, रबर, कुछ ज़ायद फोटो, पास पोर्ट और टिकट की ज़िरॉक्स कॉपी।

७. चार जोड़ी कपड़े, दो जोड़ी ऐहराम, ऐहराम की बैलेट जिस में मुतअद्दिद कुशादा जेबें हों, जिन में मिस्वाक, कमरे और सामान की चाबी वग़ैरह रखी जा सके। चप्पल रखने के लिए कपड़े की थैली, ऐहराम के दौरान पहनने के लिए दो अदद दो पट्टी वाली चप्पल जिसे स्लीपर कहते हैं, ले लें और सफर से एक दो रोज़ पहले पहन कर आदत बना लें, एक अदद पलंग की चादर, दो अदद लुंगी, छोटा तकिया, तौलिया, मौसम के ऐतेबार से गरम सुइटर या गरम शाल, एक अदद टार्च, सामान महफूज़ करने के लिए ताले, अलार्म घड़ी, टीशू





पेपर, सूई धागा, एक अदद लोटा ज़रूर ले लें जो मिना, अरफ़ात, मुज़दलफा और मदीना मुनव्वरा के सफ़र में बहुत काम आएगा।

## कुछ ज़रूरी हिदायात

१. चूंकि पास पोर्ट वाला छोटा बेग हर वक़्त आप के साथ रहेगा, लिहाज़ा इस बात का ख़्याल रखें कि उस बेग में कोई ऐसी चीज़ न हो जो ख़ुशबूदार हो, नीज़ ऐहराम की हालत में इस्तेमाल में आने वाला सामान मस्लन तस्बीह, मुसल्ला, वग़ैरह भी चेक कर लें कि कहीं उस में ख़ुशबू वग़ैरह तो नहीं है।

२. अपने तमाम पैसे एक जगह न रखें बल्कि मुख़्तलिफ जगहों पर रखें, अलबत्ता उन बेगों में हरगिज़ न रखें जो बुक होकर जहाज़ में ले जाए जाते हैं।

३. नमाज़ों के ऐहतिमाम के लिए बावुज़ू

रहने की कोशिश करें, अगर जहाज़ में नमाज़ पढ़ने की नौबत आ जाए और वुज़ू न हो तो जहाज़ के बैतुल ख़ला में जाकर बड़ी ऐहतियात से वुज़ू करके बेसन के इर्द गिर्द गिरा हुआ पानी टिशू पेपर से साफ कर दें, ताकि दीगर मुसाफिरों को तकलीफ न हो।

४. एयरपोर्ट से मिलने वाले बोर्डिंग कार्ड और सामान के टेग बहुत हिफाज़त से रखें, यह भी देख लें कि आप ने जितने अदद सामान लगेज में डाला है उतने ही अदद टेग आप को मिले हैं या नहीं, कहीं ऐसा न हो कि आप का सामान तो ज़्यादा हो और आप को भूले से टेग कम मिलें।

५. अगर आप का जहाज़ कहीं दरमियान में रूक कर जिद्दा या मदीना जाने वाला हो, मस्लन आप को बम्बई से जिद्दा जाना था,





लेकिन जहाज़ रियाज़ में रूक कर फिर जिद्दा जाएगा तो उस सूरत में आप यह ज़रूर देख लें कि कहीं आप को मिलने वाले टेग पर रियाज़ तो नहीं लिखा हुआ है, इस लिए कि अगर टेग पर रियाज़ लिखा होगा तो फिर आप का सामान जिद्दा पहुंचाने के बजाए रियाज़ ही में उतार दिया जाएगा, फिर बाद में आप को बड़ी दिक़्क़त होगीं

६. अगर ज़ायद मिस्वाक रखना हो तो पहले उन्हें धूप में ख़ूब सुखा लें।

७. अपने सामान के हर बेग पर अपना नाम, पता और फोन नम्बर वाज़ेह तौर पर लिख लें।

८. अगर मोबाइल फोन या इस तरह की कोई इलेक्ट्रॉनिक चीज़ साथ ले जा रहे हों तो उसका चार्जर और बैट्री वग़ैरह भी साथ ले लें,

नीज़ हवाई जहाज़ के सफर के दौरान इन आलात को बंद रखें।

९. चंद प्लास्टिक की छोटी छोटी थैलियाँ अपने हैंड बेग में ज़रूर रखें ताकि अगर कभी क़य वग़ैरह हो तो यह थौलियाँ उस वक़्त काम आ सकें, अगर ख़ुद को क़य न भी हुई तो कभी कभी सफ़र के दौरान पास में बैठने वाले आदमी को क़य होने लगती है, उस वक़्त यह थैली आप उसे दे सकते हैं।

१०. अपने हर सामान पर मार्कर पेन से अपना नाम लिख लें नीज़ दूसरों का सामान बिला इजाज़त इस्तेमाल न करें।

११. अपने वतन के जिस एयरपोर्ट पर आप को वापस आना है उस शहर के नमाज़ का टाइम टेबल भी साथ रख लें, ताकि वापसी में अगर जहाज़ सुबहे सादिक़ या तुलू व गुरूब के





वक़्त पहुंच रहा हो तो उस मौक़े पर वक़्त देख कर हालात के ऐतेबार से जहाज़ में या जहाज़ से उतर कर एयरपोर्ट पर फिलफौर नमाज़ पढ़ी जा सके।

१२. वापसी के वक़्त गरम कपड़े हैंड बेग में रखें ताकि अगर उस वक़्त एयरपोर्ट पर सरदी ज़्यादा हो तो यह कपड़े बआसानी निकाल कर पहने जा सकें।

नोट: सफर के दौरान पेश आने वाली सोऊबतों और इंतेज़ार की ज़हमतों को हक़ तआला की रहमत समझ कर सब्र करें और इस बात पर हक़ तआला का शुक्र अदा करें कि उन्होंने हमारे इस सफ़र को जो पहले महीनों में तय हुआ करता था घंटों में तय करा दिया और उन मशक़्क़तों से भी बचाया जो उस वक़्त के हाजियों को बरदाश्त करना पड़ता था

## हम्दे बारी तआला

तेरे देखने की जो आस है
यही ज़िंदगी की असास है
मैं हज़ार तुझ से बईद हूँ
यह अजब कि तू मेरे पास है
तेरी ज़ात पाक है ला ज़वाल
तेरी सब सिफात हैं बेमिसाल
तू बरौने वहम व ख़्याल है
तू वराए अक्ल व क़यास है
किसी अंजुमन में क़रारे दिल
न किसी जमन में बहरे दिल
कहूँ किस से हालते ज़ारे दिल
कि वह हर जगह में उदास है
तेरा कुछ पता भी जो पा गया
वह तमाम जहान पे छा गया
उसे अब किसी से उम्मीद है
न किसी से ख़ौफ व हेरास है

जैसे जैसे दरे महूबब क़रीब आता है
दिल यह कहता है मैं पहुंचूँ नज़र से पहले





## नाते रसूले मक़बूल صلى الله عليه وآله وسلم

नबिए अकरम शफ़ीए आज़म दुखे दिलों का प्याम ले लो
तमाम दुनिया के हम सताए खड़े हुए हैं सलाम ले लो
शिकस्ता कश्ती है तेज़ धारा नज़र से रूपोश है किनारा
नहीं कोई नाख़ुदा हमारा ख़बर तो आली मुक़ाम ले लो
अजब मुश्किल में कारवाँ है नहीं कोई जादा न पासबाँ है
बशक्ले रहबर छुपे हैं रहज़न उठो ज़रा इंतेक़ाम ले लो
क़दम क़दम पे है ख़ौफे रहज़न ज़मीं भी दुश्मन फलक भी दुश्मन
ज़माना हम से हुआ है बद ज़न तुम ही मुहब्बत से काम ले लो
कभी तक़ाज़ा वफा का हम से कभी मज़ाके जफा है हम से
तमाम दुनिया ख़फा है हम से ख़बर तो ख़ैरूल अनाम ले लो
यह कैसी मंज़िल पे आ गए हैं न कोई अपना न हम किसी के
तुम अपने दामन में आज आक़ा तमाम अपने गुलाम ले लो
यह दिल में अरमाँ है अपने 'तयब' मज़ारे अक़्दस पे जाके यक दिन
सुनाऊँ उनको मैं हाल दिल का कहूँ मैं उन से सलाम ले लो

## ऐतेज़ार

नात लिखने का यह सामान बना लूँ तो लिखूँ
मुश्क व अंबर से दहन अपना बसा लूँ तो लिखूँ
चश्मे हूराने बहिश्ती का मैं काजल ले लूँ
शाख़े सिदरा से क़लम पहले बना लूँ तो लिखूँ

या क़लम की जगह मिल जाए मुझे नोके हिलाल
सफ्हए शम्स है ख़ाली उसे पा लूँ तो लिखूँ
सिबग़तुल्लाह से रंगीन तो कर लूँ काग़ज़
हाशिया कहकशाँ से मैं मंगा लूँ तो लिखूँ
पहले जिबरईल से आदाबे किताबत सीखूँ
अज़मतें इस्मे मुबारक की लिखा लूँ तो लिखूँ
उम्र भर पहले पढ़ूँ दिल से दुरूद और सलाम
फिर सरापा को मैं आँखों में बसा लूँ तो लिखूँ
मासिवा का ख़स व ख़ाशाक भरा हुआ है दिल में
आतिशे इश्क़ से मैं उसको जला लूँ तो लिखूँ
नात लिखने की यह हसरत तो है 'कुदरत' लेकिन
यह लवाज़िम नहीं मिलते उन्हें पा लूँ तो लिखूँ

## नात

कहाँ जिन्नों का ठिकाना कहाँ पे शाम करूँ
नबी का गाँव मिले तो वहीं क़याम करूँ
वहाँ पे क़ैद करो जहाँ मदीना है
क़फ्स में बैठ के दीदार सुबह व शाम करूँ





यह आरज़ू है कि तदफ़ीन हो मदीने में
सफर हयात का मौला मैं जब तमाम करूँ
यही है दिल की तमन्ना कि मालिके कौनैन
वह काश ख़्वाब में आऐं तो मैं सलाम करूँ
वली दुआ है ख़ुदा से ख़ुदा की हम्द के बाद
मैं उनका ज़िक्र करूँ और सुबह व शाम करूँ

## नात

मुझे क्या इल्म क्या तुम हो ख़ुदा जाने कि क्या तुम हो!
बस इतना जानता हूँ मुहतरम बाद अज़ ख़ुदा तुम हो
किसी की आरज़ू कुछ हो किसी का मुद्दआ कुछ हो!
हमारी आरज़ू तुम हो हमारा मुद्दआ तुम हो
न यह कुदरत ज़बाँ में है न यह ताक़त बयाँ में है
ख़ुदा जाने तू जाने कोई क्या जाने कि क्या तुम हो
रिसालत को शर्फ है ज़ाते अक़्दस के तअल्लुक़ से
नुबुव्वत नाज़ करती है कि ख़त्मुल अंबिया तुम हो
ज़माना जानता है साहबे लौला लम्मा तुम हो
जहाँ की इब्तिदा तुम हो जहाँ की इन्तिहा तुम हो
यह रब्ते बाहमी उम्मत को वजहे सद तफ़ाख़ुर है
तुम्हारा है ख़ुदा महबूब, महबूबे ख़ुदा तुम हो

तुम्हारे वास्ते 'असअद' कहीं बेहतर है शाही से
कि यक अदना गुलामे बारगाहे मुस्तफा तुम हो

## नात

मुस्तफा, मुजतबा, तेरी मदह व सना
मेरे बस में नहीं दस्तरस में नहीं
दिल को हिम्मत नहीं, लब को यारा नहीं
तुझ को कोई नहीं, तुझ सा कोई नहीं

## मुनाजात

**ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन मजज़ूब**

यार रहे यारब तू मेरा और मैं तेरा यार रहूँ
मुझ को फक़त तुझ से हो मुहब्बत ख़ल्क़ से मैं बेज़ार रहूँ
हर दम ज़िक्र व फिक्र में तेरे मस्त रहूँ सरशार रहूँ
होश रहे मुझ को न किसी का तेरा मगर होशियार रहूँ
अब तो रहे बस ता दमे आख़िर विर्दे ज़बाँ ऐ मेरे इलाह
*ला इला इलाह इल्लल्लाहु, ला इला इलाह इल्लल्लाहु*
तेरे सिवा माबूदे हक़ीक़ी कोई नहीं है कोई नहीं
तेरे सिवा मक़सूदे हक़ीक़ी कोई नहीं है कोई नहीं
तेरे सिवा मौजूदे हक़ीक़ी कोई नहीं है कोई नहीं
तेरे सिवा मशहूदे हक़ीक़ी कोई नहीं है कोई नहीं





अब तो रहे बस ता दमे आख़िर विर्दे ज़बाँ ऐ मेरे इलाह
*ला इला इलाह इल्लल्लाहु, ला इला इलाह इल्लल्लाहु*
तेरा गदा बन कर मैं किसी का दस्ते निगर ऐ शाह न हूँ
बंदए माल व ज़र न बनूँ मैं तालिबे इज़्ज़ व जाह न हूँ
राह पे तेरी पड़ के क़यामत तक मैं कभी बेराह न हूँ
चैन न लूँ जब तक राज़े वहदत से आगाह न हूँ
अब तो रहे बस ता दमे आख़िर विर्दे ज़बाँ ऐ मेरे इलाह
*ला इला इलाह इल्लल्लाहु, ला इला इलाह इल्लल्लाहु*
याद में तेरी सब को भुला दूँ कोई न मुझ को याद रहे
तुझ पर सब घर बार लुटा दूँ ख़ानए दिल आबाद रहे
सब ख़ुशियों को आग लगा दूँ ग़म से तेरे दिल शाद रहे
सब को नज़र से अपनी गिरा दूँ तुझ से फक़त फरियाद रहे
अब तो रहे बस ता दमे आख़िर विर्दे ज़बाँ ऐ मेरे इलाह
*ला इला इलाह इल्लल्लाहु, ला इला इलाह इल्लल्लाहु*
नफ्स व शैताँ दोनों ने मिल कर हाए किया है मुझ को तबाह
ऐ मेरे मौला मेरी मदद कर चाहता हूँ मैं तेरी पनाह
मुझ सा ख़ल्क़ में कोई नहीं गो बद किरदार व नामा सियाह
तू भी मगर ग़फ्फार है या रब बख़्श दे मेरे सारे गुनाह
अब तो रहे बस ता दमे आख़िर विर्दे ज़बाँ ऐ मेरे इलाह
*ला इला इलाह इल्लल्लाहु, ला इला इलाह इल्लल्लाहु*
मुझ को सरापा ज़िक्र बना दे ज़िक्र तेरा ऐ मेरे ख़ुदा
अब तो कभी छोड़े भी न छूटे ज़िक्र तेरा ऐ मेरे ख़ुदा
हल्क़ से निकले साँस के बदले ज़िक्र तेरा ऐ मेरे ख़ुदा

अब तो रहे बस ता दमे आख़िर विर्दे ज़बाँ ऐ मेरे इलाह
*ला इला इलाह इल्लल्लाहु, ला इला इलाह इल्लल्लाहु*
जब तक क़ल्ब रहे पहलू में जब तक तन में जान रहे
लब पे तेरा नाम रहे और दिल में तेरा ध्यान रहे
जज़्ब में परीं होश रहें और अक़्ल मेरी हैरान रहे
लेकिन तुझ से ग़ाफिल हरगिज़ दिल न मेरा यक आन रहे
अब तो रहे बस ता दमे आख़िर विर्दे ज़बाँ ऐ मेरे इलाह
*ला इला इलाह इल्लल्लाहु, ला इला इलाह इल्लल्लाहु*

## मुनाजात

**मुहतरम मुहम्मद शम्सुल हुदा क़ैसी अल फायक़ी**

सज़ावारे हम्द व सना है खुदा
इबादत के लायक़ नहीं दूसरा
जहाँनों में तेरी ख़ुदाई भी है
तेरे हाथ हाजत रवाई भी है
तेरे हाथ में है सफेद व सियाह
में यक बंदए आसी व रूसियाह
मेरा फहम व इदराक महदूद है
मआसी से सब राह मसदूद है
बजुज़ तेरे कोई सहारा नहीं
ज़बाँ को तलब का भी यारा नहीं
इसी वास्ते अर्ज़ है ऐ खुदा





तेरी शाने रहमत का है वास्ता
दुआ जो कभी हज़रत आदम ने की
दुआ जो कभी नूह व मरियम ने की
दुआ जो करते थे तेरे ख़लील
अता हो वह सब मुझ को रब्बे जलील
दुआऐं जो कीं तुझ से याकूब ने
दुआऐं जो कीं हज़रत अय्यूब ने
दुआऐं हुईं क़ैद शाही में जो
दुआऐं हुईं बतने माही में जो
दुआ थी जो क़ल्बे सुलेमान में
दुआऐं हुईं जो बयाबान में
दुआ जो कभी तुझ से मूसा ने की
दुआ जो कभी हज़रत ईसा ने की
दुआ जो हज़रत मुहम्मद ने कीं
दुआऐं जो आले मुहम्मद ने कीं
अबद तक हर यक लेहज़ा रब्बे अनाम
तू भेज उन पे लाखों दुरूद व सलाम
दुआऐं जो शाम व सेहर में हुईं
दुआऐं जो बहर और बर में हुईं
दुआऐं जो तेरे उमीरों ने कीं
दुआऐं जो तेरे फक़ीरों ने कीं

दुआ जो यतीमों हक़ीरों ने कीं
दुआऐं जो तेरे असीरों ने कीं
दुआऐं जो कीं तेरे महबूब ने
दुआऐं जो कीं तेरे मजज़ूब ने
दुआऐं जो कीं तेरे बीमार ने
तेरे इश्क़ में तेरे सरशार ने
दुआऐं जो करते थे सब अंबिया
दुआऐं जो करते थे सब अस्फ़िया
अबू बकर व फ़ारूक़ व उसमान अली
दुआऐं जो करते थे तेरे वली
दुआऐं जो कीं हाजी इम्दाद ने
जो कीं उनके मुरशिद ने उस्ताद ने
जो थीं हज़रत अशरफ़ के मामूल में
लिखें जो मुनाजाते मक़बूल में
मेरे शह वसी ने मुनाजात में
दुआऐं जो कीं ख़ास औक़ात में
दुआ जो करें शाह अब्दुल हलीम
मुझे भी बख़्श दे ऐ करीम
दुआऐं जो उनकी किया हो क़ुबूल
मा अज़ मन ख़स्ता जान व मलूल
बहन भाई ज़ौजा और औलाद को





ख़ुदा बख़्श दे मेरे अजदाद को
चची को चचा को भी माँ बाप को
है आसाँ बहुत बख़्शा आप को
ख़ुदाया इस उम्मत की इस्लाह कर
इस उम्मत पर कर दे करम की नज़र
यह है नाम लेवा तेरा आज भी
यह रहम व करम की है मुहताज भी
मुहम्मद पे या रब सलात दवाम
मुहम्मद पे या रब हो लाखों सलाम
मेरे क़ल्ब को ऐ ख़ुदा फेर दे
तेरा ज़िक्र अब ज़िंदगी घेर दे
ग़िना से मेरा सीना मामूर कर
तू मुहताज की बेकसी दूर कर!
बचा शिर्क और कुफ़्र व बिदआत से
कि हों बहरावर तेरी बरकात से
तू चाहे तो हो मेरा आसाँ हिसाब
न लिखा हो क़िस्मत में मेरी अज़ाब
अमल मेरे हम राह कोई नहीं
कि मुझ सा भी गुमराह कोई नहीं
मआसी से भरपूर है ज़िंदगी
इसी की है तुझ से शर्मिन्दगी

खुदाया यह सर ले के जाऊँ कहाँ
गुनाहों की घठरी छुपाऊँ कहाँ
इलाही! यह सर दोश पर बार है
गुनाहों का सर पर यक अंबार है
अमल की हयात अपनी मादूम है
खुदा जाने क्या मेरा मक़सूम है
करम कर कि क़अरे मुज़ल्लात में हूँ
खुदाया! मुहम्मद की उम्मत में हूँ
मुहम्मद कि साक़ी कौसर भी हैं
वही शाफए रोज़े महशर भी हैं
वह शम्सुज़्ज़ुहा और बदरूद्दुजा
वह ख़ैरूल वरा और इल्मुल हुदा
वह इज़्ज़ुल अरब और ऐनुन्नईम
अफ़ूउन ख़फ़ीय्युन रऊफ़ुर्रहमी
उन्हें जब शिफ़ाअत का पाया मिले
मुझे उन के दामन का साया मिले

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔





मशक़्क़त के ख़ौफ़ से नेकियाँ मत छोड़
मशक़्क़त जाती रहेगी नेकियाँ बाक़ी रहेगी
लज़्ज़त के शौक़ में गुनाह न कर
लज़्ज़त जाती रहेगी गुनाह बाक़ी रहेगा